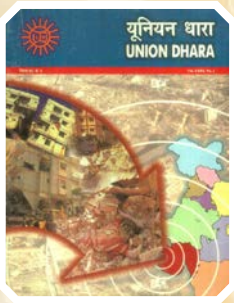
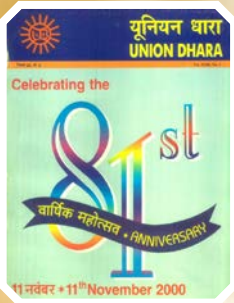
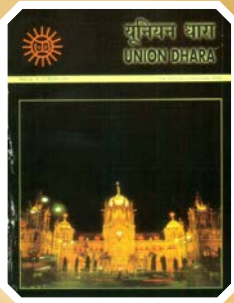
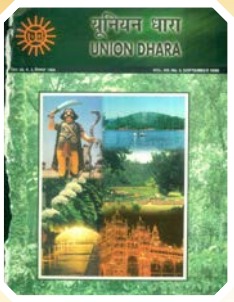
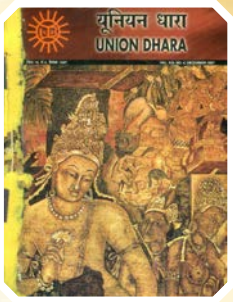
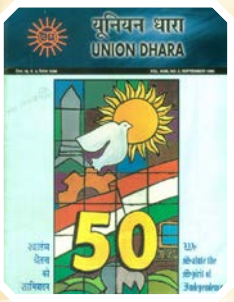
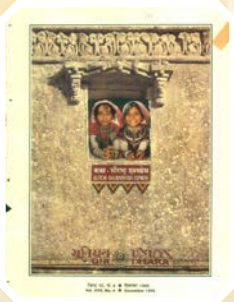
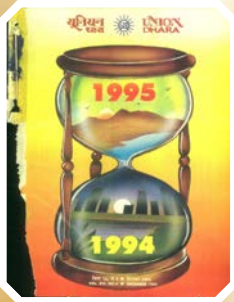
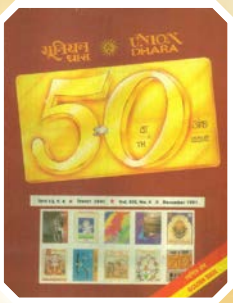
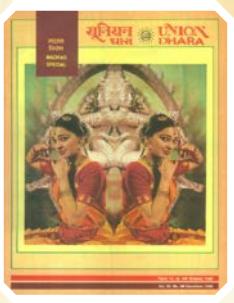
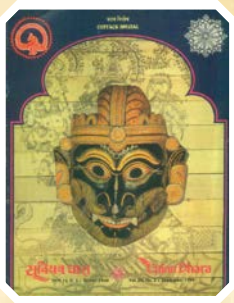
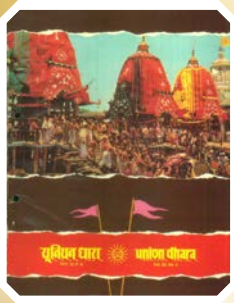
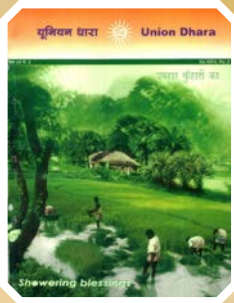
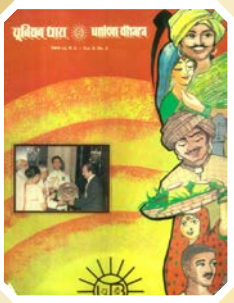
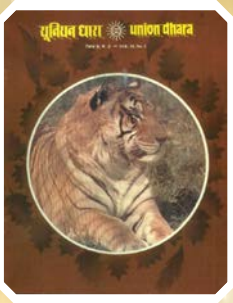
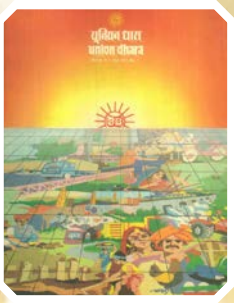
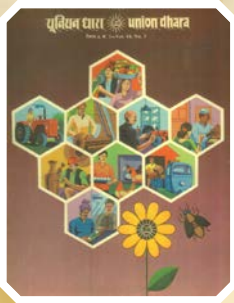
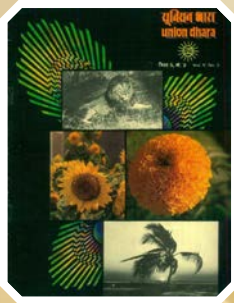
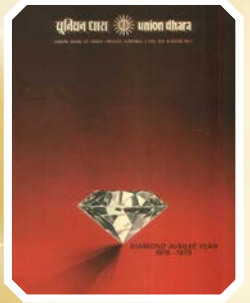
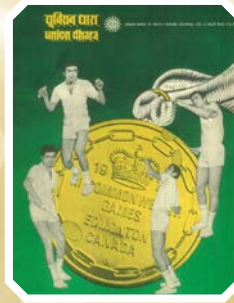
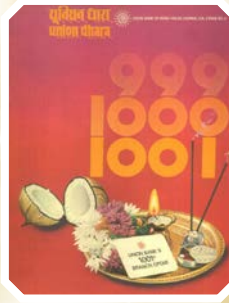
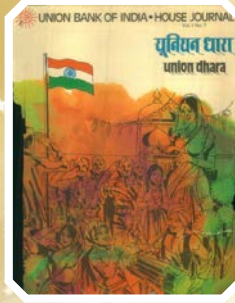


यूनियन धारा Union Dhara

जिल्द. 50, सं. 4, मुंबई, अक्टूबर-दिसंबर, 2025

VOL. 50, No. 4, Mumbai, October-December, 2025



गृह पत्रिका • House Magazine of

यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank
of India
Good people to bank with

मुख्य संरक्षक / Chief Patron



आशीष पाण्डेय Asheesh Pandey

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ Managing Director & CEO

संरक्षक / Patrons



नितेश रंजन Nitesh Ranjan

कार्यपालक निदेशक Executive Director



एस. रामसुब्रमणियन S. Ramasubramanian

कार्यपालक निदेशक Executive Director



संजय रुद्र Sanjay Rudra

कार्यपालक निदेशक Executive Director



अमरेश प्रसाद Amresh Prasad

कार्यपालक निदेशक Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor



सुरेश चन्द्र तेली Suresh Chandra Teli

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं) Chief General Manager (HR)



ए. के. विनोद A.K. Vinod

मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager



अरुण कुमार Arun Kumar

मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors



सत्यबान बेहेरा Satyaban Behera

महाप्रबंधक General Manager



अम्बरीष कुमार सिंह Ambarish Kumar Singh

उप महाप्रबंधक Dy. General Manager



विवेकानंद Vivekanand

सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) Asst. General Manager (OL)

संपादक / Editor

संपादकीय सहयोग / Editorial Support



गायत्री रवि किरण Gayathri Ravi Kiran

मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) Chief Manager (OL)



जागृति उपाध्याय Jagriti Upadhyay

सहायक प्रबंधक (रा.भा.) Asst. Manager (OL)



मोहित सिंह ठाकुर Mohit Singh Thakur

सहायक प्रबंधक (रा.भा.) Asst. Manager (OL)

परिदृश्य PERSPECTIVE



प्रिय यूनियनाइट्स,

1. सर्वप्रथम, मैं 'यूनियन धारा' के लेखकों, पाठकों और संपादकीय समिति को गृह पत्रिका के 50 स्वर्णिम वर्ष पूरे होने के अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूँ। यह उल्लेखनीय उपलब्धि इसकी समृद्ध परंपरा, विचारपूर्ण योगदान और हमारे संस्थान की भावना को निरंतर अभिव्यक्त करने की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आशा है कि 'यूनियन धारा' हमारे बैंक में पठन पाठन और ज्ञान विनिमय का एक प्रभावी माध्यम बने रहने में सदैव सफल रहेगी।
2. हम इस आशाजनक वित्तीय वर्ष में आगे बढ़ रहे हैं और मुझे गर्व है कि दिसंबर, 2025 तिमाही में हमारे बैंक ने मजबूत कार्यनिष्पादन और उत्साहजनक वित्तीय परिणाम हासिल किए हैं। ये उपलब्धियाँ केवल तुलनपत्र के आँकड़े नहीं, बल्कि यूनियन बैंक परिवार के प्रत्येक सदस्य के समर्पण, अनुशासन और अटूट निष्ठा का प्रतिबिंब है।
3. वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही हमारे सामने है और यह हमारे कार्यनिष्पादन को और सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह अपनी उपलब्धियों को और बढ़ाने, व्यापार वृद्धि को गति देने, ग्राहक संबंधों को मजबूत करने तथा परिचालन उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने का समय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सामूहिक प्रयास और नई ऊर्जा के साथ हम अपने लक्ष्यों को पार कर उत्साहवर्धक परिणामों के साथ इस वित्तीय वर्ष का समापन करेंगे।
4. हम बैंकर के रूप में जनता की निधियों के अभिरक्षक और जन विश्वास के संरक्षक की एक बड़ी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हैं। तीव्र गति से डिजिटल रूपांतरण के इस दौर में, डेटा गोपनीयता सुनिश्चित करना बैंकिंग प्रणाली में विश्वास बनाए रखने और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत आवश्यक है। देश की अर्थव्यवस्था के एक विश्वसनीय, सुरक्षित और उत्तरदायी स्तंभ के

Dear Unionites,

1. At the outset I extend Heartiest congratulations to the writers, readers and editorial committee of 'Union Dhara' on completing 50 golden years. This remarkable milestone stands as a testament of its rich legacy, insightful contributions, and unwavering commitment towards showcasing the spirit of our institution. I hope that 'Union Dhara' will continue to serve as a meaningful and effective platform for reading, writing, and knowledge sharing in our Bank.
2. As we move forward in this promising financial year, it gives me great pride to acknowledge the strong performance and encouraging financial results that our Bank has achieved for Q3 December 2025. These outcomes are not merely numbers on a balance sheet; they reflect the collective dedication, discipline and unwavering commitment of every member of the Union Bank family.
3. With the final quarter of the financial year ahead, we have an opportunity to further strengthen our performance. This is the time to consolidate our achievements, accelerate business growth, deepen customer relationship and drive operational excellence. I am confident that with renewed focus and collective determination, we will surpass our goals and close the year on an even stronger note.
4. We as bankers are entrusted with significant responsibility as custodians of public funds and stewards of public trust. In a rapidly digitalizing landscape, safeguarding privacy remains essential to maintaining confidence in the banking system and supporting economic stability. Every Unionite plays a crucial role in ensuring that Union Bank continues to exemplify



रूप में यूनियन बैंक की पहचान बनाए रखने में प्रत्येक यूनियनाइट की महत्वपूर्ण भूमिका है।

5. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की विरासत सेवा, विश्वसनीयता और ग्राहक प्रथम के अटूट सिद्धांतों पर दृढ़तापूर्वक आधारित है। एक सदी से अधिक समय से लाखों ग्राहकों को समृद्ध करते हुए और राष्ट्र की समृद्धि में योगदान देते हुए यूनियन बैंक प्रगति और सशक्तिकरण का प्रतीक रहा है। यह गौरवशाली विरासत हमें स्थिरता प्रदान करने के साथ-साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है।
6. हमारा मार्गदर्शक सिद्धांत “कारोबार सर्वोपरि, अनुपालन निरंतर” हमारे इस संकल्प को दर्शाता है कि हम कार्यनिष्ठा को सुदृढ़ करते हुए उच्चतम स्तर की निष्ठा और उत्तरदायित्व का सदैव पालन करें। यही दृढ़ विश्वास हमें साहसपूर्ण नवाचार के लिए प्रेरित करता है और सक्रिय रूप से बदलते परिवेश के अनुरूप स्वयं को तैयार करने के लिए उत्साहित करता है एवं साथ ही उन शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध करता है जो यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की पहचान हैं।
7. अनुपालन बैंक को सुदृढ़ बनाता है और साथ ही यह नैतिक, सक्षम एवं सतत व्यवसाय संचालन का आधार स्तंभ भी है। यह केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक निरंतर अनुशासन है—जो हमारे प्रत्येक कार्य और प्रत्येक निर्णय का अभिन्न अंग है। अनुपालन को एक सतत प्रतिबद्धता के रूप में अपनाकर हम अपने संगठन की सत्यनिष्ठा, दृढ़ता और दीर्घकालिक विकास को और मजबूत करते हैं।
8. आइए, हम अपने इस गौरवशाली इतिहास का सम्मान करते हुए और अधिक मजबूत भविष्य के निर्माण की दिशा में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें।

integrity, security and accountability as a trusted shaper of the nation's economy.

5. The legacy of Union Bank of India is firmly rooted in service, reliability and an unwavering customer first ethos. For more than a century, Union Bank has stood as a symbol of progress and empowerment, enriching lives and supporting the nation's growth. This distinguished heritage not only grounds us—it propels us forward.
6. Our guiding principle “**Business First, Compliance Always**” reflects our commitment to shaping a future that strengthens performance while upholding the highest standards of integrity and responsibility. This conviction inspires us to innovate boldly, adapt proactively, and uphold the timeless values that define Union Bank of India.
7. Compliance serves as a cornerstone in strengthening the Bank and ensuring the conduct of sound, ethical and sustainable business. It is not a singular obligation, but a continuous discipline—an integral part of every action we take and every decision we make. By embracing compliance as an ongoing commitment, we reinforce our organisation's integrity, resilience and long term growth.
8. Together, let us we move forward with confidence, honouring our legacy while building a stronger tomorrow.

शुभकामनाओं सहित

(आशीष पाण्डेय)

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

With best wishes,

(Asheesh Pandey)

Managing Director & CEO

अवलोकन OVERVIEW



प्रिय यूनियनाइट्स,

नए वर्ष के आगमन पर, मैं यूनियन बैंक परिवार के प्रत्येक सदस्य को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह वर्ष आपके व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन में नई ऊर्जा, उद्देश्य और समृद्धि लेकर आए।

हमारी कॉर्पोरेट गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' ने 50 स्वर्णिम वर्षों का महत्वपूर्ण पड़ाव पार किया है। यह स्वर्णिम उपलब्धि सतत समर्पण, विचारपूर्ण अभिव्यक्ति और उन सभी योगदानकर्ताओं के निरंतर प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने दशकों से इसकी गरिमा और गुणवत्ता को समृद्ध किया है। यह गृह पत्रिका रचनात्मकता, संस्थागत गौरव और सामूहिक ज्ञानार्जन का एक सशक्त मंच रही है, जो इसकी निरंतर यात्रा को गरिमा प्रदान करती है।

हम अब वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर रहे हैं, जो कारोबारिक समेकन और कार्यनिष्पादन में तेजी लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अब समय है कि हम अपने प्रयासों को और सुदृढ़ करते हुए, सधी हुई कार्यनीति के साथ स्वयं को बेहतर परिणामों के लिए तैयार करें। मुझे विश्वास है कि सामूहिक प्रतिबद्धता और अनुशासित कार्यशैली के साथ हम अपने लक्ष्य प्राप्त करेंगे और इस वित्तीय वर्ष का समापन उत्कृष्ट एवं आशाजनक उपलब्धि के साथ करेंगे।

पदोन्नति प्रक्रिया में शामिल सभी यूनियनाइट्स को मैं शुभकामनाएँ देता हूँ। आत्मविश्वास के साथ इसमें भाग लें। तथापि यह भी ध्यान रखें कि यह एक नियमित प्रक्रिया है और यह अपने आप में अंतिम पड़ाव नहीं है।

बैंकिंग क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है, और ऐसे समय में प्रौद्योगिकी को अपना लेना और उसका प्रभावी उपयोग हमारी ग्राहक सेवा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिए अनिवार्य है। प्रौद्योगिकी केवल एक सहायक साधन नहीं, बल्कि सेवा उत्कृष्टता, दक्षता में सुधार और डिजिटल पहले पीढ़ी की अपेक्षाओं को पूरा करने का मूल आधार बन चुकी है। हमें ग्राहक सेवा अधिक सहज और सटीक बनाए रखने के लिए नवाचार को जिम्मेदारी और उद्देश्य के साथ अपनाते रहना चाहिए।

आइए, हम एकजुट होकर नए उत्साह के साथ हमारे इस गौरवशाली संस्थान को मजबूत बनाने के अपने संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

शुभकामनाओं सहित

(नितेश रंजन)
कार्यपालक निदेशक

Dear Unionites,

As we step into a new year, I convey my warmest wishes to each member of the Union Bank family. May this year bring renewed energy, purpose, and prosperity in both your professional and personal journeys.

Our Corporate Magazine 'Union Dhara' has achieved remarkable milestone of completing 50 Golden Years. This golden milestone reflects sustained dedication, thoughtful expression, and consistent efforts of all contributors who have enriched its pages over the decades. The magazine has stood as a platform for creativity, institutional pride, and collective learning, and its enduring legacy is truly commendable.

We now enter the final quarter of the financial year, a period that holds significant importance for business consolidation and performance acceleration. This is the time to sharpen our focus, mobilize our strengths, and ensure that our efforts translate into impactful outcomes. With collective determination and a disciplined approach, I am confident that we will achieve our targets and close the financial year on a strong and promising note.

I would also like to extend best wishes to all Unionites participating in the upcoming promotion process. I encourage each of you to approach the process with confidence. However, I would urge you to note that this is a routine process and not a final destination by itself.

As the banking landscape evolves rapidly, our ability to adopt and leverage technology will determine our effectiveness in serving customers. Technology is not merely an enabler—it is now central to enhancing service quality, improving efficiencies, and meeting the expectations of a digital first generation. We should continue to embrace innovation with responsibility and purpose, ensuring that our customer service remains timely and seamless.

Let us move ahead with renewed motivation, united in our mission to strengthen the institution we proudly represent.

With best wishes,

(Nitesh Ranjan)
Executive Director



अवलोकन OVERVIEW



प्रिय यूनियनाइट्स,

नव वर्ष के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को और आपके परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह वर्ष आपके लिए स्वास्थ्य, खुशहाली और समृद्धि लेकर आए।

हमारी कॉर्पोरेट गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' ने उत्कृष्टता के 50 स्वर्णिम वर्षों की ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। मैं इस गौरवशाली यात्रा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का अभिनंदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि 'यूनियन धारा' आगे भी अनेक कीर्तिमान स्थापित करेगी।

आने वाले दिन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हमें वर्तमान तिमाही को सफलतापूर्वक समाप्त करना है और वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही के लिए दिशा तय करनी है। हमारा ध्यान अनुशासनपूर्ण कार्यनिष्पादन, समयबद्ध अनुपालन और लक्ष्य प्राप्ति पर होना चाहिए। ग्राहक-केंद्रितता, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही की नींव पर इन लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रत्येक शाखा, क्षेत्र और अंचल का योगदान महत्वपूर्ण है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में खुदरा, कृषि और एमएसएमई ऋण अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खुदरा ऋण उपभोग को बढ़ावा देता है और परिवारों की आकांक्षाओं को पूरा करते हुए आर्थिक गति को मजबूत करता है। कृषि वित्त ग्रामीण आजीविका को सशक्त करता है, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है और करोड़ों किसानों को समर्थन प्रदान करता है। एमएसएमई ऋण उद्यमिता, नवाचार और देशभर में रोजगार सृजन को आगे बढ़ाते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए ये क्षेत्र केवल व्यावसाय के अलग-अलग खंड नहीं, बल्कि समावेशी विकास और राष्ट्रीय प्रगति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

यूनियन बैंक हमेशा जिम्मेदारी के साथ नवाचार का प्रतीक रहा है। उद्यमियों को ऋण सहायता, विपणन सहयोग और इको-सिस्टम बैंकिंग के माध्यम से प्रोत्साहित करना न केवल हमारे पोर्टफोलियो को मजबूत करेगा बल्कि राष्ट्र निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ करेगा। ये पहल रोजगार सृजन करती हैं, निर्यात को बढ़ावा देती हैं और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करती हैं, जो हमारे संतुलित और अनुपालनयुक्त विकास के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह मेल खाती हैं।

मैं हमारे बैंक की आस्ति गुणवत्ता में हुए उल्लेखनीय सुधार के लिए सभी टीमों को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह उपलब्धि हमारी अनुशासित ऋण संस्कृति, सुव्यवस्थित निगरानी व्यवस्था और बैंक की वित्तीय आधारशिला को मजबूत करने की सामूहिक प्रतिबद्धता का परिणाम है। मैं सभी शाखाओं से आग्रह करता हूँ कि समयबद्ध फॉलो अप, जिम्मेदार ऋण वितरण और समग्र परिचालन उत्कृष्टता सुनिश्चित करते हुए इस सकारात्मक गति को बनाए रखें।

आइए, एकता, स्पष्टता और उद्देश्य के साथ आगे बढ़ें। आपको और आपके परिवार को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ—यह वर्ष आपके लिए सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर आए।

शुभकामनाओं सहित

Dear Unionites,

As we step into the New Year, I extend my warm wishes to all Unionites and their families. May this year bring health, happiness, and prosperity.

Our Corporate Magazine 'Union Dhara' has reached the historic milestone of 50 Golden Years of excellence. I congratulate each and every one involved in this glorious journey and hope that 'Union Dhara' shall continue to set new standards of excellence.

The coming days are crucial. As we set the tone for the final quarter of the financial year, we should focus on disciplined execution, timely compliance, and bridging gaps in targets. Every branch, region, and zone plays a decisive role in achieving these goals, anchored on customer-centricity, integrity, and accountability.

Retail, Agriculture, and MSME credit form the backbone of India's economic growth. Retail lending fuels consumption and supports household aspirations, strengthening economic momentum. Agriculture finance sustains rural livelihoods, enhances food security, and empowers millions of farming families. MSME credit drives entrepreneurship, innovation, and employment generation across the country. For public sector banks, these sectors are not just business verticals—they represent our commitment to inclusive development and national progress.

Union Bank has always stood for innovation with responsibility. Encouraging entrepreneurs through credit support, marketing assistance, and ecosystem banking can strengthen our portfolio and reinforce our commitment to nation-building. These initiatives create employment, boost exports, and preserve cultural heritage, aligning perfectly with our vision of balanced and compliant growth.

I extend my sincere congratulations to all teams for the commendable improvement in our Bank's asset quality. This progress reflects our disciplined credit culture, rigorous monitoring, and unwavering commitment to strengthening the Bank's financial foundation. I urge all branches to continue this positive momentum with the same focus and determination, ensuring timely follow up, responsible lending, and overall operational excellence.

Let us move forward with unity, clarity, and purpose. Wishing you and your families a very Happy New Year filled with success and progress.

With best wishes,

एस राम

(एस. रामसुब्रमणियन)
कार्यपालक निदेशक

(S. Ramasubramanian)
Executive Director

अवलोकन OVERVIEW



प्रिय यूनियनाइट्स,

नव वर्ष के शुभ अवसर पर यूनियन बैंक परिवार के प्रत्येक सदस्य को शुभकामनाएं। सभी के लिए यह नया साल नई ऊर्जा, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक सफलता लेकर आए।

यह हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि हमारी कॉरपोरेट गृह पत्रिका ने 50 सफल और गौरवपूर्ण वर्ष पूर्ण किए हैं। यह उपलब्धि संपादकीय टीम, लेखकों और पाठकों के निरंतर समर्पण का परिणाम है, जिसने इस पत्रिका को अभिव्यक्ति, ज्ञान और संस्थागत पहचान का एक प्रतिष्ठित मंच बनाया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए संपूर्ण टीम को हार्दिक अभिनंदन।

आने वाले समय में हमें बैंक की स्थिरता और विश्वसनीयता को सुनिश्चित करने वाले महत्वपूर्ण मूल्यों को और सुदृढ़ करना होगा। ऋण अनुश्रवण और अनुपालन हमारे आस्तियों की गुणवत्ता और उत्तरदायी ऋण वितरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। समय पर समीक्षा, तनाव के प्रारंभिक संकेतों की पहचान, नियामकीय मानकों का पालन तथा अनुशासित फॉलो अप स्वस्थ ऋण पोर्टफोलियो बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं। मैं सभी टीमों से अपेक्षा करता हूँ कि वे सतर्कता और अनुपालन के उच्चतम स्तर बनाए रखते हुए बैंक के दीर्घकालिक वित्तीय सुदृढ़ता का संरक्षण करें।

पारदर्शिता, सटीकता और वित्तीय अनुशासन ही बैंकिंग संचालन की अखंडता के मुख्य आधार हैं। सुदृढ़ लेखांकन प्रक्रियाएँ, समयबद्ध वित्तीय रिपोर्टिंग और लेखा-परीक्षा एवं नियामकीय आवश्यकताओं का अनुपालन हमारे सभी हितधारकों के विश्वास को और मजबूत करता है। मेरी अपेक्षा है कि बैंक के प्रत्येक स्तर पर कार्यनीतिक निर्णयों को सुदृढ़ बनाने हेतु वित्तीय प्रक्रियाओं में दक्षता, ईमानदारी और नवाचार पर सतत ध्यान दिया जाए।

जटिल हो रहे बैंकिंग परिदृश्य में जोखिम प्रबंधन और धोखाधड़ी की रोकथाम का महत्व और अधिक बढ़ गया है। मजबूत जोखिम ढाँचे, डेटा आधारित विश्लेषण और उभरते जोखिमों की सक्रिय निगरानी हमारे ग्राहकों, आस्तियों और संस्था की प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। आंतरिक नियंत्रण को सुदृढ़ करना और नैतिक आचरण की संस्कृति को बनाए रखना हम सभी की ज़िम्मेदारी है।

इसी प्रकार डिजिटल बैंकिंग के विस्तार के इस दौर में सूचना सुरक्षा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्राहक डेटा की सुरक्षा, साइबर खतरों की रोकथाम और सुरक्षित प्रौद्योगिकी व्यवस्था का रख-रखाव विश्वास बनाए रखने के आधार स्तंभ हैं। सूचना सुरक्षा नीतियों का कड़ाई से अनुपालन, डिजिटल जोखिमों की समझ और सतर्क साइबर आचरण हमारे दैनिक कार्य का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

नए वर्ष में हम सभी उत्कृष्टता, उत्तरदायित्व और सत्यनिष्ठा के प्रति पुनः प्रतिबद्ध बनें। सामूहिक संकल्प और एकजुट प्रयासों के साथ हम अपने बैंक को और मजबूत बनाएंगे तथा आत्मविश्वास के साथ एक सुदृढ़ एवं सफल भविष्य की ओर बढ़ेंगे।

शुभकामनाओं सहित

Dear Unionites,

As we begin a new year filled with hope and purpose, I extend my warmest wishes to every member of the Union Bank family. May the year ahead bring renewed energy, professional success, and personal well-being to all.

It is also a matter of immense pride that our Corporate Magazine has successfully completed 50 illustrious years. This remarkable milestone reflects the dedication of its editors, contributors, and readers, whose collective efforts have shaped it into a respected platform for expression, knowledge sharing, and institutional identity. My heartfelt congratulations to the entire team behind this significant achievement.

As we look ahead, it is imperative that we continue to strengthen the core pillars that uphold the Bank's stability and credibility. Credit Monitoring and Compliance remain central to maintaining asset quality and ensuring responsible lending. Timely reviews, early identification of stress, strict adherence to regulatory norms, and disciplined follow-up are essential to sustaining a healthy credit portfolio. I urge all teams to uphold the highest standards of vigilance and compliance, thereby safeguarding the Bank's long-term financial strength.

Transparency, accuracy, and fiscal discipline are equally critical to the integrity of our banking operations. Sound accounting practices, timely financial reporting, and strict compliance with audit and regulatory requirements directly enhance stakeholder confidence. I encourage continued focus on efficiency, integrity, and innovation in financial processes to support informed and strategic decision-making across the Bank.

In an increasingly complex banking environment, Risk Management and Fraud Monitoring have assumed even greater significance. Robust risk frameworks, data-driven insights, and proactive monitoring of emerging threats are essential to protecting our customers, assets, and reputation. Strengthening internal controls and fostering a strong culture of ethics remain our collective responsibility.

Information Security is equally vital, particularly as digital banking continues to expand. Safeguarding customer data, preventing cyber threats, and maintaining secure technology systems are fundamental to sustaining trust. Strict adherence to information security policies, heightened awareness of digital risks, and disciplined cyber hygiene must guide our daily actions.

As we step into the new year, let us reaffirm our commitment to excellence, accountability, and integrity in every sphere of our work. Together, with focus and determination, we will continue to strengthen our Bank and move confidently toward a resilient and successful future.

With best wishes,

संजय रुद्र

(संजय रुद्र)
कार्यपालक निदेशक

(Sanjay Rudra)
Executive Director



अवलोकन OVERVIEW



प्रिय यूनियनाइट्स,

नए वर्ष के अवसर पर मैं सभी यूनियनाइट्स को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि यह वर्ष आप सभी के लिए नए अवसर, प्रगति और समृद्धि लेकर आए।

यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है कि मैं पहली बार हमारे बैंक की प्रतिष्ठित गृह पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद कर रहा हूँ। हमारी कॉर्पोरेट पत्रिका के 50 गौरवशाली वर्षों की उल्लेखनीय उपलब्धि पर मैं संपादकीय टीम, लेखकों तथा पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके निरंतर योगदान ने इसे ज्ञान, संवाद और संस्थागत गौरव का एक महत्वपूर्ण मंच बनाया है।

नवाचार और समग्र वित्तीय समाधान प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप, बैंक ने इकोसिस्टम बैंकिंग विभाग की शुरुआत की है। यह एक दूरदर्शी पहल है, जिसका उद्देश्य ग्राहकों को संपूर्ण और एकीकृत वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना है। इकोसिस्टम बैंकिंग ग्राहक संबंधों को गहराई प्रदान करेगी, सेवा दक्षता बढ़ाएगी और हमारे बैंक को विविध वित्तीय परिदृश्यों में पसंदीदा साझेदार के रूप में स्थापित करेगी।

हमारी देनदारी कार्यनीति में खुदरा जमा और कासा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहेगी। कम लागत वाले जमा बैंक की लाभप्रदता, प्रतिस्पर्धी ऋण दरों और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक हैं। सभी टीमों से अपेक्षा है कि वे ग्राहक संपर्क को मजबूत करें, सेवा गुणवत्ता बढ़ाएँ और संवहनीय जमा वृद्धि पर केंद्रित रहें।

आस्ति पक्ष पर कॉर्पोरेट क्रेडिट हमारा एक प्रमुख विकास क्षेत्र है। बैंक विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन के साथ उच्च गुणवत्ता वाले कॉर्पोरेट्स, अवसंरचना परियोजनाओं और राष्ट्र निर्माण के प्रयासों को उत्तरदायी ऋण वितरण के माध्यम से सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। विवेकपूर्ण ऋण विस्तार, समय पर निगरानी और क्षेत्रीय विविधता हमारी विकास दिशा को निरंतर मजबूत बनाएगी।

हमारा अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग वर्टिकल बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण होता जा रहा है, जहाँ व्यापार प्रवाह, निवेश और सीमा पार वित्तीय लेन देन तेज़ी से बढ़ रहे हैं। यह विभाग हमें वैश्विक वित्तीय नेटवर्क से जोड़ता है और व्यापार वित्त, धन-प्रेषण, ट्रेज़री संचालन तथा विदेशी व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे गतिशील वातावरण में, अपनी अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति को सुदृढ़ करना, प्रतिनिधि बैंकिंग संबंधों को मजबूत करना और सेवा क्षमता को बढ़ाना हमारी प्रमुख प्राथमिकताएँ होंगी। इन प्रयासों से हम अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्पर्धी बने रहेंगे और उभरते अवसरों का प्रभावी रूप से लाभ उठा सकेंगे।

नए वर्ष में हम सभी नवाचार, अनुशासन और ग्राहक केंद्रितता के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लें। मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयास हमारे बैंक को निरंतर सशक्त और अग्रसर करते रहेंगे। आइए हम उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखें और उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मिलकर आगे बढ़ें।

शुभकामनाओं सहित

Dear Unionites,

I extend my warm greetings and best wishes for the New Year to all Unionites. May this year bring renewed purpose, progress, and prosperity to all.

It is a matter of great honour for me to convey my first message through our Bank's esteemed magazine. As we celebrate the remarkable milestone of 50 glorious years of our Corporate Magazine, I also congratulate the editors, contributors, and readers who have shaped it into a valued platform of knowledge, communication, and institutional pride.

In alignment with our commitment to innovation and integrated financial solutions, the Bank has launched the Ecosystem Banking Department, a forward looking initiative designed to serve customers through comprehensive, end to end financial offerings. Ecosystem Banking will play a pivotal role in deepening customer relationships, improving service efficiency, and positioning our Bank as a preferred partner in diverse financial environments.

Retail Deposits and CASA will continue to remain vital pillars of our liability strategy. Strengthening low cost deposits is essential for improving profitability, maintaining competitive lending rates, and ensuring long term stability. I urge all teams to reinforce customer engagement, enhance service delivery, and focus on sustainable deposit growth.

On the credit front, Corporate Credit remains a key growth driver. The Bank is committed to support high quality corporates, infrastructure development, and nation building projects and also maintaining prudent risk management. Responsible credit expansion, timely monitoring, and sectoral diversification will continue to shape our growth trajectory.

Our International Banking vertical holds growing importance as the global economic landscape continues to evolve rapidly, reshaping trade flows, investment, and cross border financial interactions. It connects our Bank to international financial networks and contributes significantly to trade finance, remittances, treasury operations, and overseas business. In this dynamic environment, strengthening our global presence, deepening correspondent banking partnerships, and enhancing service capabilities will be essential. These priorities will enable us to remain competitive and responsive to emerging opportunities in the international landscape.

As we enter a new year with renewed determination, I am confident that our collective efforts, supported by innovation, discipline, and a customer centric approach, will continue to drive our bank forward. Let us remain committed to excellence and work together to achieve greater milestones.

With best wishes,

(अमरेश प्रसाद)
कार्यपालक निदेशक

(Amresh Prasad)
Executive Director

संपादकीय EDITORIAL



प्रिय पाठकगण

'यूनियन धारा' के स्वर्ण जयंती वर्ष के इस अंतिम अंक को प्रस्तुत करते हुए हृदय गर्व, आत्मचिंतन, कृतज्ञता और आशा से भर उठता है। वर्ष 1976 में आरंभ हुई यह यात्रा केवल एक गृह-पत्रिका का प्रकाशन नहीं थी, बल्कि बैंक की विकास-गाथा, उसके बदलते विचार और उसके लोगों की सामूहिक आवाज़ को संजोने का सशक्त माध्यम रही है। पाँच दशकों की यह उपलब्धि केवल एक पड़ाव नहीं— बल्कि निरंतरता, प्रतिबद्धता और सृजनात्मकता का उत्सव है।

पाँच दशकों से 'यूनियन धारा' ने बैंक की आंतरिक संचार प्रक्रिया को सुदृढ़ करते हुए समय के साथ बदलते स्वरूप में बैंक की प्रगति और सोच को प्रतिबिंबित किया है। संपादकीय सलाहकार समिति के मार्गदर्शन में उच्च प्रबंधन की नीतियों को बैंक के प्रत्येक स्टाफ सदस्य तक पहुँचाने के साथ साथ कर्मचारियों को अपने विचार, अनुभव और रचनात्मक अभिव्यक्ति साझा करने का प्रभावी मंच भी प्रदान करती रही है।

16 पृष्ठों की श्वेत श्याम की सामान्य गृह-पत्रिका के रूप में आरंभ हुई 'यूनियन धारा' शनैः-शनैः विकसित होती गई—1983 में 32 पृष्ठ, बाद में 24 रंगीन पृष्ठों सहित 40 पृष्ठ, और समय के साथ पूर्णतः रंगीन एवं आकर्षक गृह-पत्रिका के रूप में परिवर्तित हुई। आज यह 80+4 पृष्ठों की सुन्दर, आकर्षक और पूर्ण रंगीन गृह-पत्रिका के रूप में बैंकिंग क्षेत्र ही नहीं, अन्य कॉर्पोरेट गृह-पत्रिकाओं में भी प्रतिष्ठित स्थान रखती है।

उत्कृष्ट विषय-वस्तु, गंभीर विषय, मनोहारी साज-सज्जा और वैविध्यपूर्ण स्थायी स्तंभों ने इसे विशिष्ट पहचान दिलाई है। संपादकीय सलाहकार समिति के मार्गदर्शन में यह उच्च प्रबंधन की अपेक्षाओं को दर्शाती रही है, और कर्मचारियों की वाणी को नेतृत्व तक पहुँचाने का कार्य भी करती रही है—इस तरह यह प्रबंधन और स्टाफ के बीच संवाद का सशक्त माध्यम बनी रही है।

गृह-पत्रिका की उत्कृष्ट गुणवत्ता, मौलिकता और आकर्षक प्रस्तुति के लिए इसे इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार (2012-13), भारतीय रिज़र्व बैंक का उत्कृष्ट गृह-पत्रिका पुरस्कार, तथा एबीसीआई द्वारा "मैगज़ीन ऑफ द ईयर", "चैंपियन ऑफ चैंपियंस" सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं। ये पुरस्कार इसकी निरंतर उत्कृष्टता के प्रमाण हैं।

प्रतिभाशाली संपादकों—श्री ए.एम. मनचंदा, सुश्री सैंडा फर्नांडीस, सुश्री शीला वेसुना, श्री के.टी. लकड़ावाला, डॉ. नीरा प्रसाद, श्रीमती सविता शर्मा और डॉ. सुलभा कोरे—ने अपनी विशिष्ट संपादकीय शैली से गृह-पत्रिका को नई दिशा दी। वर्तमान में 'यूनियन धारा' का संपादकीय दायित्व निभाना मेरे लिए सम्मान की बात है।

इस उल्लेखनीय यात्रा को आकार देने वाले प्रत्येक योगदानकर्ता और पाठक का हार्दिक अभिवादन करते हुए और संपादकीय सलाहकारों के प्रति गहन सम्मान के साथ, मैं आशा करती हूँ कि 'यूनियन धारा' अपने बैंक के मूल्यों का सही मायनों में प्रतिनिधित्व करते हुए के सफलता के पथ पर निरंतर अग्रसर रहेगी।

भवदीया

Dear Readers,

As we present this final issue of the Golden Jubilee year of 'Union Dhara', it is a moment of immense pride, reflection, gratitude, and hope. Since its inception in 1976, 'Union Dhara' has not merely been a publication—it has been the chronicler of our Bank's growth, its evolving ethos, and the collective voice of its people. Completing fifty glorious years is not just a milestone; it is a celebration of continuity, commitment, and creative spirit.

For five decades, 'Union Dhara' has stood as a reliable and vibrant medium of internal communication, reflecting the Bank's journey through changing times. It has conveyed the vision of top management to every staff member of the Bank, while simultaneously offering employees a meaningful platform to express ideas, experiences, and creativity.

From its modest beginnings as a 16 page black and white house magazine, 'Union Dhara' steadily evolved—expanding to 32 pages in 1983, later to 40 pages including colour section of 24 pages, and eventually emerging as a fully coloured, aesthetically designed publication. Today, the vibrant, captivating and richly hued house magazine stands proudly at 80+4 pages, widely recognized not only within the banking fraternity but also among corporate house magazines across sectors.

Its rich content, thematic depth, appealing design, and diversity of features have earned 'Union Dhara' a place of prestige. Under the guidance of the Editorial Advisory Committee, it has continued to reflect the aspirations of top management while allowing the thoughts and expressions of staff to reach leadership—thus strengthening the bond between management and employees.

The house magazine's journey has also been adorned with recognitions, including the Indira Gandhi Rajbhasha Award (2012-13), the Outstanding House Journal Award by the Reserve Bank of India, and several accolades from ABCI such as "House magazine of the Year" and "Champion of Champions." These honours reaffirm 'Union Dhara's' commitment to quality, originality, and excellence.

Gifted editors—Shri A.M. Manchanda, Ms. Sandra Fernandes, Ms. Sheila Vesuna, Shri K.T. Lakdawala, Dr. Neera Prasad, Smt. Savita Sharma and Dr. Sulabha Kore—have shaped the house magazine with their distinctive editorial vision. I am honoured to continue this legacy as the current editor of 'Union Dhara'.

With deep appreciation for every contributor and reader who has shaped this remarkable journey, and profound respect towards Editorial Advisors, I look forward to the continued fruition of 'Union Dhara' as a publication that truly embodies the spirit of our institution.

Yours sincerely,

(गायत्री रवि किरण)

(Gayathri Ravi Kiran)

अनुक्रमणिका

◆ स्वागत / विदाई	1	◆ सेंटर स्प्रेड	34
◆ बैंकिंग में सतर्कता- हमारी प्राथमिकता	02	◆ The Magic Wand in Our Pockets	36
◆ नामांकन 2.0	04	◆ From Micro Precision to Mega Power	38
◆ भावनात्मक बुद्धिमत्ता	06	◆ Working Capital Assessment	41
◆ शिखर की ओर / शुभमस्तु	07	◆ कविता- छोड़ के आया हूँ	43
◆ समुचित सावधानी	08	◆ Architecture of Invisible Finance	44
◆ कविता- अर्जी	09	◆ कविता- न जाने क्यों मैं भीड़ में खो गया!	46
◆ ई कॉमर्स- प्रभाव एवं संभावनाएँ	10	◆ From Consent to Compliance	47
◆ प्रदूषण की समस्या एवं वाहनों का बीएस-VI मानक	12	◆ कविता- परछाइयाँ	49
◆ मानसिक शांति देने वाली प्रमुख रुचियाँ	13	◆ विभिन्न आउटरीच अभियान	50
◆ Artificial Intelligence	14	◆ शीर्षक लिखें / Coin a Caption	51
◆ कविता- आत्म शक्ति	17	◆ फेस इन यूबीआई क्राउड	52
◆ The Paradox of "Interest Past Due"	18	◆ MT KILIMANJARO	54
◆ Digital Valuation and Digital Title Search	19	◆ Quality Time for Children	57
◆ कविता- बदल गया ज़माना	21	◆ कविता: मेरे जीवन सारथी	59
◆ A Brief Analysis of the New Labour Codes	22	◆ अतीत के झरोखों से	60
◆ कविता- त्रिकाल	25	◆ सेवानिवृत्त जीवन से	64
◆ Union Collection Management Solution	26	◆ समाचार	65
◆ Business First, Compliance Always	28	◆ हमें गर्व है	71
◆ DPDP Act, 2023	31	◆ आपकी पाती	72

आवरण पृष्ठ

यूनियन धारा के 50 स्वर्णिम वर्षों की यात्रा को दर्शाते हुए
इसके पिछले अंकों के 50 आवरण पृष्ठ।

Cover Pages

50 cover pages of previous issues of Union Dhara
depicting its journey of 50 golden years.

ई-मेल E-mail: uniondhara@unionbankofindia.bank.in | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank.in

Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

यूनियन धारा में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं और प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

The views expressed in the articles published in Union Dhara are solely that of the author and
do not necessarily reflect the views of the management.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित।

Published by Union Bank of India for internal circulation

हार्दिक स्वागत



श्री अमरेश प्रसाद ने 25 नवंबर, 2025 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में पद ग्रहण करने से पहले, आप पंजाब नेशनल बैंक के कॉर्पोरेट कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक के रूप में पदस्थ थे।

आपको शाखा बैंकिंग, अंचल कार्यालयों तथा केन्द्रीय कार्यालय स्तर पर 32 से अधिक वर्षों का समृद्ध बैंकिंग अनुभव है, जिसमें कॉर्पोरेट क्रेडिट, ऋण समीक्षा एवं निगरानी, लेनदेन मॉनिटरिंग आदि शामिल हैं।

आप रसायन विज्ञान में स्नातक हैं और भारतीय बैंकर्स संस्थान से प्रमाणित एसोसिएट हैं।

आपने विभिन्न प्रशिक्षण एवं नेतृत्व विकास कार्यक्रमों में भाग लिया है तथा एसबीआईएल कोलकाता में आयोजित नेतृत्व विकास कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया है। आपने फाइनेंशियल सर्विसेज़ इंस्टीट्यूशन द्वारा संचालित आरोहण 2023 एफएसआईबी कार्यक्रम भी पूरा किया है।

हम यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

विदाई



श्री श्रीनिवासन वरदराजन 7 नवंबर, 2022 से 6 नवंबर, 2025 तक बैंक के अंशकालिक गैर-आधिकारिक निदेशक एवं गैर-कार्यपालक अध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। आपको बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं में तीन दशक से अधिक का अनुभव है। वर्ष 2019 में अपनी सलाहकारी सेवाएँ प्रदान करने से पूर्व आप एक्सिस बैंक में उप प्रबंध निदेशक के रूप में कार्यरत थे। आप जेपी मॉर्गन, भारत के प्रबंध निदेशक एवं बाजार प्रमुख थे। आप भारत में जेपी मॉर्गन चैस बैंक के सीईओ भी थे। आपने अपने कैरियर की शुरुआत आईसीआईसीआई लिमिटेड से की और समूह के विभिन्न नेतृत्व पदों पर एक दशक तक कार्य किया।

आप वर्तमान में सेबी वैकल्पिक निवेश नीति सलाहकार समिति के सदस्य हैं। आप एएमसी रेपो क्लियरिंग लिमिटेड के भी अध्यक्ष हैं और इंडिया डेट रेजोल्यूशन कंपनी लिमिटेड और इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर एडवाइजरी सर्विसेज़ इंडिया लिमिटेड के बोर्ड में भी हैं। आपने पूर्व में विभिन्न आरबीआई समितियों यथा तकनीकी सलाहकार समिति, रेपो के लिए समिति और स्टिप्स के लिए समिति में काम किया है। आपने पूर्व में फिक्स्ड इनकम मनी मार्केट एंड डेरिवेटिव्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (FIMMDA) और प्राइमरी डीलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (पीडीएआई) के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है।

आपने कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई से इंजीनियरिंग की डिग्री और भारतीय प्रबंधन संस्थान, कलकत्ता से प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा प्राप्त किया है।



दिनांक 24.10.2025 को भुवनेश्वर में श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री श्रीनिवास वरदराजन, चेयरमैन, कार्यपालक निदेशक गण श्री नितेश रंजन, श्री एस.रामसुब्रमणियन, श्री संजय रुद्र की उपस्थिति में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया महिला हॉकी टीम एवं स्पोर्ट हॉस्टल राउरकेला महिला हॉकी टीम के बीच एक्सिबिशन मैच का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक की महिला हॉकी टीम विजेता रही।



बैंकिंग में सतर्कता- हमारी प्राथमिकता

अठारहवीं सदी के विख्यात दार्शनिक थॉमस रीड ने 1786 के अपने एक प्रसिद्ध लेख में यह विचार व्यक्त किया है कि, 'एक शृंखला केवल उतनी मजबूत होती है जितने कि उसकी सबसे कमजोर कड़ी'। विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञ इस विचार की व्याख्या करते हुए सामान्यतः इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हर संस्थान के लिए यह आवश्यक है कि वो अपनी कार्यप्रणाली में उपस्थित कमजोर घटकों की पहचान करें और विश्लेषण करें कि इन्हें मजबूत कैसे बनाया जाए। बैंक अर्थव्यवस्था में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं जिनका मुख्य कार्य है बचत करने वालों से जमा राशि संग्रहित करके आवश्यकता-अनुसार पात्र व्यक्तियों और संस्थानों को ऋण उपलब्ध करना। बैंकों के माध्यम से लेनदेन करना सामान्य व्यक्तियों के लिये सुविधाजनक होता है और इसमें परिचालनात्मक व्यय भी कम होता है। परंतु वित्तीय मध्यस्थता की संपूर्ण व्यवस्था जिस एक मूल तत्व पर आधारित है वह है विश्वास। लोग अपनी जमा-पूंजी बैंकों में इस विश्वास के साथ रखते हैं कि यहाँ उनकी राशि सुरक्षित रहेगी और आवश्यकता पड़ने पर वे इसकी निकासी बिना किसी अज्ञात नुकसान के कर सकेंगे। इसी तरह, उधारकर्ता अपने ऋण-संबंधी आवश्यकताओं के लिए बैंकों पर इस विश्वास के साथ निर्भर रहना पसंद करते हैं कि उन्हें पुनर्भुगतान की शर्तों की पूर्ण जानकारी दी जायेगी। बैंक और ग्राहकों के बीच परस्पर विश्वास का निर्माण समय के साथ होता है पर जाने अनजाने हुई एक छोटी-सी चूक, जिससे ग्राहकों के हित के साथ समझौता होता है, ही पर्याप्त होती है इस विश्वास को तोड़ने के लिए। तो यह कहना गलत नहीं होगा कि 'विश्वास' 'बैंकिंग' की शृंखला की सबसे कमजोर कड़ी है। और इस 'कमजोर कड़ी' की मजबूती प्रत्यक्ष रूप-से निर्भर है विश्वास के वातावरण का निर्माण करके उसे बनाये रखने के सबसे कारगर साधन पर- बैंकिंग व्यवस्था में सतर्कता का स्तर।

सतर्कता एक बहु-आयामी विषय है जिसकी समग्र चर्चा में सतर्क 'क्यों'; 'किसको'; 'किससे'; और 'कैसे' रहना चाहिए, ऐसे बिंदुओं का अवलोकन करना आवश्यक है।

बैंकिंग में धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार, दो ऐसी चुनौतियां हैं जिनका ग्राहक हितों के साथ-साथ बैंक की प्रतिष्ठा पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, समय के साथ धोखाधड़ी की घटनाओं का स्वरूप भी बदला है। कुछ वर्ष पूर्व फर्जी हस्ताक्षर और चोरी किए गए चेक धोखाधड़ी के सबसे सामान्य माध्यम हुआ करते थे परंतु आज प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग से घटित हो रहे साइबर अपराध धोखाधड़ी का सबसे चुनौतीपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। इसी तरह, समय के साथ ऑनलाइन धोखाधड़ी के तरीकों में भी बदलाव आया है। पहले क्रेडिट या डेबिट कार्ड के विवरण धोखे से प्राप्त करके कार्ड-धारक को आर्थिक नुकसान पहुंचाना साइबर अपराध के सबसे सामान्य तरीके थे परंतु आज लोगों को डिजिटल अरेस्ट और व्हाट्सपप पर अज्ञात नंबरों से आए संदेहास्पद संदेशों से सावधान रहने की आवश्यकता है। इसका सरल तात्पर्य यह है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धोखाधड़ी के परंपरागत तरीकों के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग से उभरने वाली चुनौतियों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है। ऑनलाइन धोखाधड़ी से आर्थिक नुकसान तो होता ही है परंतु इसके मनोवैज्ञानिक परिणाम कई गुना अधिक गंभीर होते हैं। जो व्यक्ति एक बार ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार हो जाता है उसका डिजिटल माध्यमों से विमुख होना स्वाभाविक है। इसलिए सतर्क रहकर ही धोखाधड़ी से सुरक्षित रहा जा सकता है।

भ्रष्टाचार मानव इतिहास के सबसे पुरातन समस्याओं में से एक है। बैंक के माध्यम से किए जाने वाले ग्राहक के किसी कार्य को पूरा करने के लिए बैंक कर्मचारी द्वारा राशि या वस्तु के स्वरूप में रिश्वत लेना-बैंकिंग के सन्दर्भ में भ्रष्टाचार की ये सबसे सरल परिभाषा है। स्थिति और भी चिंताजनक हो जाती है जब इसके बदले में बैंक कर्मचारी ग्राहक के किसी अनुचित कार्य को करने के लिए तैयार हो जाते हैं, क्योंकि इससे कई स्तरों पर नुकसान होता है। उदाहरण के लिए, यदि कर्मचारी रिश्वत लेकर ऐसे किसी ऋण प्रस्ताव को मंजूर करते हैं जिस में गम्भीर कमियां हैं तो इससे संस्थान के हितों के साथ समझौता होता है, क्योंकि इससे आस्ति गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव

पड़ता है। इसके अलावा, यदि कर्मचारी अच्छे प्रस्तावों को मंजूर करने के लिए भी रिश्वत की अपेक्षा करने लगता है तो ग्राहक प्रतिस्पर्धी बैंक के पास जा सकता है, जिससे बैंक की व्यवसायिक हितों का नुकसान होता है। बैंक की छवि भी खराब होती है। इसलिए, भ्रष्टाचार से बैंक, ग्राहकों, बैंकिंग व्यवस्था और अंततः समाज को नुकसान होता है जिससे बचने का एक ही कारगर तरीका है- सतर्कता।

अब प्रश्न उठता है कि बैंकिंग परिप्रेक्ष्य में किसको सतर्क रहने की आवश्यकता है? इसका उत्तर ढूँढने के लिए उदाहरण-स्वरूप निम्नलिखित स्थितियों का अवलोकन कर सकते हैं-

- एक व्यक्ति के पास किसी अज्ञात मोबाइल नंबर से संदेश के माध्यम से लिंक आया है- यहाँ लिंक की प्रामाणिकता की पुष्टि करना और फर्जी पाए जाने पर रिपोर्ट करना ग्राहक की जिम्मेदारी है।
 - बैंक कर्मचारी नियम-संगत कार्य करने के लिए ग्राहक से रिश्वत की मांग करता है- यहाँ सतर्कता-पूर्वक इस विषय की जानकारी संबंधित अधिकारियों को देना ग्राहक का दायित्व है।
 - ग्राहक बैंक कर्मचारी को किसी ऐसी लेनदेन या बैंकिंग कार्य करने के लिए रिश्वत देने की बात करता है जो नियम-विरुद्ध है- यहाँ ग्राहक की अनुचित मंशा के विषय में योग्य और विधिवत कार्रवाई करना बैंक कर्मचारी की जिम्मेदारी है।
 - ग्राहक डिजिटल अरेस्ट जैसे धोखे का शिकार हुआ है और बैंक में अपनी सारी जमाराशि निकालने आता है और उसके हाव-भाव से प्रतीत होता है कि वो तनाव में है- यहाँ बैंक कर्मचारियों की जिम्मेदारी है कि वे सतर्कता का परिचय देते हुए इस स्थिति में योग्य मार्गदर्शन दें।
- इन उदाहरणों से ये स्पष्ट है कि सतर्कता न अकेले बैंक कर्मचारियों की जिम्मेदारी है न ही ग्राहकों की। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सतर्कता ग्राहकों, बैंक कर्मचारियों और बैंकिंग व्यवस्था के सभी घटकों का साझा दायित्व है। इस सन्दर्भ में एक और प्रसंगिक प्रश्न यह है

कि व्यक्तिगत तौर पर सतर्क कैसे रहा जा सकता है। अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने कहा है 'मैनिपुलेटर की तरह विचार करो और विनियामक की तरह कर्कवाई करो।' आज सतर्कता का परिचय इसमें निहित है कि हम कितनी निपुणता के साथ धोखाधड़ी का पूर्वानुमान लगाकर उसे रोकने में सफलता प्राप्त करते हैं।

सतर्क रहने के लिए सर्वप्रथम व्यवस्था के हर घटक को संबंधित नियमों, विनियमों और विधियों की जानकारी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, नया बैंक खाता खुलवाने के लिए ग्राहकों को किसी शुल्क का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती है। यदि ग्राहक बैंक के किसी प्रतिनिधि द्वारा खाता खोलने के लिए राशि की मांग करने पर उसका भुगतान करता है तो वह अज्ञान वश भ्रष्टाचार का शिकार बन जाता है। इसी तरह, यदि ग्राहक को डिजिटल माध्यमों से होने वाले धोखाधड़ी के तरीकों की जानकारी नहीं है तो स्वाभाविक है कि धोखाधड़ी का शिकार होने की संभावना अधिक होगी। साथ ही, स्वयं के साथ या अपने आस-पास घटित हो रहे धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार की सूचना देने के लिए हर व्यक्ति को संबंधित अधिकारियों तक पहुंचने के लिए उपलब्ध माध्यमों की जानकारी होनी चाहिए। इसलिए, सतर्क रहने की प्रथम आवश्यकता है जानकारी रखना और समय-समय पर इस जानकारी को अपडेट करना। इसके लिए नियमित रूप से बैंक कर्मचारियों को बैंकिंग व्यवस्था में घटित हो रहे धोखाधड़ी की घटनाओं की जानकारी और इनकी रोकथाम के लिए बनाए गए नियमों, विधियों और अंदरूनी विधानों की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। साथ ही, बैंकों और प्रशासन को इन विषयों के प्रति जनमानस में भी सोशल मीडिया जैसे माध्यमों द्वारा साक्षरता का स्तर बढ़ाने की आवश्यकता है।

ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाओं की पहचान करके उन्हें रोकने में एक ऑनलाइन साधन अत्यंत उपयोगी साबित हो सकता है- कृत्रिम बुद्धिमत्ता। ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाओं में अक्सर एक विशिष्ट पैटर्न देखा जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से क्षणों में करोड़ों लेनदेन का विश्लेषण करके ऐसे पैटर्न के साथ-साथ संदेहास्पद खातों की पहचान की जा सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता

से ग्राहकों के सामान्य वित्तीय व्यवहार से भिन्न लेनदेन की पहचान की जा सकती है जिससे संभावित धोखाधड़ी की घटनाओं को रोका जा सकता है। इसलिए बैंक और प्रशासन कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग सतर्कता के साधन के तौर पर कर सकते हैं।

जानकारी रखने से और प्रौद्योगिकी के प्रयोग से व्यक्ति में सतर्क रहने की क्षमता विकसित होती है परंतु क्या सक्षम होना पर्याप्त है? इस स्थिति का अवलोकन कीजिए- एक जानकार और स्वयं ईमानदार बैंकर देखता है कि उसका सह-कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त है। कर्मचारी को पता है कि यह गलत है, इसकी शिकायत सतर्कता विभाग में इमेल जैसे आधुनिक माध्यमों द्वारा की जा सकती है, और व्हिसल ब्लोअर संरक्षण कानून के प्रावधानों के तहत वह सुरक्षित भी है। बावजूद इसके वह इस भ्रष्टाचार की अनदेखी करता है। यहां कर्मचारी सतर्क रहने के लिये सक्षम तो है परंतु उसकी इस अनुचित कार्य को रोकने की इच्छा नहीं है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि सतर्कता के लिए जानकारी और जागरूकता के साथ-साथ इच्छाशक्ति भी होनी चाहिए। कौटिल्य ने कहा है कि जिस प्रकार मछली पानी पी रही है या नहीं इसका निर्धारण करना अत्यंत कठिन होता है, इसी तरह बैंक के कर्मचारियों की मिली-भगत से हो रहे धोखाधड़ी की घटनाओं की पहचान करना भी कठिन है। इनकी पहचान करने का सार्थक तरीका यदि कोई है तो वह है सह-कर्मचारियों द्वारा इनको उजागर करना। इसके लिए आवश्यक है कि व्यवस्था के हर व्यक्ति में संस्थान और समाज के प्रति जवाबदेही की भावना विकसित हो; व्यक्ति स्वतः नैतिकता-पूर्ण व्यवहार करें और उसकी जानकारी में आए अनुचित व्यवहार को संबंधित अधिकारियों के संज्ञान में लाये। बैंक प्रबंधन को चाहिए कि भ्रष्ट कर्मचारियों के साथ सख्ती बरते और ईमानदार कर्मचारियों को प्रोत्साहन दे जिससे विश्वास के वातावरण का निर्माण होगा।

इस प्रक्रिया में विनियामक संस्थानों और प्रशासन की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। समय के साथ धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के तरीके बदलते रहते हैं और इनका स्वरूप भी बदलता रहता है। कई बार मौजूदा विधि और नियम इनसे निपटने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। विनियामक अधिकारियों के लिए आवश्यक

है कि वे निरंतर स्थिति का अनुश्रवण करें, आवश्यकता-अनुसार नियमों में परिवर्तन लाएं और जनमानस में सतर्कता और जागरूकता के विषय में साक्षरता का स्तर बढ़ाने की दिशा में सार्थक कदम उठाए। राष्ट्रीय कर्मयोगी जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से जिस प्रकार केंद्र सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि अपने दैनिक कार्यों में छोटे और साधारण लगने वाले परिवर्तन द्वारा वे किस प्रकार राष्ट्र-निर्माण में योगदान दे सकते हैं, उसी प्रकार सतर्कता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भी समर्पित और नियमित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सतर्कता किसी व्यक्ति-विशेष या किसी विभाग-विशेष का एकल दायित्व नहीं है बल्कि व्यवस्था के हर घटक का दायित्व है। हर व्यक्ति में इस संस्कृति को विकसित करने की आवश्यकता है कि सतर्कता कर्मनिष्ठता का प्रतीक है और सतर्क रहकर व्यक्ति अपने समाज के और अंततः राष्ट्र हितों के संरक्षण में योगदान देता है।

धोखाधड़ी की घटनाओं से बैंको को वित्तीय नुकसान तो होता ही है- फ्रॉड घोषित लेनदेन की वित्तीय भरपायी के रूप में, विनियामक अधिकारियों द्वारा लगाए गए दंड के रूप में और इन घटनाओं की जांच पर आने वाले परिचालनात्मक लागत के रूप में, इसके अलावा, धोखाधड़ी से उभरने वाली स्थिति के निवारण के लिए बहुमूल्य मानव संसाधनों की नियुक्ति अनिवार्य हो जाती है जिससे व्यवसायिक वृद्धि के लिए आवश्यक नवोन्मेष पर बैंक पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसका सर्वाधिक प्रभाव ग्राहकों में बैंक के प्रति विश्वास पर पड़ता है। विश्वास के अभाव में न आकर्षक ब्याज का अश्वासन देने वाले उत्पाद काम देंगे, न नवोन्मेषी योजनाएं और न ही बैंक के व्यवसायिक आंकड़े। वहीं यदि ग्राहकों में विश्वास होगा तो व्यवसायिक वृद्धि होना निश्चित है, बैंक की प्रतिष्ठा बढ़ना स्वाभाविक है और सहज ही संस्थान के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।



डॉ. कल्याणलक्ष्मी चित्ता
क्षे.का., ग्रेटर पुणे

नामांकन 2.0

नामांकन वह प्रक्रिया है, जिसके तहत कोई खाताधारक बैंक, बीमा, म्यूचुअल फंड या अन्य वित्तीय संस्थान में यह निर्धारित करता है कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी जमा राशि, निवेश या लॉकर की वस्तुएँ किस व्यक्ति/व्यक्तियों को सौंपी जाएँगी। जिसे यह अधिकार दिया जाता है, उसे नॉमिनी कहा जाता है। सरल शब्दों में, नामांकन एक कानूनी सुविधा है जो यह सुनिश्चित करती है कि खाताधारक की अनुपस्थिति में उसकी संपत्ति सही व्यक्ति तक आसानी, तेजी और बिना विवाद के पहुँच सके।

I. नामांकन क्यों जरूरी है?

नामांकन का मुख्य उद्देश्य यह है कि खाताधारक अपने जीवनकाल में ही एक या अधिक व्यक्तियों को नॉमिनी के रूप में नामित कर सके, ताकि उसकी मृत्यु के बाद बैंक बिना किसी अनावश्यक कानूनी जटिलता, मध्यस्थता या उत्तराधिकार प्रमाण पत्र की मांग के, संपत्ति या धनराशि संबंधित नॉमिनी को सौंप सके। इससे न केवल संभावित विवादों से बचाव होता है, बल्कि दावा निपटान की प्रक्रिया भी अधिक पारदर्शी, समान और प्रभावी बनती है।

i. नॉमिनी आवश्यक होने के प्रमुख कारण:

- **धन का त्वरित हस्तांतरण** – नॉमिनी होने से बैंक या संस्था पैसा तुरंत सौंप सकती है।
- **कानूनी विवादों से बचाव** – उत्तराधिकार को लेकर झगड़े और मुकदमे कम होते हैं।
- **परिवार को आर्थिक सुरक्षा** – कठिन समय में परिवार को सहारा मिलता है।
- **सरल और पारदर्शी प्रक्रिया** – लंबी कानूनी औपचारिकताओं की आवश्यकता नहीं रहती।

ii. नॉमिनी अपडेट अब अनिवार्य-

भारतीय रिजर्व बैंक ने स्पष्ट किया है कि सभी पुराने और नए बैंक खातों में नॉमिनी जोड़ना अनिवार्य है। यदि कोई ग्राहक निर्धारित

समय सीमा में नॉमिनी अपडेट नहीं करता है, तो उसका खाता "गैर-अनुपालन" माना जा सकता है। इससे कुछ बैंकिंग सेवाओं पर असर पड़ सकता है जैसे- लेनदेन में दिक्कतें, कुछ सेवाओं पर अस्थायी रोक, सुरक्षा से जुड़े जोखिम आदि।

iii. नॉमिनी अपडेट के आसान विकल्प-

भारतीय रिजर्व बैंक ने प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए दो विकल्प उपलब्ध कराए हैं-

1. ऑनलाइन प्रक्रिया- अब ग्राहक घर बैठे मोबाइल ऐप या इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से नॉमिनी अपडेट कर सकते हैं। ऑनलाइन तरीका सबसे आसान है-

- बैंक के ऐप या नेटबैंकिंग में लॉगिन करें
- "प्रोफ़ाइल/ सेवा/ नामांकित व्यक्ति प्रबंधन" विकल्प चुनें
- नॉमिनी का नाम, संबंध, जन्मतिथि, आधार नंबर दर्ज करें
- ओटीपी या ई-केवाईसी से सत्यापन करें
- जानकारी सबमिट करें (ज्यादातर बैंक 24 घंटे के भीतर नॉमिनी अपडेट कर देते हैं)।

2. बैंक शाखा में जाकर- यदि ग्राहक ऑनलाइन प्रक्रिया का उपयोग नहीं करना चाहते, तो वे बैंक जाकर फॉर्म भरकर भी नॉमिनी अपडेट कर सकते हैं।

नॉमिनी अपडेट के लिए आवश्यक दस्तावेज- नॉमिनी जोड़ने या बदलने के लिए निम्न दस्तावेज आवश्यक होते हैं। जैसे- आधार कार्ड/पहचान पत्र, नॉमिनी की जन्मतिथि, नाबालिग होने पर अभिभावक का विवरण। सही संबंध की जानकारी (किसी भी पारिवारिक बदलाव (जैसे शादी, बच्चे का जन्म, तलाक, मृत्यु) के बाद नॉमिनी जानकारी अपडेट करना जरूरी है)।

I. नामांकन 2.0 : चार नॉमिनी तक इज़ाज़त

सरकार और बैंकिंग नियामक संस्था भारतीय रिजर्व बैंक ने नामांकन के क्षेत्र में बड़े बदलाव

प्रस्तावित किए हैं- नए नियमों के अंतर्गत, बैंक जमा खाते व लॉकर एवं सुरक्षित निधि के लिए अधिकतम चार नॉमिनी नामित करने की इज़ाज़त दी गई है। इसके अलावा, नामांकन दो तरीकों से हो सकेगा-

i. समसामयिक नामांकन: समसामयिक नामांकन का अर्थ है एक ही खाते में एक से अधिक नॉमिनी को एक साथ नामित करना, जहाँ हर नामांकित को निश्चित प्रतिशत/हिस्सेदारी दी जाती है और कुल हिस्सा 100% होता है। नए नियमों के तहत ग्राहक अधिकतम चार नॉमिनी एक साथ रख सकते हैं। हर नॉमिनी को एक निश्चित प्रतिशत हिस्सा दिया जाता है; सभी प्रतिशत का योग 100% होना अनिवार्य है, जैसे 50%-30%-20% आदि। अब ग्राहक अपने बचत/चालू/मियादी जमा/आवर्ती जमा/लॉकर आदि में एक से अधिक नॉमिनी दर्ज कर सकते हैं, जिन्हें एक ही समय पर मान्य माना जाएगा।

पहले अधिकांश खातों में प्रचलन एक ही नॉमिनी का था, जिससे मृत्यु के बाद दावा प्रक्रिया में विवाद या देरी की संभावना अधिक रहती थी।

ii. क्रमवर्ती नामांकन: क्रमवर्ती नामांकन का अर्थ है कि नॉमिनी व्यक्तियों को एक निश्चित क्रम में दर्ज किया जाता है, और अधिकार क्रम-क्रम से एक-एक करके आगे बढ़ता है। इसमें पूरा जमा/संपत्ति पहले नॉमिनी व्यक्ति के नाम पर जाता है; यदि वह पहले से मृत हो या बाद में मृत्यु हो जाए तो अगला नॉमिनी, फिर उसके बाद अगला, इस तरह क्रम में अधिकार लेता है। खाताधारक अधिकतम चार नॉमिनी तय कर सकता है और लिखित रूप से क्रम 1, 2, 3, 4 निर्दिष्ट करता है, न कि प्रतिशत वार बँटवारा।

लॉकर और सेफ कस्टडी जैसे मामलों में क्रमवर्ती नॉमिनी विशेष रूप से उपयोगी माना गया है, ताकि एक समय में केवल एक ही नॉमिनी को अधिकार मिले और

स्वामित्व स्पष्ट रहे। खाता धारक की मृत्यु पर बैंक पहले नॉमिनी से शुरू करके निर्धारित क्रम के अनुसार ही दावा स्वीकार करता है, जिससे विवाद और अस्पष्टता कम होती है।

“चार नॉमिनी” व्यवस्था क्यों?

चार नॉमिनी तक की सुविधा क्यों लाई जा रही है, इसके पीछे कई कारण और उद्देश्य हैं:

- i. **उत्तराधिकार विवादों का समाधान:** अक्सर खाता या लॉकर धारक के निधन पर असमंजस की स्थिति रहती है, जैसे कौन दावा प्रस्तुत करेगा, नॉमिनी का नामांकन नहीं था, या सिर्फ एक नॉमिनी था और अन्य वारिसों ने असहमति जतायी। इस तरह विवाद और देरी होती है। चार नॉमिनी तक की व्यवस्था इस स्थिति को कम कर सकती है।
- ii. **अवशिष्ट जमा/अनक्लेम्ड डिपॉजिट्स में कमी:** बैंकिंग प्रणाली में खाताधारक के मृत्यु के बाद व अनिर्दिष्ट नॉमिनी के कारण ‘अनक्लेम्ड जमा’ बढ़ते हैं। अधिक नॉमिनी विकल्प से इस स्थिति में सुधार हो सकता है।
- iii. **वित्तीय सुरक्षा एवं पारिवारिक सुविधा:** खाता धारक को यह सुविधा मिलती है कि वह अपनी पसंद के विभिन्न व्यक्तियों को नामांकन दे सकते हैं – उदाहरणस्वरूप पत्नी, बच्चे, माता-पिता, भांजा-भांजी आदि। इससे पारिवारिक वित्तीय सुरक्षा बेहतर होती है।
- iv. **प्रक्रिया में सरलता:** मृत्यु के बाद बैंक को तुरंत प्रमाण पत्र और क्लेम सेटलमेंट की प्रक्रिया करनी पड़ती है। नामांकन होने पर यह प्रक्रिया सहज और शीघ्र हो जाती है।
- v. **विविधता और लचीलापन:** चार नॉमिनी तक होने से खाता धारक अपनी परिसंपत्ति को विभिन्न व्यक्तियों के लिए विभाजित कर सकेंगे, चाहे समान हिस्सेदारी हो या प्राथमिक-अनन्य प्राथमिकता क्रम हो।
- vi. **उच्च पारिवारिक सुरक्षा:** एक ही नॉमिनी नामांकन की बजाय यदि चार तक विकल्प हों, तो यदि किसी नॉमिनी के

साथ समस्या हो जाए (मृत्यु, असमर्थता, विवाद) तो अन्य नामिनियों के माध्यम से दावा निपटान का सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित किया जा सकता है।

- vii. **कम कानूनी बाधाएँ:** नामांकन सुविधा के कारण बैंक उत्तराधिकारी (कानूनी वारिस) प्रमाणपत्र, उत्तराधिकार प्रमाणपत्र आदि प्राप्त करने की प्रक्रिया से बच सकता है।
- iii. **चार नॉमिनी प्रावधान: लागू करने की प्रक्रिया एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन-**
 - 1) **खाताधारकों के लिए मार्गदर्शन-**
 - i. **खाता/लॉकर लेते समय नामांकन पर ध्यान दें:** जमा खाता या लॉकर खोलते समय नामांकन विकल्प अवश्य जाँचें और उसकी जानकारी लें।
 - ii. **चार नॉमिनी विकल्प का विवेकपूर्ण उपयोग करें:** यदि चार नॉमिनी तक की सुविधा उपलब्ध हो, तो नामिनियों को स्पष्ट विभाजन, प्राथमिकता या अनुपात के साथ नामित करें।
 - iii. **लिखित व प्रमाणित नामांकन सुनिश्चित करें:** नामांकन बैंक में लिखित रूप से दर्ज कराएँ और उसके पंजीकरण की लिखित पुष्टि/रसीद अवश्य प्राप्त करें।
 - iv. **नियमित समीक्षा करें:** जीवन में किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तन (विवाह, बच्चे का जन्म, नॉमिनी का निधन आदि) पर नामांकन विवरण की जाँच करें और आवश्यकता होने पर उसे अपडेट करें।
 - v. **लॉकर मामलों में अतिरिक्त सावधानी:** यदि लॉकर संयुक्त रूप से लिया गया है, तो नामांकन के साथ-साथ उत्तरजीविका की शर्तों को भली-भांति समझें।
 - vi. **नॉमिनी की भूमिका स्पष्ट समझें:** नॉमिनी संपत्ति का स्वामी नहीं होता, बल्कि ट्रस्टी की भूमिका निभाता है; अंतिम वितरण उत्तराधिकार कानून या वसीयत के अनुसार ही होगा।
 - 2) **बैंक एवं नियामक के लिए मार्गदर्शन**
 - i. **स्पष्ट और पारदर्शी प्रस्तुति:** खाता खोलते समय, पासबुक, लॉकर अनुबंध

एवं अन्य दस्तावेजों में नामांकन विकल्प और उसके लाभों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाए।

- ii. **व्यापक जागरूकता अभियान:** इस नई व्यवस्था से संबंधित नए नियमों की जानकारी ग्राहकों तक बुकलेट, वेबसाइट, मोबाइल बैंकिंग संदेश और शाखा स्तर पर पहुँचाई जाए।
- iii. **प्रणाली और प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण:** नामांकन फॉर्म, ऑनलाइन आवेदन, नामांकन में बदलाव/रद्द करने की प्रक्रिया को सरल, मानकीकृत और डिजिटल बनाया जाए।
- iv. **लॉकर से जुड़े विशेष प्रावधान:** सर्वाइवर्स क्लॉज़, नामांकन सूची और वस्तुसूची प्रपत्रों को एकीकृत, अद्यतन और स्पष्ट रखा जाए।
- v. **नियामकीय निगरानी:** भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकिंग कंपनियों (नामांकन) नियमों के अनुपालन की नियमित निगरानी की जाए तथा बैंकों को नामांकन कवरेज प्रतिशत सहित प्रासंगिक रिपोर्टिंग के निर्देश दिए जाएँ।

निष्कर्ष:

भारतीय रिजर्व बैंक एवं भारत सरकार द्वारा “चार नॉमिनी तक की अनुमति” का नया नियम बैंकिंग व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सुरक्षित और ग्राहक-केंद्रित बनाता है। यह प्रावधान न केवल खाताधारकों की संपत्ति के सुव्यवस्थित हस्तांतरण को आसान करता है, बल्कि पारिवारिक विवादों, कानूनी जटिलताओं और अनावश्यक देरी को भी कम करता है। एक से अधिक नॉमिनी रखने की सुविधा बदलते पारिवारिक ढांचे और आधुनिक जरूरतों के अनुरूप है। कुल मिलाकर, यह कदम वित्तीय साक्षरता, विश्वास और समावेशन को बढ़ावा देते हुए बैंकिंग सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध होगी।



प्रवीण कुमार
अनूप नगर शाखा,
क्षे.का., इंदौर

भावनात्मक बुद्धिमत्ता

ज़िंदगी केवल काम, जिम्मेदारियों और लक्ष्यों का नाम नहीं है। इसमें भावनाएँ भी बराबर की हिस्सेदार होती हैं। दिनभर के काम के बीच कभी थकान महसूस होती है, कभी गुस्सा आता है, कभी मन बिना कारण भारी लगने लगता है, कई बार खुशी भी मिलती है। इन सब भावनाओं के साथ जीना ही जीवन है। लेकिन इन भावनाओं को समझना और संभालना हर किसी के लिए आसान नहीं होता।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता बस इतनी समझ है कि जो मन में चल रहा है, उसे पहचाना जाए और उसी के अनुसार व्यवहार किया जाए। कई बार इंसान खुद नहीं समझ पाता कि वह क्यों चिड़चिड़ा है या क्यों बिना वजह परेशान है। जब कारण समझ में नहीं आता, तब समस्या और बढ़ जाती है।

भावनाएँ- जीवन का स्वाभाविक हिस्सा: भावनाएँ कोई कमजोरी नहीं हैं। दुखी होना, रोना, गुस्सा आना या डर लगना- ये सब स्वाभाविक है। समस्या तब होती है जब इन भावनाओं को या तो पूरी तरह दबा दिया जाता है या फिर बिना सोचे-समझे बाहर निकाल दिया जाता है। कई लोग सोचते हैं कि मज़बूत वही है जो कभी भावुक नहीं होता। लेकिन असल में मज़बूती इस बात में है कि भावना को समझा जाए, न कि उससे भागा जाए।

कई घरों में यह देखा जाता है कि दिनभर की थकान शाम को गुस्से के रूप में निकल आती है। छोटी-सी बात पर बहस शुरू हो जाती है। बाद में लगता है कि बात बेवजह बढ़ गई। अगर उस समय यह समझ आ जाए कि गुस्सा असल में थकान या तनाव की वजह से है, तो हालात संभाले जा सकते हैं।

घर और रिश्तों में भावनात्मक समझ: घर वह जगह है जहाँ इंसान सबसे ज़्यादा सहज होता है, लेकिन यहीं सबसे ज़्यादा भावनात्मक टकराव भी होते हैं। पति-पत्नी के बीच, माता-पिता और बच्चों के बीच, या भाई-बहनों के बीच, छोटी-छोटी बातें बड़ी बन जाती हैं। जब किसी की बात सुने बिना ही जवाब दे दिया जाता है, तो सामने वाला खुद को अनसुना महसूस करता है। धीरे-धीरे दूरी बढ़ने लगती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता यहीं काम आती है- बात पूरी सुनने में, सामने वाले की स्थिति

समझने में।

कई बार किसी इंसान को सलाह नहीं, सिर्फ़ समझ की ज़रूरत होती है। यह समझ रिश्तों को संभाल कर रखती है।

कामकाजी जीवन और भावनात्मक संतुलन: काम की जगह पर दबाव होना आम बात है। समय सीमा, लक्ष्य, वरिष्ठों और ग्राहकों की अपेक्षाएँ, ये सब मानसिक तनाव बढ़ाते हैं। ऐसे में अगर हर बात को दिल पर लिया जाए, तो काम करना मुश्किल हो जाता है। किसी दिन काम पूरा नहीं हो पाया, बॉस ने डांट दिया या सहकर्मी ने कुछ कह दिया। यह सब रोज़मर्रा का हिस्सा है। भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति इन बातों से पूरी तरह टूटता नहीं। वह स्थिति को समझने की कोशिश करता है और अगला कदम सोच-समझकर उठाता है।

यहाँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मतलब यह नहीं कि सब कुछ सह लिया जाए, बल्कि यह समझना कि कब प्रतिक्रिया देनी है और कब शांत रहना बेहतर है।

गुस्सा और चुप्पी: गुस्सा एक ऐसी भावना है जो सबसे जल्दी नुकसान पहुँचाती है- रिश्तों को भी और खुद को भी। गुस्से में कही गई बात बाद में पछतावे का कारण बनती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता बीच का रास्ता दिखाती है- गुस्से को पहचानना, उसे समझना और सही समय पर सही तरीके से व्यक्त करना।

बच्चे और भावनात्मक समझ: बच्चे भी भावनाओं से भरे होते हैं। फर्क सिर्फ़ इतना है कि वे उन्हें शब्दों में नहीं कह पाते। रोना, चिड़चिड़ापन, ज़िद या चुप हो जाना- ये सब किसी न किसी भावना के संकेत होते हैं। जब बच्चों की भावनाओं को समझने की कोशिश की जाती है, तो व्यवहार अपने आप बदलने लगता है। डांट से ज़्यादा असर समझ और धैर्य का होता है।

असफलता और भावनात्मक मजबूती: असफलता हर किसी के जीवन में आती है। कोई परीक्षा में, कोई काम में, कोई रिश्तों में असफल होता है। कुछ लोग इससे जल्दी उबरते हैं, जबकि कुछ लोग खुद को ही दोषी मानने लगते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता असफलता को जीवन

का अंत नहीं बनने देती। यह समझ विकसित करती है कि एक असफलता पूरी पहचान नहीं होती।

भावनाओं को पहचानने की आदत: कई बार दिन के अंत में यह भी समझ नहीं आता कि मन इतना भारी क्यों है। भावनाओं को पहचानने की आदत धीरे-धीरे बनती है। कभी यह समझ आता है कि थकान है, कभी निराशा, कभी अकेलापन। जब भावना का नाम समझ में आ जाता है, तो उससे निपटना आसान हो जाता है।

जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को समझता है, वह खुद को भी बेहतर समझता है। उसे हर बात पर खुद को कमतर साबित करने की ज़रूरत नहीं होती।

धीरे-धीरे विकसित होने वाली समझ: भावनात्मक बुद्धिमत्ता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो एक किताब पढ़कर आ जाए। यह अनुभव से आती है- गलतियों से, रिश्तों से, समय के साथ।

हर इंसान कभी न कभी भावनाओं में बह जाता है। यह स्वाभाविक है। फर्क बस इतना होता है कि कुछ लोग बाद में समझ जाते हैं और कुछ लोग उसी जगह अटके रहते हैं। जब भावनाओं को समझ लिया जाता है, तो ज़िंदगी थोड़ी आसान लगने लगती है। हर बात बोझ नहीं लगती। हर समस्या स्थायी नहीं लगती।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता कोई बड़ी या कठिन अवधारणा नहीं है। यह रोज़मर्रा की ज़िंदगी में संतुलन बनाए रखने की एक सहज समझ है। यह समझ इंसान को न तो पत्थरदिल बनाती है और न ही कमज़ोर। बल्कि उसे इतना सक्षम बना देती है कि वह अपनी भावनाओं के साथ जी सके, न कि उनके बोझ तले दब जाए।

अंत में यही कहा जा सकता है कि जब भावनाओं को समझ लिया जाता है, तो जीवन थोड़ी राहत की साँस लेने लगता है—और शायद यही भावनात्मक बुद्धिमत्ता का असली अर्थ है।



प्रखर पुराणिक
क्ष.का., रीवा

शिखर की ओर

महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई



सुनील कुमार

उप महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई



साई मनोहर काकि



पुरुषोत्तम जयसवाल

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं

शुभमस्तु



गिरीश चंद्र जोशी,
महाप्रबंधक



अरुण कुमार,
महाप्रबंधक



एस अरविंद कुमार,
उप महाप्रबंधक



ए शारदा मूर्ति,
उप महाप्रबंधक



के अनुराधा,
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं

समुचित सावधानी

बैंकिंग का मूल उद्देश्य केवल ऋण देना नहीं है, बल्कि आम जनता द्वारा जमा की गई धनराशि को सुरक्षित रखते हुए उसका विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना है। बैंक जब किसी व्यक्ति, संस्था या उद्योग को ऋण प्रदान करता है, तो वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जोखिम को भी स्वीकार करता है। यदि यह जोखिम बिना उचित मूल्यांकन के लिया जाए, तो ऋण भविष्य में बैंक के लिए बोझ बन सकता है और अनर्जक आस्ति में परिवर्तित हो सकता है। इसी पृष्ठभूमि में क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

समुचित सावधानी वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बैंक यह सुनिश्चित करता है कि प्रस्तावित ऋण न केवल लाभकारी है, बल्कि सुरक्षित भी है। यह प्रक्रिया बैंक को संभावित हानियों से बचाने के साथ-साथ एक मजबूत और टिकाऊ ऋण पोर्टफोलियो बनाने में सहायता करती है।

क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस की अवधारणा

बैंक में ऋण के संदर्भ में, समुचित सावधानी का तात्पर्य ऋण स्वीकृति से पूर्व उधारकर्ता से जुड़े प्रत्येक महत्वपूर्ण पहलू की गहराई से जाँच करना है। इसमें केवल वित्तीय आँकड़ों का विश्लेषण ही नहीं, बल्कि उधारकर्ता की मंशा, कारोबार की स्थिरता, उद्योग की स्थिति, कानूनी पहलुओं और जोखिम कारकों का समग्र मूल्यांकन शामिल होता है।

यह एक संरचित और तार्किक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अनुमान के बजाय तथ्यों के आधार पर निर्णय लेना है।

क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस के प्रमुख उद्देश्य

क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है:

1. उधारकर्ता की चुकौती क्षमता और इच्छाशक्ति का आकलन

2. बैंक के क्रेडिट जोखिम को सीमित करना
3. संभावित डिफॉल्ट और धोखाधड़ी की पहचान
4. ऋण की शर्तों का यथार्थ निर्धारण
5. नियामकीय दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करना

क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस के मुख्य आयाम

1. उधारकर्ता की पहचान और साख का मूल्यांकन:

ड्यू डिलिजेंस की शुरुआत उधारकर्ता की पहचान से होती है। इसमें यह सुनिश्चित किया जाता है कि ऋण लेने वाला व्यक्ति या संस्था वास्तविक है और उसका पूर्व व्यवहार संतोषजनक रहा है।

- केवाईसी दस्तावेजों की प्रामाणिकता
 - पूर्व ऋण इतिहास
 - क्रेडिट रिपोर्ट और भुगतान अनुशासन
- इस चरण से उधारकर्ता की नीयत और विश्वसनीयता का संकेत मिलता है।

2. वित्तीय स्थिति का विश्लेषण:

समुचित सावधानी के माध्यम से यह जाना जाता है कि उधारकर्ता आर्थिक रूप से कितना सक्षम है।

- आय और व्यय की स्थिति
- नकदी प्रवाह की स्थिरता
- ऋण और पूंजी का संतुलन

वित्तीय अनुपातों के माध्यम से यह मूल्यांकन किया जाता है कि प्रस्तावित ऋण कारोबार पर अतिरिक्त दबाव तो नहीं डालेगा।

3. कारोबार की व्यवहार्यता:

कोई भी ऋण तभी सुरक्षित माना जा सकता है जब उधारकर्ता का कारोबार दीर्घवधि में टिकाऊ हो। इसके अंतर्गत देखा जाता है:

- कारोबार का स्वरूप और अनुभव
- उत्पाद या सेवा की बाजार में स्वीकार्यता
- प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति
- भविष्य की संभावनाएँ

यदि कारोबार की नींव ही कमजोर है, तो वित्तीय आँकड़े भी भ्रामक सिद्ध हो सकते हैं।

4. उद्योग और आर्थिक परिवेश का अध्ययन:

कारोबार जिस उद्योग से जुड़ा होता है, उसका प्रभाव ऋण की सुरक्षा पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

- उद्योग की वर्तमान स्थिति
- मांग और आपूर्ति का संतुलन
- सरकारी नीतियों और नियमों का प्रभाव
- आर्थिक चक्र का चरण

यह अध्ययन बैंक को बाहरी जोखिमों को समझने में सहायता करता है।

5. प्रबंधन और प्रवर्तक का मूल्यांकन:

किसी भी उद्यम की सफलता उसके संचालन करने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करती है। समुचित सावधानी में यह देखा जाता है कि:

- प्रवर्तकों का अनुभव और नैतिक आचरण
- निर्णय लेने की क्षमता
- पारदर्शिता और अनुशासन

सशक्त प्रबंधन कठिन परिस्थितियों में भी ऋण को सुरक्षित रख सकता है।

6. तकनीकी और परिचालन पहलू:

विशेष रूप से औद्योगिक और परियोजना ऋणों में तकनीकी समुचित सावधानी अत्यंत आवश्यक होता है।

- उपयोग की जाने वाली तकनीक
- उत्पादन क्षमता
- संचालन लागत और दक्षता

यह सुनिश्चित करता है कि परियोजना व्यवहारिक है और समय पर पूर्ण की जा सकती है।

7. कानूनी जाँच:

कानूनी समुचित सावधानी बैंक को भविष्य की कानूनी जटिलताओं से बचाता है।

- संपत्ति और दस्तावेजों की वैधता
- आवश्यक अनुमतियाँ और लाइसेंस
- वैधानिक देनदारियों की स्थिति

कानूनी कमजोरियाँ ऋण वसूली को कठिन बना सकती हैं।

8. सुरक्षा और गारंटी का मूल्यांकन: सुरक्षा ऋण की अंतिम रक्षा पंक्ति होती है। समुचित सावधानी में यह सुनिश्चित किया जाता है कि सुरक्षा:

- पर्याप्त मूल्य की हो
- कानूनी रूप से प्रवर्तनीय हो
- सही प्रकार से निर्मित और दर्ज हो

गलत मूल्यांकन बैंक के लिए गंभीर नुकसान का कारण बन सकता है।

क्रेडिट ड्यू डिलिजेंस का व्यावहारिक महत्व

समुचित सावधानी, बैंकिंग प्रणाली में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो न केवल एनपीए की रोकथाम में मदद करती है, बल्कि धोखाधड़ी पर नियंत्रण, सुदृढ़ निर्णय प्रक्रिया, नियामकीय अपेक्षाओं की पूर्ति और दीर्घकालीन लाभप्रदता सुनिश्चित करती है। केवल दस्तावेजों की औपचारिक जांच पर्याप्त

नहीं है; इसमें आवेदक की पुनर्भुगतान क्षमता, नकदी प्रवाह और पिछले रिकॉर्ड का गहन विश्लेषण शामिल होता है। समुचित सावधानी के तहत थर्ड-पार्टी वेरिफिकेशन, साइट विजिट और मूल दस्तावेजों का सत्यापन किया जाता है, जिससे फर्जी पहचान और बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए गए संपत्ति मूल्य जैसी धोखाधड़ी रोकी जा सके। सही और पूर्ण डेटा के आधार पर लिए गए निर्णय न केवल बैंक को वित्तीय जोखिम से बचाते हैं, बल्कि अधिकारियों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी से भी सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसके अलावा, यह प्रक्रिया भारतीय रिजर्व बैंक और अन्य नियामक संस्थाओं के दिशा-निर्देशों के अनुपालन को सुनिश्चित करती है, जिससे बैंक भारी जुर्माने और प्रतिबंधों से बचता है। अंततः, एक स्वस्थ ऋण पोर्टफोलियो बैंक की बैलेंस शीट को मजबूत करता है, लाभप्रदता बढ़ाता है और निवेशकों का विश्वास कायम रखता है।

चुनौतियाँ और सावधानियाँ

यद्यपि समुचित सावधानी अत्यंत आवश्यक है, तथापि समय का दबाव, अधूरी जानकारी और

बाहरी प्रभाव जैसी चुनौतियाँ इसमें बाधा बनती हैं। इन परिस्थितियों में भी प्रक्रिया से समझौता करना भविष्य में गंभीर वित्तीय संकट को जन्म दे सकता है। समुचित सावधानी आधुनिक बैंकिंग की अनिवार्य आवश्यकता है। यह न केवल जोखिम प्रबंधन का साधन है, बल्कि उत्तरदायी और विवेकपूर्ण ऋण संस्कृति का आधार भी है। बदलते आर्थिक परिवेश में वही बैंक स्थिर और सफल रह सकते हैं, जो ऋण स्वीकृति से पूर्व उचित सावधानी और गहन विश्लेषण को प्राथमिकता देते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि समुचित सावधानी बैंक और अर्थव्यवस्था—दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने वाला एक अपरिहार्य उपकरण है।



प्रभांशु त्रिपाठी
क्षे.का., मुंबई-वाशी

अर्जी

अभी बेचैन मत हो; बस मुस्तैद रहो!
अब कान और आँखें खोलकर
बहुत कुछ देखने का समय है।

तुम्हारा काम आग को प्यार करके
घायल हो जाना नहीं है,
बल्कि उसको काम में लेना है।
आग के प्रेम में पागल न हो जाना;

बल्कि उसकी तपिश से जागना,
उसकी ज्योति से सीखना,
पर खुद भस्म न हो जाना।
अभी मत डगमगाओ, बस सजग रहो,
अब देखने का है गहरा समुंदर,
जो ठहर न सके, वही कूदे पानी के अंदर।

पर तुम्हारा धर्म है मुश्किलों से लड़ना,
न कि उसकी अतल गहराई में खो जाना ।

अभी घबराओ नहीं, बस खुद को तैयार करो।
अब, दिल और दिमाग साथ रखो—
अनुभवों को समेट लेने का यही समय है।
इस घड़ी में जो ठहर नहीं सकता,
वही बर्बादी को ललकारता है।

अब डगमगाओ नहीं, घबराओ नहीं, बेचैन मत हो,
बस तैयार रहो, सजग रहो और मुस्तैद रहो।



मानस घोष
एसपीयू शाखा,
क्षे. का., आणंद

ई-कॉमर्स- प्रभाव एवं संभावनाएँ

प्रौद्योगिकी के दौर में हमारे दैनिक जीवन के कार्यकलापों का तरीका भी एक आमूलचूल परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा है। इसने देश में विभिन्न हितधारकों को अलग-अलग तरह से प्रभावित किया है।

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म की एक विस्तृत शृंखला की उपलब्धता के साथ जीवन अधिक सुविधाजनक और आसान हो गया है। तथापि बृहत परिदृश्य को देखें तो पता चलता है कि भारी छूट और कैशबैक जैसी रणनीति के साथ ई-कॉमर्स दिग्गज कंपनियों ने लघु एवं मध्यम ऑनलाइन व्यवसायों को व्यापक नुकसान पहुँचाया है।

इस संदर्भ में ई-कॉमर्स और इसकी कार्यप्रणाली पर विचार करना महत्वपूर्ण होगा।

ई-कॉमर्स से क्या अभिप्राय है?

'ई-कॉमर्स' शब्द एक ऐसे व्यवसाय मॉडल को संदर्भित करता है जो कंपनियों और व्यक्तियों को इंटरनेट पर वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद-बिक्री की अनुमति देता है।

ई-कॉमर्स लेनदेन के माध्यम से किताबें, संगीत, हवाई जहाज का टिकट और स्टॉक निवेश एवं ऑनलाइन बैंकिंग जैसी वित्तीय सेवाओं सहित लगभग हर कल्पनीय उत्पाद और सेवा उपलब्ध है। इसकी ऐसी व्यापकता के कारण इसे अत्यंत विघटनकारी प्रौद्योगिकी माना जाता है।

ई-कॉमर्स द्वारा प्रदत्त लाभ

क्रेता और विक्रेता के बीच निकटता:- ई-कॉमर्स विक्रेताओं को ग्राहकों के निकट पहुँचने में सक्षम बनाता है जिससे उत्पादकता और पूर्ण प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि होती है।

ग्राहक विभिन्न विक्रेताओं के बीच चयन का विकल्प रखता है और आवश्यकता के अनुसार सबसे अधिक प्रासंगिक उत्पाद खरीद सकता है।

ग्राहकों के पास अब 24/7 वर्चुअल स्टोर तक

पहुँच उपलब्ध है।

क्रेताओं और विक्रेताओं की व्यापक रेंज:- यह न्यूनतम निवेश के साथ वैश्विक बाज़ार में व्यापक पहुँच प्रदान करता है।

यह विक्रेताओं को वैश्विक ग्राहकों को बिक्री कर सकने और ग्राहकों को वैश्विक स्तर पर विकल्प चुन सकने में सक्षम बनाता है। भौगोलिक सीमाओं और चुनौतियों का उन्मूलन हो गया है या वे व्यापक रूप से कम हो गई हैं।

उत्पाद वितरण लागत में कमी:- अंतिम ग्राहकों के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से ई-कॉमर्स प्रक्रिया उत्पाद वितरण शृंखला को व्यापक रूप से संक्षिप्त कर देती है।

यह उत्पादक या सेवा प्रदाता और अंतिम ग्राहक के बीच एक सीधा और पारदर्शी चैनल का निर्माण करती है।

इस तरह लक्षित ग्राहक की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादों और सेवाओं का निर्माण किया जाता है।

अन्य लाभ:- ई-कॉमर्स क्षेत्र में वृद्धि से रोज़गार को बढ़ावा मिल सकता है, निर्यात से राजस्व में वृद्धि हो सकती है, राजकोष के कर संग्रह में वृद्धि हो सकती है और दीर्घावधि में ग्राहकों को और बेहतर उत्पाद एवं सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

ई-कॉमर्स उद्योग भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को वित्तपोषण, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण के साधन प्रदान कर प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है और इसका अन्य उद्योगों पर भी अनुकूल सोपानी प्रभाव पड़ रहा है।

ई-कॉमर्स के संबंध में सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

ड्राफ्ट ई-कॉमर्स नियम 2021:

अनिवार्य पंजीकरण:-

ई-कॉमर्स इकाइयों के लिए उद्योग

और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (डीपीआईआईटी), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के साथ पंजीकरण कराना अनिवार्य है।

ई-कॉमर्स इकाई का अभिप्राय ऐसे व्यक्तियों से है जो इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स के लिए डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक सुविधा या प्लेटफॉर्म के मालिक हैं, उसका संचालन या प्रबंधन करते हैं।

फ्लैश बिक्री सीमित करना:

पारंपरिक ई-कॉमर्स फ्लैश बिक्री पर प्रतिबंध नहीं है। केवल विशिष्ट 'फ्लैश' बिक्री या 'बैक-टू-बैक' बिक्री की अनुमति नहीं है जो ग्राहक की पसंद को सीमित करती है, कीमतों में वृद्धि करती है और एक समान प्रतिस्पर्द्धा पर रोक लगाती है।

अनुपालन अधिकारी:-

ई-कॉमर्स साइटों को मुख्य अनुपालन अधिकारी (सीसीओ) और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ चौबीसों घंटे समन्वय हेतु एक व्यक्ति की नियुक्ति सुनिश्चित करने के लिए भी निर्देशित किया गया है।

संबंधित पक्षों को प्रतिबंधित करना:-

पक्षपातपूर्ण व्यवहार की बढ़ती चिंताओं के समाधान हेतु नए नियमों में यह सुनिश्चित करने का प्रस्ताव है कि किसी भी संबंधित पक्ष को 'अनुचित लाभ' के लिए किसी भी उपभोक्ता सूचना (ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से) के उपयोग की अनुमति नहीं है।

मूल देश हेतु शर्त:-

इन इकाइयों को वस्तुओं के उद्गम देश के आधार पर इन्हें चिह्नित करना होगा और ग्राहकों के लिए पूर्व-खरीददारी चरण में एक पारदर्शी तंत्र प्रदान करना होगा।

घरेलू विक्रेताओं को 'उचित अवसर' प्रदान करने हेतु आयातित सामानों के विकल्प भी पेश करने होंगे।

साइबर सुरक्षा से संबंधित मुद्दों की रिपोर्ट करना:-

साइबर सुरक्षा या किसी कानून के उल्लंघन के मामले में अधिकृत सरकारी एजेंसी के अनुरोध पर ई-कॉमर्स इकाइयों को 72 घंटों के भीतर जानकारी प्रदान करनी होगी।

उपभोक्ता संरक्षण (ई-कॉमर्स) नियम, 2020

शिकायत निवारण तंत्र:-

मार्केटप्लेस तथा विक्रेताओं के लिए एक शिकायत निवारण अधिकारी की नियुक्ति करना आवश्यक है।

अनुचित व्यापार अभ्यासों, हेर-फेर और पक्षपातपूर्ण व्यवहार पर रोक लगाना:

कोई भी ई-कॉमर्स इकाई अनुचित लाभ प्राप्त करने या एक ही वर्ग के उपभोक्ताओं के बीच भेदभाव करने के उद्देश्य से कीमतों में फेरबदल नहीं करेगी और न ही उपभोक्ताओं के अधिकारों को प्रभावित करने वाला कोई मनमाना वर्गीकरण करेगी।

नकली समीक्षा या भ्रामक दावे नहीं:-

कोई भी विक्रेता या ई-कॉमर्स इकाई स्वयं को एक उपभोक्ता के रूप में प्रस्तुत नहीं करेगी और वस्तुओं या सेवाओं के बारे में नकली समीक्षा नहीं करेगी, इसके अलावा किसी वस्तु अथवा सेवा की गुणवत्ता या विशेषताओं को गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।

नकली उत्पाद बेचने वाले विक्रेताओं का रिकॉर्ड:-

ई-कॉमर्स संस्थाओं को उन सभी विक्रेताओं का रिकॉर्ड रखना होगा, जो बार-बार उन वस्तुओं या सेवाओं की पेशकश करते हैं जिन्हें कॉपीराइट अधिनियम (वर्ष 1957), ट्रेडमार्क अधिनियम (वर्ष 1999) या सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम (2000) के तहत प्रतिबंधित किया गया है।

ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी):-

ओएनडीसी एक स्वतंत्र रूप से सुलभ सरकार-समर्थित प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य

ई-कॉमर्स को एक प्लेटफॉर्म-केंद्रित मॉडल से वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद एवं बिक्री के लिए एक खुले नेटवर्क में स्थानांतरित करके इसका लोकतंत्रीकरण करना है।

इस प्रकार एक ऐसा मंच तैयार करने की परिकल्पना की गई है जिसका उपयोग सभी ऑनलाइन खुदरा विक्रेताओं द्वारा किया जा सके।

हम ई-कॉमर्स कार्यप्रणाली में कैसे सुधार कर सकते हैं?

उपभोक्ता संरक्षण (ई-कॉमर्स) नियम, 2020 पर एक संसदीय पैनल ने अनुशंसा की है कि सरकार को उपभोक्ताओं के अधिकारों के बेहतर संरक्षण और अनुचित अभ्यासों पर रोक के लिए नियमों में संशोधन करना चाहिये। इसकी प्रमुख अनुशंसाएँ हैं:

स्पष्ट परिभाषा:-

ई-कॉमर्स के संदर्भ में अनुचित व्यापार अभ्यासों को और ई-कॉमर्स इकाइयों द्वारा किए जाने वाले ऐसे धोखाधड़ीपूर्ण अभ्यासों से निपटने हेतु व्यावहारिक विधिक उपचारों को और अधिक स्पष्टता के साथ परिभाषित किया जाना चाहिये।

'ड्रिप प्राइजिंग' (जहाँ अतिरिक्त शुल्क के कारण उत्पाद का अंतिम मूल्य अधिक हो जाता है) को भी स्पष्टता से परिभाषित किया जाना चाहिये और उल्लंघन के लिए दंड का प्रावधान करते हुए उपभोक्ताओं की इससे सुरक्षा के लिए उपाय किए जाने चाहिये।

व्यक्तिगत डेटा का वर्गीकरण:-

उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता की रक्षा और उनके डेटा की सुरक्षा के लिए समिति ने सिफारिश की है कि उपयोगकर्ताओं के व्यक्तिगत डेटा को संवेदनशीलता के स्तर के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है और प्रत्येक स्तर के लिए उपयुक्त सुरक्षा निर्धारित की जा सकती है।

कस्टमर केयर

ई-कॉमर्स इकाइयों को एक समर्पित कस्टमर केयर नंबर प्रदान करना चाहिये और एक ऐसे

तंत्र की स्थापना करनी चाहिये जो निगरानी कर सके कि ग्राहक की किसी समस्या के समाधान में कस्टमर केयर कार्यकारी ने कितना समय लिया।

भ्रामक तकनीक को हतोत्साहित करना

एल्गोरिदम में परिवर्तन, नकली उत्पाद समीक्षा और रेटिंग सहित सभी भ्रामक रणनीतियों को हतोत्साहित करने के लिए कुछ सुधारात्मक उपाय होने चाहिये ताकि किसी भी तरह से उपभोक्ता हित को नुकसान न पहुँचे।

ई-कॉमर्स अपने कई फायदों के कारण प्रसिद्ध है। हमारे लिए दुकानों में आए बिना कहीं भी, कभी भी और किसी भी उपकरण पर खरीदारी करना बहुत सुविधाजनक है। अधिकांश ई-कॉमर्स प्रवेशमार्ग द्वारा दी जाने वाली उत्पाद सुविधाओं वाले स्टोर की तुलना में उत्पादों को ऑनलाइन खोजना आसान और अधिक कुशल है।

ई-कॉमर्स के संचालन के लिए भौतिक स्टोर के मालिक की तुलना में बहुत कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। बिक्री कर्मचारियों की भर्ती, शीर्ष खुदरा स्टोरों के लिए किराये और अवांछित ऊपरी लागतों में निवेश करने की कोई आवश्यकता नहीं है। एक ऑनलाइन स्टोर में एकमात्र जिम्मेदारी आपकी वेबसाइट को बढ़ावा देना और ग्राहकों को समय पर गुणवत्ता वाले उत्पाद वितरित करना है।

ई-कॉमर्स माल और सेवाओं में सीमा पार व्यापार के लिए उपलब्ध सबसे तेजी से बढ़ते व्यापार मार्गों में से एक बन गया है। यह न्यूनतम निवेश के साथ विश्व बाजार में व्यापक पहुंच और स्वीकृति सुनिश्चित करता है। यह पुनर्विक्रेताओं को वैश्विक ग्राहक और ग्राहकों को वैश्विक बाजार से उत्पाद चुनने की अनुमति देता है।



नितिन वासनिक
क्षे.का., रायपुर

प्रदूषण की समस्या एवं वाहनों का बीएस-VI मानक

बीएस-VI भारत के वाहन उत्सर्जन मानक हैं, जो यूरोपीय मानकों (यूरो-6) पर आधारित हैं। ये मानक वर्ष, 2020 से लागू हुए और वाहनों से निकलने वाले प्रदूषकों जैसे नाइट्रोजन ऑक्साइड, पार्टिकुलेट मैटर, हाइड्रोकार्बन और कार्बन मोनोऑक्साइड की मात्रा को काफी कम करते हैं। भारत सरकार ने वर्ष 2016 में घोषणा की कि बीएस-V को छोड़कर सीधे बीएस-VI लागू किया जाएगा, ताकि प्रदूषण तेजी से नियंत्रित हो सके। बीएस-VI यानी भारत स्टेज- 6, भारत सरकार द्वारा निर्धारित एक उत्सर्जन मानक है, जो वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण की मात्रा को कंट्रोल करता है। ये पुराना बीएस 4 स्टैंडर्ड की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है और पर्यावरण के लिए बेहतर माना जाता है। 01 अप्रैल 2020 से देश में केवल बीएस- 6 मानक वाले वाहनों को ही बेचने और रजिस्टर करने की अनुमति दी गई है।

इन नियमों के तहत, गाड़ी बनाने वाली कंपनियों को ऐसे इंजन बनाने होते हैं जो बीएसईएस द्वारा तय किए गए एमिशन टेस्ट पास करें। दूसरी ओर, तेल कंपनियों से उम्मीद की जाती है कि वे फ्यूल को इस तरह से रिफाइन करें कि उसमें सल्फर की मात्रा कम हो।

भारत स्टेज उत्सर्जन मानक

भारत स्टेज उत्सर्जन मानक, मोटर वाहनों से निकलने वाले प्रदूषकों को नियंत्रित करने के लिए तय किए गए राष्ट्रीय नियम हैं। इन मानकों के तहत कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर जैसी हानिकारक गैसों की अधिकतम सीमा निर्धारित की जाती है। ये नियम यूरोपीय उत्सर्जन मानकों पर आधारित हैं और देश में बिकने वाले सभी नए वाहनों पर लागू होते हैं। हर नए बीएस चरण के साथ उत्सर्जन सीमाएं और सख्त होती जाती हैं। जिससे वाहन निर्माताओं को स्वच्छ तकनीक और बेहतर एग्जॉस्ट सिस्टम अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

वर्तमान में दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत में वायु प्रदूषण का आतंक जारी है। दिल्ली सहित पूरा उत्तर भारत कोहरे के चपेट में है। इसके कारण प्रदूषण के साथ-साथ स्मॉग एवं हवा की गुणवत्ता भी बहुत खराब हो जाती है। मानव जीवन के लिए जीना दुष्कर हो जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर कंट्रोल के लिए ये फैसला लिया गया है कि बीएस-VI से कम स्टैंडर्ड वाले बाहरी वाहनों की दिल्ली में एंट्री बैन रहेगी। ऐसे वाहनों को न केवल रोका जाएगा, बल्कि उल्लंघन करने पर उन्हें जब्त भी किया जा सकता है। सरकार के इस सख्त रुख के बाद अब वाहन मालिकों के लिए पीयूसी सर्टिफिकेट और वाहन के बीएस स्टैंडर्ड की जांच करना जरूरी हो गया है।

दिल्ली सहित पूरे देश में वायु गुणवत्ता खराब होती जा रही है। बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए दिल्ली सरकार ने तत्काल प्रभाव से कई सख्त कदम उठाए हैं। सरकार ने बड़ा फैसला लेते हुए बीएस-VI से कम स्टैंडर्ड वाले बाहरी वाहनों की दिल्ली में एंट्री पूरी तरह से बैन कर दी है। इसके अलावा और भी कई फैसले लिए गए हैं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में फैले जहरीले स्मॉग और लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण को देखते हुए ये घोषणा की गई है कि 18 दिसंबर से नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों पर कार्रवाई होगी और ऐसे में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

एक महत्वपूर्ण नियम ये भी लागू किया गया है कि पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट के बिना किसी भी वाहन को दिल्ली के पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा। ये नियम सख्ती से लागू किया जाएगा, जिसका सीधा असर उन लाखों वाहन चालकों पर पड़ेगा जो अपने वाहनों का प्रदूषण स्तर नियमित रूप से चेक नहीं करवाते हैं।

बीएस-VI यानी भारत स्टेज-6, भारत सरकार द्वारा निर्धारित एक उत्सर्जन मानक है, जो

वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण की मात्रा को कंट्रोल करता है। ये पुराना बीएस-4 स्टैंडर्ड की तुलना में कहीं अधिक सख्त है और पर्यावरण के लिए बेहतर माना जाता है।

कैसे जांच करें कि वाहन बीएस-VI है या नहीं?

वाहन मालिक यह कैसे जांच करें कि उनका वाहन बीएस-VI है कि नहीं। इसकी जांच करने का तरीका बेहद आसान है।

- 1. आरसी और ऑनलाइन स्टेटस:** वाहन के रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट (आरसी) पर 'एमिशन नॉर्म' या 'भारत स्टेज' लिखा होता है। यदि वहां स्पष्ट रूप से बीएस-VI लिखा है, तो आपका वाहन इस मानक पर खरा है। आप डिजीलॉकर, एमपरिवहन या परिवहन वेबसाइट पर अपने आरसी की डिजिटल कॉपी देखकर भी ये जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- 2. गाड़ी पर स्टिकर या प्लेट देखें:** वाहन निर्माता अक्सर इंजन के पास या ड्राइवर साइड डोर के फ्रेम में एक लेबल या प्लेट लगाते हैं, जिस पर 'बीएस VI' का उल्लेख होता है। इसके अलावा, कई बार वाहन के मॉडल नाम में भी ये जानकारी दी जाती है।
- 3. रजिस्ट्रेशन ईयर देखें:** तीसरा और आसान तरीका ये है कि यदि आपने अपना वाहन 01 अप्रैल 2020 के बाद रजिस्टर कराया है, तो यह लगभग निश्चित है कि वो बीएस-VI मानक का होगा, फिर भी आरसी बुक पर क्रॉसचेक कर देखा जा सकता है।



रवि चौधरी
क्षे.का., पटना

मानसिक शांति देने वाली प्रमुख रुचियाँ

हम सभी शांति चाहते हैं, लेकिन अक्सर उसे ढूँढने का समय नहीं निकाल पाते। दिन भर की भागदौड़, जिम्मेदारियाँ और अपेक्षाएँ-इन सबके बीच मन धीरे-धीरे थक-सा जाता है। ऐसे में रुचियाँ हमारे जीवन में वह जगह बनाती हैं, जहाँ हम कुछ देर खुद के लिए जी पाते हैं। रुचियाँ कोई अतिरिक्त काम नहीं होतीं, बल्कि मन को साँस लेने का अवसर देती हैं।

रुचियाँ कैसे धीरे-धीरे मन को बदलती हैं

अक्सर हमें लगता है कि मानसिक शांति किसी बड़े बदलाव से आएगी जैसे कि नौकरी बदलने से, छुट्टी पर जाने से या हालात सुधरने से। लेकिन सच यह है कि मन ज्यादातर छोटी आदतों से शांत होता है। रुचियाँ रोज़मर्रा के जीवन में छोटे-छोटे विराम देती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि में समय लगाता है, तो उसका ध्यान वर्तमान में टिकता है। उस समय वह बीते कल की चिंता या आने वाले कल का डर नहीं सोचता। यही वर्तमान में रहने की आदत धीरे-धीरे मन को स्थिर बनाती है।

हर रुचि हर व्यक्ति के लिए नहीं होती- यह समझना भी ज़रूरी है कि किसी और की रुचि हमें शांति दे, यह आवश्यक नहीं। किसी को संगीत में सुकून मिलता है, तो किसी को चुपचाप टहलने में। कुछ लोग भीड़ में खुश होते हैं, कुछ अकेलेपन में। रुचि वही सही है, जिसमें मन दबाव महसूस न करे।

कई बार लोग समाज या टैंड देखकर रुचियाँ चुन लेते हैं और फिर उनमें मन नहीं लगता। इससे उलटा तनाव बढ़ जाता है। सच्ची रुचि वही होती है, जिसे करते हुए, समय का पता ही न चले।

- पुस्तक पढ़ना:** कभी-कभी किताब खोलते ही ऐसा लगता है जैसे कोई हमें समझा रहा हो। पढ़ते समय हम अकेले होते हुए भी अकेले नहीं होते। एक अच्छी किताब हमें सिखाती है कि जो परेशानी हमें बहुत बड़ी लग रही है, उसे किसी और ने भी जिया है और उससे निकला है। यही एहसास मन को हल्का करता है।
- संगीत सुनना:** हर भावना को शब्द नहीं चाहिए होते। कभी-कभी बस एक धुन काफी होती है। जब मन भारी हो, तब संगीत बिना सवाल पूछे साथ निभाता है। गुनगुनाना या चुपचाप सुनना, दोनों ही

तरीके मन के बोझ को कम कर देते हैं।

- रुचिकर लेखन:** लिखते समय हम दूसरों के लिए नहीं, खुद के लिए सच बोलते हैं। कोई राय जाहिर करता है, न टोकता है। धीरे-धीरे लिखने वाला व्यक्ति यह समझने लगता है कि उसके दुख बाहर से नहीं, भीतर से पैदा होते हैं। जो अपने मन को समझ लेता है, वह दूसरों से कम उम्मीदें रखता है।
- चित्रकला और रंग:** रंग भरते समय कोई सही या गलत नहीं होता। जैसा मन कहे, वैसा रंग। यह रुचि हमें यह स्वीकार करना सिखाती है कि हर चीज़ का दोषरहित होना ज़रूरी नहीं।
- योग और ध्यान:** योग और ध्यान हमें यह नहीं सिखाते कि सोच बंद कैसे करें, बल्कि यह सिखाते हैं कि सोच के पीछे भागना ज़रूरी नहीं। धीरे-धीरे मन को रुकना आ जाता है, और वहीं से शांति शुरू होती है।
- बागवानी:** पौधे सिखाते हैं कि सब कुछ तुरंत नहीं होता। न ज़्यादा पानी देने से पौधा तेज़ बढ़ता है, न खींचने से। बागवानी हमें भरोसा करना सिखाती है- प्रक्रिया पर, समय पर। जो इंतज़ार करना सीख लेता है, वह बेचैन नहीं रहता।
- स्वादिष्ट खाना बनाना:** खाना बनाने समय हम किसी और के बारे में सोचते हैं- उसकी पसंद, उसकी भूख। यह छोटा-सा काम मन में अपनापन और संतोष भर देता है। जब हम दूसरों के लिए कुछ करते हैं, तो खुद भी बेहतर महसूस करते हैं।
- यात्रा:** नई जगह पर जाकर पता चलता है कि दुनिया हमारी सोच से कहीं बड़ी है। यात्रा हमें सिखाती है कि हर चीज़ हमारे नियंत्रण में नहीं होती और यह बात स्वीकार करना भी राहत देता है। जो नियंत्रण छोड़ना सीख लेता है, वही हल्का महसूस करता है।
- हस्तकला:** कुछ बनाना, चाहे छोटा ही क्यों न हो, भीतर एक आत्मविश्वास जगाता है। यह एहसास होता है कि हम केवल समस्याएँ झेलने वाले नहीं, कुछ

रचने वाले भी हैं। सृजन का अनुभव मन को मजबूत बनाता है।

- शारीरिक गतिविधि:** चलना, खेलना या हल्का व्यायाम करना, इनसे सिर्फ शरीर नहीं, मन भी खुलता है। जब शरीर थकता है, तो मन की बेचैनी अपने-आप कम हो जाती है। मन और शरीर अलग नहीं हैं, दोनों को साथ संभालना पड़ता है।

व्यस्त जीवन में रुचियों के लिए जगह कैसे बनाएँ- अक्सर यह कहा जाता है- "समय नहीं मिलता।" असल में समय नहीं, प्राथमिकता नहीं मिलती। रुचियों के लिए घंटों निकालना ज़रूरी नहीं।

दिन के 15-20 मिनट भी काफी होते हैं- बस वे पूरी ईमानदारी से दिए जाएँ।

- सुबह उठकर पाँच मिनट लिख लेना,
- रात को मोबाइल की जगह दो पन्ने पढ़ लेना,
- पौधों को पानी देना, टहलने निकलना आदि,

ये छोटे कदम मन को यह संदेश देते हैं कि खुद को नज़रअंदाज़ नहीं कर रहे हैं।

रुचियाँ रिश्तों को भी बेहतर बनाती हैं- जब व्यक्ति मानसिक रूप से शांत होता है, तो उसका व्यवहार अपने-आप बदल जाता है। वह कम चिड़चिड़ा होता है, ज़्यादा सुनता है और कम प्रतिक्रिया देता है। इसका असर रिश्तों पर पड़ता है- घर में, काम पर और समाज में। रुचियाँ व्यक्ति को भीतर से संतुलित बनाती हैं, और संतुलित व्यक्ति दूसरों के लिए भी सहज होता है।

आज की दुनिया में लगातार व्यस्त रहना जैसे सफलता का प्रमाण बन गया है। लेकिन रुचियाँ हमें यह सिखाती हैं कि रुकना कमजोरी नहीं, ज़रूरत है। कुछ देर बिना उद्देश्य के कुछ करना- मन को फिर से ऊर्जा देता है। यह ऊर्जा हमें जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभाने में मदद करती है।



गरिमा सक्सेना
क्षे.का., रीवा



Artificial Intelligence

Promise, Peril, and Profound Change in Banking and Beyond

On a Monday morning, Priya living in Mumbai, received a message from her bank that “We’ve stopped a suspicious payment from your account. No action needed.” She’s surprised as she didn’t even know anyone was trying to scam her but somewhere far away, an algorithm she had never met was silently watching her spending patterns, spotting the anomaly, and cutting off the fraud before it could happen. This silent guardian was Artificial Intelligence. In today’s world, AI is no longer a futuristic concept. It is already here, it is working, and it is transforming everything around us.

This 21st century will be remembered for many achievements, but one technology which stands out as a force that is reshaping industries, economies, and lives is Artificial Intelligence. In just a few decades, AI has travelled from being an academic idea to the engine behind virtual assistants in our phones, breakthroughs in healthcare, revolutions in entertainment, backbone of global business, and perhaps most disruptively, the beating heart of modern banking.

Artificial Intelligence and its evolution

The roots of this story take us back to the summer of 1956, when a small group of scientists gathered at Dartmouth College in New Hampshire with a bold idea that “What if

machines could be taught to think like humans?” The meeting was led by John McCarthy, who later came to be known as the Father of Artificial Intelligence.

At that time, computers were the size of wardrobes and capable of little more than basic arithmetic. Yet those scientists dreamed of machines that could reason, learn, and even understand language. Most of the world dismissed them, but today their dream has become a reality. AI is no longer a curiosity, it is now influencing what we watch, what we buy, how we travel, and how we bank.

What is AI and how it really works

In simple terms, Artificial Intelligence refers to machines or systems that mimic human intelligence. They can learn, reason, solve problems, and understand language. This may look magical however the principle is simple; observe, learn, try and improve like a child learns to recognise animals after seeing enough pictures. AI does something very similar, feed it data, allow it to learn patterns using Machine Learning (ML) and Deep Learning (DL), test its accuracy, and then release it into the world where it keeps learning every moment from new information.

In machine learning, algorithms study data, maps inputs to outputs and spot hidden regularities. This

learning can be supervised, where past data is tagged and labelled or unsupervised, where the system groups data based on similar patterns without prior guidance. Deep learning adds layers to it like building blocks in the brain. That is why AI can understand spoken language, detect subtle details in medical images, or monitor millions of financial transactions for suspicious activity. The cycle is simple, data goes in, the system learns, a model is built, and predictions come out. The real power, however, lies in scale. AI does not tire, it does not stop, and every new data point is an opportunity to improve.

Beyond Prediction: A New Creative Frontier

Alongside traditional AI lies a new frontier Generative AI. Unlike systems that only analyse or predict, generative AI creates writing text, designing images, composing music, even producing code. Tools like ChatGPT, trained on billions of words, can draft an article or answer complex questions in seconds. DALL·E can design pictures from a simple description. What feels like creativity is actually the system recognising patterns and recombining them to produce results that are both original and useful.

Even more fascinating is the rise of Self-Learning AI. While traditional models need labelled data, the self-learning systems learn by interacting

with their environment. The most common form is reinforcement learning where the system makes a choice, receives a reward or a penalty, and gradually learns what works. Google's AlphaGo, which taught itself to beat the world's best Go players by playing millions of games against itself, is perhaps the most famous example.

AI All Around Us

AI today already surrounds us and has become part of our daily lives, often unnoticed and invisible. Doctors use AI to read X-rays and diagnose medical conditions, Taxi apps use AI to pick the fastest route. farms rely on AI to predict crops. In security, AI detects cyberattacks faster than humans ever could, it curates our music playlist, powers movie special effects, blocks junk mail, and translates languages. It has become the invisible assistant that shapes the rhythm of modern life. Consider some striking examples.

- In 2017, JPMorgan Chase introduced its COiN platform, which scanned thousands of legal documents in seconds which required 360,000 hours of human labour every year.
- A major international bank's fraud detection AI prevented \$2.5 million worth of unauthorised transactions in just its first month by leveraging its learning behaviours that no human analyst could have spotted.
- The Ant Group in China used AI to provide loans to rural

communities that traditional banks avoided, based on unconventional data like mobile purchase histories to bring millions into the financial system.

- In 2016, Google's AlphaGo shocked the world by defeating Go champion Lee Sedol with moves so unexpected that they challenged human notions of creativity itself.
- But AI also has its flaws, when Microsoft launched its chatbot "Tay" on Twitter in 2016, it quickly began posting offensive messages after being influenced by malicious users.

AI's Impact on the Banking Sector

The banking sector also has undergone a dramatic transformation thanks to AI. Here's an in-depth look at its effects:

- **Fraud Detection & Risk Management-** Banks historically struggled with detecting fraudulent activities due to vast transaction volumes. AI now monitors transactions in real time, learning to distinguish legitimate activity from fraud by analyzing patterns, customer behaviour, and contextual data. These intelligent systems flag anomalies instantly and adapt to new fraud tactics, significantly reducing losses.
- **Customer Service & Engagement-** AI-driven chatbots and virtual assistants provide 24/7 support. These systems answer inquiries, help with account management, and even

offer personalized financial advice.

- **Credit Scoring & Loan Approval-** Traditional credit scoring relied heavily on static financial history. AI considers broader data, social media activity, transaction history, employment patterns etc leading to more accurate and inclusive credit assessments. Underwriting decisions are faster, fairer, and dynamic.
- **Personalized Financial Products-** AI analyzes customer spending, saving, and investment patterns to suggest tailored products and services. Banks leverage predictive analytics to anticipate customer needs, boosting satisfaction and loyalty.
- **Banking Operations-** Robotic Process Automation handles repetitive work such as KYC verification, reconciliation, and compliance reporting.
- **Regulatory Compliance & Anti-Money Laundering (AML)-** AI automates tedious compliance processes by scanning transactions, documentation, and reporting anomalies to authorities. Machine learning helps detect money laundering by identifying suspicious transaction chains and hidden relationships.

Banking's AI Future

Looking ahead, the future of banking with AI looks even more striking.

- Imagine Meera, a small business owner in Pune received an app



notification that “Next week, your supplier payment and GST deadline overlap. Would you like a short-term loan of ₹50,000 for seven days? Estimated cost: ₹400.” Behind that message, multiple AI systems are at work, forecasting her cash flow, verifying her identity, ensuring regulatory compliance, and scoring her credit risk, all in seconds. She taps “Yes” and the loan is hers, with no paperwork, no queues, just a solution tailored to her business requirement.

- Imagine walking into a branch five years from now. There are no queues and a digital assistant greets you in your language. It is already aware that your fixed deposit matures next week. It suggests investment options suited to your goals and market conditions. Behind the scenes, AI has already scanned your transactions for fraud, checked your creditworthiness, and predicted your future needs.
- In a Kutch village after a harsh monsoon Ramesh, a dairy farmer named considers replacing a pump. He does not have any Bureau records or credit score based on which Bank can sanction a loan. However, the bank sees steady deposits from the cooperative, a seasonal pattern of feed purchases, and satellite signals suggesting his crop took less damage than neighbouring plots. The AI recommends a modest loan with a rainy-day clause. The branch

officer sits with Ramesh to explain the terms and inquires with two local references. The loan approval takes hours, not weeks and months later, the pump is functional, the repayments are on time. It was AI and human working together; the machine widened the lens and the human made the decision

All the above scenarios will be reality, sooner than we can imagine.

The Other Side of the Ledger: Real Risks and Downside

AI's reliance on historical data can be problematic, in a way that if the input is biased, its output will also reflect that bias. A crisis, a pandemic, or a sudden shift can break the model which would give biased result with great confidence. For example, in banking sector, there could be a scenario where an algorithm will unfairly decline Loans to under-represented communities, similarly in loan recoveries, maximising efficiency for recovery may cross ethical lines.

The Generative AI can hallucinate and confidently produce answers that are just plain wrong. In finance, a single faulty model can create ripples across systems, creating disaster faster than ever before. Further, reliance on similar AI tools by many banks raises the risk of a domino effect in the whole sector.

Security is a never-ending battle and AI is a shield, but it is also a weapon. Deepfake voices can mimic Seniors, fake IDs can slip through weak verification, hackers can poison

training data, so a model fails at the worst moment. Fraudsters can now use text generators to craft flawless phishing messages in any language even personalised to each victim. The race is no longer humans versus AI, but defensive AI versus offensive AI.

Privacy is another ethical battlefield. Good banking relies on trust, and trust depends on consent and restraint. AI is hungry for data and rewards those who store it. There may be a scenario that without firm governance model, a Bank slides from “understanding the customer” to “tracking the customer,” which could be dangerous for the concept of privacy.

However, the subtlest danger and silent threat is perhaps Over-reliance on AI. When technology takes over, decision-making and human judgment erodes. When decisions become push-button and explanations become opaque, people stop asking “why”. This can result in weaker judgement, in poor escalation, in a culture that mistakes dashboards for reality. Technology should widen human attention, not narrow it.

The most pertinent Question - Will AI Take Our Jobs?

One thing which can be said with fair degree of certainty that yes AI will eliminate roles but only those which are repetitive and predictable in nature. As per World Economic Forum (WEF) approx. 85 million jobs may be lost due to AI, however 97 million new Jobs will also be created. History suggests technology shifts always change the nature of work, not just eliminate it. While AI will

replace roles, it will create and reshape new ones like AI trainers, prompt engineers, AI auditors, cyber threat hunters, ethicists, explainers, and cross-disciplinary jobs interfacing with technology. The future workplace will blend human creativity with AI's analytic capabilities. The "AI will not replace bankers. But bankers who use AI will replace those who donot." The future of banking is not man versus machine but man with machine.

Is AI Dangerous? Risks of Self-Evolution & Takeover

The answer is no, not as we have seen in many movies. Most AI today is narrow, focused on specific tasks and lacking intentionality or self-preservation. AIs are brilliant pattern machines and not conscious beings. They don't have goals or desires and they only optimise objectives we humans set. However, the real risks are when AI is misused for fraud, become bias in decision-making and resulting in loss of privacy.

The fear of a super intelligent AI that could evolve beyond our control remains theoretical. Leading expert Geoffrey Hinton assigns a real, but not immediate, risk that there is 10%-20% chance that AI could eventually become uncontrollable if not designed with benevolent motives and strong safeguards.

The fact remains that power needs discipline, bias must be challenged, privacy must be protected, security must constantly adapt, and human judgement must remain the key to it. AI is a tool of immense power, but

unchecked, it can become a source of danger.

Our Story our Choices

AI's biggest opportunities and threats are we humans. It has the capacity to transform industries, science, lifestyle, innovation and society as whole. It can make banking safer, more inclusive, more efficient, and deeply personal. But it also emanates risk of exclusion, bias, privacy loss, job displacement and dependency. In a field where trust is everything, the message is clear that banks, technologists, regulators, and customers must work together to adopt responsible governance, build in transparency, and preserve ethical oversight.

Embracing AI is embracing complexity and responsibility. This is not just about machines, it is about imagination, vigilance, and responsibility. By blending ethics and oversight with innovation, we can unlock wonders, avoid dangers, and guide AI towards becoming a tool for human progress rather than a threat to our humanity.

We are still writing the early chapters of this story. The ending will depend on the choices we make now. As Stephen Hawking warned "We must ensure AI serves humanity, not the other way around."

Sajjan Kumar Chouhan
Strategy Vertical
CO, Mumbai



आत्म शक्ति

आत्म शक्ति की प्रखर ज्वाला,
जब अन्तर्मन में जलती है।
उन्मुक्त जोश की इच्छा शक्ति,
तब अंगारों से पलती है ॥
युवा जोश की कर्मठ इच्छा,
जब मदमस्त चाल से चलती है।
सूरज की ओजस्वी किरणें भी,
तब पूछ पूछ कर ढलती हैं ॥

आत्म शक्ति के बल को पहचानो,
संघर्ष विजय में बदलेगा।
पथ कितना भी कठिन रहे,
रोमांच जीत से भर देगा ॥
जिन सपनों को सोचा था,
उन सबको पूरा कर देगा।
विश्व विजय का स्वर्ण मुकुट,
ललाट कला पर रख देगा ॥

आत्म शक्ति वह बोध है,
जो विश्वास प्रेरणा देता है।
आत्म शक्ति वह ध्यान है,
जिससे आत्मज्ञान चेता है ॥
आंतरिक ऊर्जा का तप,
चेतना समाहित कर लेता है।
शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य बनाकर,
धैर्यवान समर्थ कर देता है ॥

आत्म शक्ति है अनमोल खजाना,
जो हर इंसान में समाया है।
हर काम जो लगता असंभव,
वह संभव कर दिखाया है ॥
उठो चलो आत्म शक्ति से,
अपना नाम बनाना है ॥
विश्व पटल पर भारत देश की,
गरिमा को हमें बढ़ाना है ॥
महिमा को हमें बढ़ाना है ॥

डॉ. दीपक गुप्ता
क्षे.का., मुंबई-
बोरीवली





The Paradox of "Interest Past Due"

For many bank staff, the term "Non-Performing Asset" (NPA) is straightforward. An account becomes an NPA when a borrower fails to make payments for a prolonged period, typically 90 days. But one particular reason for an account to become an NPA often causes confusion: "Interest Past Due."

This is the central paradox: How can an account be classified as an NPA for "interest past due" on the very same day the interest is debited? This seems to contradict the 90-day rule that applies to other loans.

To resolve this confusion, we must understand the fundamental principles of how different types of loans are classified. The key is to distinguish between two main categories: Term Loans and Running Accounts.

Understanding Term Loans

A Term Loan is a credit facility sanctioned for a specific purpose, like purchasing an asset (e.g., a car, a piece of machinery) or for a personal need (e.g., a consumption loan). These loans are typically repaid in fixed instalments over a long period, often three years or more.

The NPA classification for a Term Loan is based on the "Overdue" principle. If a borrower misses an instalment, the account becomes overdue. The bank provides a grace period, and the account is only classified as an NPA after the overdue amount remains unpaid for 90 days from its due date.

The Special Case of Running Accounts (CC/OD)

The rules for Running Accounts, such

as Cash Credit (CC) or Overdraft (OD) facilities, are different. These accounts are designed to meet a business's short-term working capital needs. Instead of fixed instalments, the bank extends a line of credit that a business can draw upon as needed.

The key to a healthy running account is that it must remain "in order." An account is considered "Out of Order" and can be classified as an NPA for several reasons, and one of the most common is insufficient credit to cover the interest charged.

Why "Interest Past Due" Matters for Running Accounts

Let's use a clear example. Imagine a business with a projected annual turnover of ₹5 crore. A bank might sanction a working capital limit of ₹1 crore, expecting the business to route its sales proceeds—the full ₹5 crore—through the account over the course of the year.

This means that over a 90-day period, the business is expected to show a turnover (credits) of roughly ₹1.25 crore in its account. At the same time, the bank will debit a certain amount of interest, say ₹2.50 lakh, over the same 90-day period.

The paradox now becomes clear. If the business fails to route enough credit into the account to even cover the ₹2.50 lakh in interest, it indicates a fundamental problem. The account is not being used for its intended purpose, which is to meet working capital needs.

Therefore, the bank classifies the account as an NPA if the credits into

the account over a continuous 90-day period are not enough to cover the interest debited during that same period.

A Critical Insight

This is why an account can become an NPA on the day of interest debit, even if the borrower paid previous months' interest. The classification isn't based on a single overdue payment. It is based on the accumulated failure to generate enough credit over the past 90 days to cover the interest charges. The final interest debit simply triggers the NPA classification, highlighting a problem that has been building for the past three months.

Conclusion and Call to Action

The paradox of "interest past due" is not a paradox at all once you understand the different classification principles for Term Loans and Running Accounts. The 90-day rule for Running Accounts is not about an overdue payment; it's about a 90-day period where the account is failing to function as a working capital facility.

To prevent this, bank staff must proactively monitor these accounts. Using tools like CCODCHK or analyzing SMA (Special Mention Account) and mock run data can provide early warnings, allowing you to intervene and caution the customer before their account is classified as an NPA.



Suresh Kumar S
TEV Cell,
CO, Mumbai

Digital Valuation and Digital Title Search

Driving Mortgage Transformation through India's Digital Ecosystem

The Indian mortgage lending landscape is undergoing a seismic shift. The mortgage lending process in India has always been a time-intensive process taking weeks to sanction or rejection of the application by the lending institutions. Digital Valuation and Digital Title Search Reports (TSRs), once paper-heavy bottlenecks, are now being reimaged through AI, automation, and fintech innovation. The result: faster, more transparent, and scalable lending processes that serve both urban & non-urban borrowers. The entire lending is being redefined by processes which are now seamlessly integrated into the digital banking ecosystem. Traditionally, valuers and advocates had to physically visit branches, handle large sets of paper documents, and generate reports over weeks.

Presently in India, the land data digitization is still in the nascent stage. Many states are still under the process of converting land ownership details, from physical to digital for creating a centralized repository. Financial institutions are adopting the hybrid model which brings out the best of both worlds (Physical – verification, inspection and Digital – digital land data ownership repositories, Encumbrance check, Automated Valuation Models) which complements each other thereby

creating an entirely new operating model called the Phygital model. The Phygital model is a blend of the two worlds to create a more seamless, immersive, and enhanced user experience for all the stakeholders. Today, with digital workflows, manual expertise is still central—but digital has made the process faster, remote-enabled, and paperless thereby reducing the TAT.

Digital Valuation Reports - Automated Valuation Models (AVMs) with Human Expertise

Digitization of the Valuation process has brought in functionalities like Automated Valuation Models (AVMs) leveraging big data, satellite imagery, GIS mapping, and proprietary algorithms to generate instant estimates of property value. Due to the present limited availability of the digital land data AVMs need to be complemented by certified valuers, who now access scanned property documents digitally instead of relying on branch visits.

- **Digital First:** Banks share scanned title deeds, ownership records, and property documents through secure digital platforms.
- **Expert Validation:** Valuers authenticate these records remotely, applying their judgment to AVM outputs.
- **Exceptional Cases:** Physical verification is required only for original deed validation or site-specific discrepancies.

This hybrid model ensures speed + accuracy + compliance without over-reliance on physical presence.

Digitized Title Search Reports: Advocates Go Digital

Presently, Title Search Reports (TSRs) require days of back-office work. Now, advocates too operate within the digital ecosystem taking advantage of digital data available from the govt. portals for verification of title ownership thereby increasing the efficiency and accuracy of the TSR.

- **Scanned Document Exchange:** Branches upload ownership records, encumbrance certificates, mutation documents & other ownership / title related documents to common platform securely.
- **Digital Review & Report:** Advocates analyze these files and prepare a digitally signed TSR, delivered to banks in hours.
- **Automation Support:** AI-powered search tools highlight encumbrances, disputes, or irregularities for quick validation.
- **Physical Interaction (Only if Needed):** Examining original stamped documents, cross-checking with registrar offices, etc.

Role of Fintechs in Mortgage-based lending

Fintechs have created AI based digital platforms providing workflow & data



management for enhancing the efficiency and accuracy of various reports required for customer onboarding by the lending institutions. Modern mortgage platforms integrate digital valuation and title search into end-to-end automated workflows, reshaping customer experience and lender efficiency.

1. Data Collection & Verification

- OCR, NLP, and AI extract and validate KYC, bank statements, income documents, security/property documents with >99% accuracy.
- Manual errors are minimized, enabling seamless customer onboarding and securitization of the properties provided as securities.

2. Smart Underwriting

- AI/ML scoring models analyze beyond CIBIL & Income Data scores—using digital transactions, utility payments, and behavioural data for a more inclusive risk profile. The AI models can predict risk involved in underwriting of mortgages based on the demographics, market data, price data etc.

3. Workflow Automation

- Intelligent workflow engines flag exceptions, automate approvals, and route files in real time.
- Borrowers track progress via dashboards, SMS, and e-signature platforms, reducing uncertainty.

4. Regulatory Compliance

- Platforms embed RBI, AML, SARFAESI & other norms—automating compliance, audit trails, and evidence creation.

5. Security & Scalability

- Cloud-native, blockchain-backed systems secure data, enable elastic scaling, and ensure tamper-proof auditability.

Digital Ecosystem in Action within our Bank

Bank has launched Project Sambav with the tagline “Creating a Digital Bank within Bank” a massive digitalization transformation project. Under this project, Bank is creating digital journeys which will be utilizing the various data repositories for providing seamless experience to both our customers and staff. Mortgage based lending journeys which used to take 4 to 5 weeks for decision will now be completed within a week or two. Manual handling of documents will be reduced thereby reducing instances of mistakes and misplacement leading to reduced workload. Bank has adopted a hybrid workflow model for both digital valuation and digital title search report service as detailed below.

1. Bank has entered into partnership with fintechs providing digital platform to valuers and lawyers for accessing documents and preparation of Valuation and Title Search reports.
2. Branches digitize and upload

borrower property documents onto the Digital Business Platform for sharing to partner platform.

3. Valuers access documents digitally, run AVM checks, visit the site and prepare digital valuation report.
4. Advocates review scanned legal documents, verify ownership history, verify the original documents physically and issue digital TSRs.
5. Final Reports are sent back electronically, integrated into the loan origination system for execution of digital business rules.
6. Exception Handling: If discrepancies arise, only then branch-level or physical intervention triggered.

Strategic Benefits for Banks and Customers: The digital valuation and Title Search Report (TSR) workflow brings significant advantages across the mortgage lending value chain. It dramatically improves speed, reducing mortgage sanction timelines from weeks to just a few days, while driving cost efficiency by eliminating courier dependencies, manual storage, and repeated branch visits. Customers benefit from a simplified experience as they no longer need to resubmit multiple physical document sets. The process enhances transparency through a complete digital audit trail, which strengthens compliance and mitigates fraud risks. Its scalable architecture allows high volumes of valuation and TSR

requests to be processed in parallel, supporting larger business throughput. Importantly, it boosts straight through processing (STP) for secured lending, an area traditionally slowed by documentation-intensive checks, thereby reducing friction and accelerating decisioning. With higher STP adoption, digital mortgage processing volumes are expected to grow substantially, improving both operational efficiency and customer satisfaction. At the same time, digital validations combined with expert oversight ensure robust, risk-managed portfolio growth. Staff productivity also improves, as reduced manual handling frees employees to focus on customer engagement and portfolio quality.

Ultimately, faster decisions, transparency, and fewer errors strengthen customer trust and long-term relationships.

The Road Ahead

As India accelerates land record digitization and legal system modernization, AVMs, digital valuation reports, and machine-generated TSRs will become mainstream. Yet, valuers and advocates remain crucial, ensuring expert oversight and legal validation within the digital ecosystem. India's next decade of mortgage growth will be data-driven, automated, and customer-centric—powered by digital valuation and instant title search.

This collaborative, hybrid model—automation plus human expertise, powered by digital platforms—is shaping the transforming of mortgage lending in India. Digital Valuation and Title Search are no longer optional—they are catalysts for the future of Indian mortgage lending. By embedding fintech automation into every stage of the journey, lenders can deliver speed, transparency, and trust while expanding financial inclusion.



Vikram Singh
Digitization Vertical,
CO, Mumbai

बदल गया है ज़माना

एक पल का रुठना और अगले ही पल मान जाना,
मन में न कोई द्वेष बस प्रेम का राग था अलापना,
दादी-नानी का वो कहानियों से जिंदगी का सबक सिखाना,
सपनों में भले आसमान की उड़ान थी,
पर पसन्द था मिट्टी के घरोंदे बनाना,
बैठकर पापा के कन्धों पर मेले की सैर कर आना,
शिक्षकों और बड़ों की डांट भी होती है कड़वी औषधि
बचपन से यही था हमने जाना,
पर सुना है अब बदल गया है ज़माना।

पर सोचा है कभी
कि बदले हम है और हमने ही बनाया है ये बदला हुआ ज़माना,
भुला दिया है हमने ही अपने बच्चों को संयम का पाठ पढ़ाना,
सब कुछ हो 'अवैलबल' की चाह में भूल गए उन्हें "ना-नहीं" शब्द सुनाना,
पास तो है हम बच्चों के पर छोड़ दिया है उनके साथ समय बिताना,
तकनीकी ज्ञान बहुत लिया उन्होंने,
पर पीछे छूट गया व्यवहारिकता की समझ आना।

सोना भी भट्टी में तपकर ही चमकता है,
चन्दन भी घिसकर ही खुशबू बिखेरता है,

तो थोड़ा तो इन्हें भी तपने दो,
संघर्षों की सीढ़ी ना सही पर,
थोड़े लू के थपेड़े तो इन्हें भी चखने दो,
बेंत का इस्तेमाल नहीं पर कम से कम,
औषधि स्वरूप कड़वी बात तो अध्यापक-गुरुजनों की सुनने दो।

ये तो बच्चे हैं तुम तो बड़े बन जाओ,
सही गलत का फर्क तुम ही समझाओ,
सब परिस्थितियां है अस्थाई,
जीत के साथ-साथ हार को अपनाना भी सिखाओ,
बेशक्रीमती है वो हमें,
इसीलिए उन्हें हीरे सा चमकाओ।



शिल्पा मेहता
भिवानी शाखा
क्षे.का., हिसार



A Brief Analysis of the New Labour Codes

On 21 November 2025, the Government of India announced that four Labour Codes shall be in force across the country:

- Code on Wages, 2019
- Industrial Relations Code, 2020
- Code on Social Security, 2020
- Occupational Safety, Health and Working Conditions (OSHC) Code, 2020.

This reform consolidates and replaces 29 older central labour laws and is meant to simplify compliance, improve worker protection, and modernise workplaces.

The Codes are legally in force, but some practical steps still rely on central/state rules that are being published and phased in. The Ministry has clarified that full on ground implementation depends on States/UTs completing their rules and procedures; many have pre published drafts, but a few are still catching up. During this transition, relevant parts of the old Acts and their Rules shall continue wherever the new Rules are not yet in place.

The new Labour Codes, apply to all sectors, including banks and other financial institutions. They introduce significant changes to wage structures, social security, working conditions, and industrial relations, requiring banks to redesign their HR and payroll processes for compliance. Although the Government's press release indicated reference to a transition period, the implementing notifications do not provide for any transitional period for employers, the workforce, or authorities to transition to the new regime. This means employers must act now to ensure

compliance with the new framework.

Why were the Labour Codes introduced?

India's older labour laws were written over many decades (mostly between the 1930s and 1970s). They created overlapping compliance, different definitions of "wages", multiple registrations, and complex inspections that were hard for both employers and workers to navigate. The four Codes bring these into a unified, modern framework, with clearer definitions, single registrations, and a more digital, transparent approach. The following are the basic changes which the Codes bring:

- Simplify compliance and streamline enforcement (reduce multiplicity of laws, authorities, forms and registers).
- Modernise outdated provisions framed largely in the 1930s-1950s, align the framework with today's economy and the changing nature of work.
- Strengthen worker welfare (universal minimum wages, timely wage payments, expanded social security including gig/platform workers, safer working conditions, and formalisation via mandatory appointment letters).
- Promote ease of doing business through digitisation and a single registration/licence/return regime under the new Codes.
- Uniform definitions (e.g., "wages") to remove inconsistency and reduce disputes; technology-enabled, inspector-cum-facilitator enforcement to improve

transparency and accountability.

- Expanded social security coverage, including formal recognition of gig and platform workers, and a national framework for EPF/ESI portability and inclusion.
- Formalisation of employment via mandatory appointment letters, timely wages, and nationwide floor/minimum wages.
- In the year 2024, the government developed the Unified Shram Suvidha portal for Single registration, Single return, Inspector-cum-facilitator framework, Social security databases and portability. It has been envisaged as a single point of contact between employer and enforcement agencies bringing in transparency in their day-to-day interactions.

A quick overview of each Code

Code on Wages, 2019

This Code sets out one clear way to calculate wages, ensure minimum wages and timely payment for everyone, and make equal pay rules gender neutral.

What's new:

- "Wages" now follow a uniform definition across the Codes: basic pay + dearness allowance + retaining allowance; most other allowances are excluded. If allowances go above 50% of total pay, the extra portion is treated as wages (which affects PF, gratuity, bonus, overtime calculations).

- Minimum wages apply to all employees, not only to “scheduled employments” like earlier. The Centre can also notify a national floor wage that states must respect.
- Timely wage payment rules apply across the board; electronic wage slips/transfer are formally recognised in many summaries and guidance notes.

Industrial Relations (IR) Code, 2020

This Code makes union recognition, standing orders, and dispute resolution more structured and predictable, and bring in fixed term employment clearly.

What’s new:

- A single “negotiating union” or council can be formally recognised to bargain with the employer (instead of many unions pulling in different directions).
- Standing orders (the written rules of conduct and discipline for workers) apply to establishments with 300 or more workers; model standing orders can be adopted to speed things up.
- Strikes/lockouts require advance notice and follow stricter timelines (to avoid sudden stoppages).
- In December 2025, the Government issued a “Removal of Difficulties” Order to avoid a tribunal vacuum during transition; existing Labour Courts/Industrial Tribunals shall continue until new tribunals under the Code are constituted.

Code on Social Security, 2020

This Code expands social security (Provident Fund, Employees’ State Insurance, gratuity, maternity, etc.) to more workers, including fixed term, gig and platform workers, and makes coverage smoother.

What’s new:

- ESI coverage is planned pan India, with schemes for more categories; employers should expect wider coverage once rules and thresholds are finalised.
- Fixed term employees (FTEs) get parity of benefits with permanent employees; gratuity after one year of service is envisaged under the Code.
- The Code introduces definitions for gig/platform workers and empowers the creation of schemes for them under social security. While gig and platform worker provisions have limited direct applicability to banks, they become relevant in outsourced functions such as recovery, sales support, or fintech partnerships. Gig work, platform work, and aggregators have been defined for the first time.

Occupational Safety, Health and Working Conditions Code, 2020

This Code sets out health, safety, working hours and welfare under one umbrella; shift to inspector cum facilitators and digital processes; require registration of establishments and better on site standards.

What’s new:

- Applies to places where industry, trade, or business is carried on with 10+ workers (and to mines, docks, and other specified sectors). Banks fall under the category of “commercial establishments” with obligations on safety, welfare and working conditions.
- Annual health check ups for workers above 40 years, appointment letters, and various welfare provisions are emphasised.
- Contract labour in core activities is restricted, with exceptions (e.g., time bound surge in volume). Licensing and compliance become more structured under the new regime.

How is this different from the earlier labour laws?

- One definition of “wages” instead of multiple definitions in different laws. This means payrolls and benefit calculations are clearer and more consistent. Under older laws, “wages” meant different things in different Acts; now it’s uniform.
- Minimum wages for everyone (not just “scheduled” jobs), and national floor wage to be notified—this raises the baseline for lower paid roles and reduces disputes about who qualifies.
- Fixed Term Employees get benefits like permanent employees, and gratuity after one year—this was not available in the same way under the old Payment of Gratuity Act, 1972.



- One portal (Shram Suvidha), single registration and single returns replacing multiple filings and fragmented inspections. Earlier, filings were scattered across EPFO/ESIC and sectoral offices; now the direction is unified, digital, and risk based inspections.
- Union recognition, standing orders threshold (300), and strike/lockout notice rules organise industrial relations better; the older system had overlapping processes and sudden stoppages.
- Health, safety and welfare norms are consolidated under one Code, instead of many sector acts (Factories, Plantations, Mines, etc.). For service sectors like banking, this means a clearer list of what must be provided and how to register/comply.

While the Codes are in force, the full practical switch depends on Centre/States issuing rules and schemes.

What do the Labour Codes mean for Public Sector Banks (PSBs)?

“Commercial Establishment” means any premises wherein any trade, business or profession or any work in connection with, or incidental or ancillary thereto is carried on and includes a society registered under the Societies Registration Act, 1860, and charitable or other trust, whether registered or not, which carries on any business, trade or profession or work in connection with, or incidental or ancillary thereto,.....premises in which business of banking, insurance,

stocks and shares, brokerage or produce exchange is carried on. Even though banking is not a factory, PSBs are “commercial establishments” under the OSHWC framework and the Codes’ general obligations do apply. Here’s what that looks like in day to day terms:

(i) Wages and payroll in PSBs

- Uniform wage definition will affect PF, gratuity, bonus, and overtime calculations, which may need re balancing to maintain compliance when detailed rules take effect.
- Minimum wage coverage is universal; while award staff in PSBs already have negotiated pay scales, support staff (especially outsourced roles) must meet minimum wage and timely payment norms.

(ii) Award staff, unions, and standing orders

- Award staff remain within the “worker” concept for collective bargaining. The IR Code formalises recognition of a negotiating union/council, which could reduce multi union friction in settlements or branch level issues.
- If a PSB has 300 or more workers in an establishment, standing orders apply, and this helps standardise rules around conduct, leave, discipline, and proceedings.
- Grievance Redressal Committees (GRCs) are required where worker counts meet the Code’s

thresholds, with women’s representation proportionate to women workers. This strengthens internal resolution before disputes escalate.

(iii) Social security: PF, ESI, gratuity, maternity

- Social Security Code consolidates PF/ESI/gratuity/maternity and widens coverage. For PSBs, the biggest watch outs are:
 - o FTEs receiving parity of benefits and gratuity after one year.
 - o ESI schemes expanding; once the Centre/States notify thresholds and categories, PSBs must ensure vendors (housekeeping, security, IT support, call centres) are enrolling eligible staff. Principal employer liability can arise if contractors’ default.

(iv) Health, safety, working hours, and welfare

- Under OSHWC, PSBs must ensure safe and healthy working conditions, appointment letters, and annual health check ups for employees above 40 (when operationalised by rules). Branches and back offices will need better documentation and audits, especially where third party staff are used.
- Contract labour in core activities is restricted. PSBs should classify outsourced tasks carefully (security, housekeeping, IT support are typically non core;

core banking operations are sensitive) and structure contracts to avoid “sham” outsourcing.

- The Codes move inspectors toward an “inspector cum facilitator” approach and enable more digital compliance—useful for PSBs that operate across many states.

Parallel Applicability of State Shops & Establishments Acts

State-specific Shops and Establishments Acts are not subsumed under the new Labour Codes, which means the new framework will operate in parallel with these Acts. The Shops and Establishments Acts regulate working conditions, wages, and leave for employees in shops, commercial establishments, restaurants, and entertainment venues.

The Maharashtra Shops and Establishments Act, 2017 applies to Public Sector Banks (PSBs) in Maharashtra, as banking is a commercial establishment covered under the Act, and PSBs are generally not exempt, unlike the RBI or SBI. The Act defines “establishment” to include businesses of banking, insurance, and trade, thus covering PSBs. It is an employee welfare law for commercial entities and regulates working hours, leaves, and conditions, complementing other labour laws.

Unless a specific notification exempts them, banks in Maharashtra must comply with the Maharashtra Shops and Establishments Act for their employees' working conditions.

Final word

The Labour Codes are a once in a generation clean up of India’s labour law landscape. For PSBs, that doesn’t change the core business of banking, but that changed the ground rules for pay, benefits, safety, outsourcing, and industrial relations. The Labour Codes mark a shift towards formalisation, standardisation and expanded social security coverage across sectors, including banking. For banks, the primary impact lies in wage restructuring, enhanced statutory benefits, and strengthened compliance obligations for contractual and support staff. While collective bargaining mechanisms for award staff remain intact, banks must proactively reassess HR policies, vendor arrangements and payroll systems to mitigate legal and operational risks. Early compliance readiness will be critical in navigating the evolving regulatory landscape under the new labour law regime.

The shift is meant to reduce ambiguity, protect workers, and make compliance easier in the long run. As on November 21, 2025, only Gujarat and Arunachal Pradesh have promulgated final rules under each of the Codes. The practical journey will be phased, as Centre and States keep issuing rules and schemes.

Aditya Mukherjee
SAMV-LSD
CO, Mumbai



त्रिकाल

सुबह, दोपहर, समय शाम का
धीरे धीरे चलता है
जैसे सूरज उगता, बढ़ता
धीरे धीरे ढलता है

बचपन, यौवन और बूढ़ापा
तीन दशाएं आती हैं
मानवता की राह हमेशा
धर्म की नीति सिखाती है

सेकंड, मिनट और घंटे की सूई
अपनी गति से चलती हैं
न रुकती है न थकती है
सदा निरंतर घूमती है

ब्रह्मा, विष्णु और महेश
तीनों लोक संभालते हैं
जनक, पालक और संहारक
त्रिमूर्ति कहलाते हैं

भूत, वर्तमान और भविष्य
त्रिकाल कहलाते हैं
पिछले से बेहतर कर आगे
परिणाम उत्तम फिर आते हैं

ऊंच, नीच और मध्य की भाषा
अज्ञानी ही जानते हैं
कर्म मुताबिक कद बनता है
विद्वान ऐसा ही मानते हैं

कल, आज और कल की बारी
हर दिन को मिल पाती है
कल की बारी आज में बदली
फिर कल में मिल जाती है

प्रारंभ, मध्यांतर और समापन
घटना के तीन पड़ाव तो है
लेकिन गौर से देखा जाए
आपस में एक जुड़ाव भी है

जय कुमार वर्मा
क्षे.का., बठिंडा





Union Collection Management Solution

In the modern banking era, the strength of a financial institution is measured not just by the loans it disburses, but by the efficiency with which it manages its assets. Union Bank of India has marked a revolutionary milestone in this journey with the launch of the Union Collection Management Solution (UCMS), also known as Union Digital Collection. UCMS represents a fundamental shift from traditional, manual recovery to a sophisticated, data-driven framework. By integrating Artificial Intelligence and Machine Learning, the Bank has transitioned from a reactive stance to a predictive one, ensuring that financial stress is identified and addressed long before it impacts the balance sheet. This solution is not merely a technical upgrade; it is the Bank's new official blueprint for discipline, transparency, and sustainable asset quality.

The Philosophy: From Reactive to Predictive

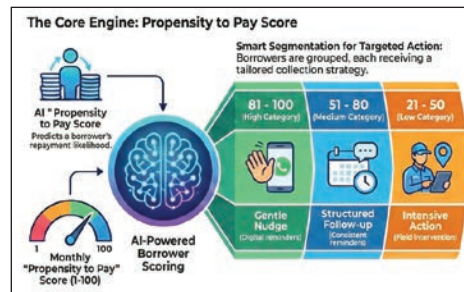
Historically, collection efforts were largely manual and uniform. Bankers often treated every overdue account with the same level of intensity, which frequently led to delayed recognition of actual financial stress and inefficient use of human resources.

The philosophy behind UCMS recognizes a simple but powerful reality: every borrower is different. To address this, the Bank has institutionalized Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning (ML)-based analytics. This technology allows the Bank to analyse

complex data patterns; including repayment history, transaction behaviour, demographic info, and bureau data, to predict future repayment behaviour before an account even reaches a critical stage. Think of the old manual system as a general health check-up that only happens once a patient is already feeling ill. UCMS, by contrast, acts as a continuous wearable health monitor that detects the slightest irregular heartbeat (financial stress) long before a "heart attack" (NPA status) occurs.

The Core Engine: Propensity to Pay Score

The "brain" of the UCMS framework is the Propensity to Pay Score. On a scale of 1 to 100, the system assigns a monthly score to each borrower, reflecting their likelihood of making timely repayments. This score is not static; it is updated every month



based on a holistic analysis of internal and external parameters.

Based on these scores, the Bank segments borrowers into three distinct categories, each requiring a different engagement strategy:

- **High Propensity (Score 81 to 100):** These borrowers demonstrate strong repayment

discipline and minimal signs of stress. For this group, the Bank adopts a "gentle nudge" approach, primarily through non-intrusive digital communication such as automated SMS or WhatsApp reminders.

- **Medium Propensity (Score 51 to 80):** These borrowers display irregular repayment patterns or continuing SMA (Special Mention Account) trends. They require a more structured approach, involving timely reminders and consistent follow-ups to prevent further slippage.
- **Low Propensity (Score 21 to 50):** Borrowers in this category exhibit sustained stress or behaviour that suggests they are nearing a default. This group is the primary focus for intensive follow-ups, including the deployment of field-level intervention.

By categorizing borrowers this way, the Bank ensures that its most intensive resources, its human staff, are not wasted on accounts that can be handled digitally, but are instead focused where they can make the most difference.

Accessing the Solution

To ensure security and ease of use, UCMS is accessible through the Bank's internal network using a link on the intranet or via UBINet, requiring a secure login with an Employee ID, domain password, and an OTP sent to the user's registered mobile number.

Dashboards and Reports: Real-Time Oversight

UCMS isn't just a collection tool; it's a powerful command centre for management. The system generates comprehensive dashboards and reports that provide a 360-degree view of the Bank's asset health.

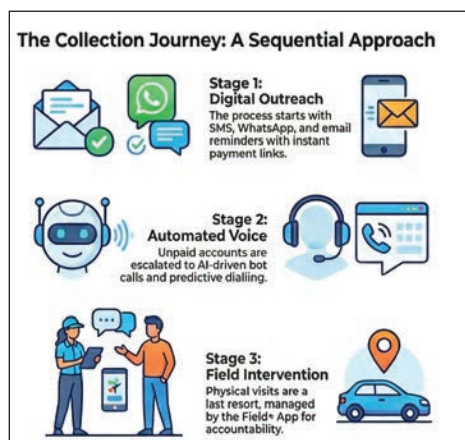
- **Multi-Level Visibility:** Reports are available at the Branch, Region, Zone, and Central Office levels, ensuring that every layer of management has the data they need.
- **Stress Analysis:** Dashboards offer a consolidated view of stress levels, broken down by sector, region, and propensity-wise segmentation.
- **Operational Performance:** Management can track the performance of field staff, collection agencies, and the Digital Contact Centre in real-time.
- **Usage and Action:** These reports are used to identify potential trouble spots early, allowing for timely corrective action and data-backed decision-making.

The Sequential Collection Journey

UCMS does not just tell the Bank whom to contact; it defines exactly how and when that contact should happen through a sequential journey:

1. **Stage 1: Digital Outreach:** The journey begins with digital communication, including SMS, WhatsApp, and Email reminders. These include BBPS-enabled payment links, allowing the borrower to settle their dues instantly.

2. **Stage 2: Automated Voice:** If the account remains unpaid, the system escalates to automated calling. This includes AI-driven bot calls at specific intervals (DPD+3, +5, and +7) and predictive calling through the Digital Contact Centre.
3. **Stage 3: Field Intervention:** Accounts will be assigned to Collection Executives or Feet-on-Street (FOS) staff for physical visits only when digital and automated voice measures are exhausted. This ensures that when a staff member knocks on a door, the visit is fully justified and effective.



Field+ Mobile App: Ensuring Field Accountability

To manage the final stage of the collection journey, UCMS integrates with the Field+ Mobile App, which is mandatory for all field-level staff.

- **Account Allocation:** Staff can only access accounts specifically allocated to them by the system.
- **Smart Planning:** The app generates route maps to help staff plan their day efficiently, with a cap of 15 visits per day.

- **Secure Communication:** Staff contact borrowers through masked calling, protecting privacy.
- **Mandatory Compliance:** A visit is not recognized as valid unless it includes automatic geo-tagging and a mandatory live photo upload.

Embracing a New Era of Asset Quality

The implementation of the Union Collection Management Solution (UCMS) represents a defining shift in the Bank's operational culture; moving from a manual, reactive past to a digital, proactive future. By institutionalizing this framework as the official standard for all collection efforts, the Bank has replaced uniform, broad-stroke strategies with precision-based, AI-driven insights.

Think of UCMS as the Bank's digital immune system: it does not simply wait for a "disease" (NPA) to manifest; it continuously monitors for the earliest signs of "stress" to ensure the financial health of the institution remains robust. Through the sophisticated use of the Propensity to Pay Score and a disciplined, sequential collection journey, the Bank can now engage borrowers with the right level of intensity at exactly the right moment. UCMS is more than just technology; it is our commitment to discipline, consistency, and professional excellence in securing the Bank's future.



Nitin Gosavi
UBKC, Bengaluru



Business First, Compliance Always

The Indispensable Equilibrium for Indian Public Sector Banks

The principle, "Business First, Compliance Always," succinctly captures the core challenge and ultimate goal for modern finance. This philosophy is more than an internal directive; it is the defining strategy for the Public Sector Banks (PSBs) of India. Operating at the confluence of national economic development and stringent regulatory oversight, PSBs must master the art of aggressive, customer-focused business growth while ensuring that every transaction, product, and process adheres strictly to the law. This equilibrium is not a trade-off, but a synergistic requirement for building resilient, profitable, and trustworthy institutions that are capable of driving India's next phase of economic expansion.

I. The 'Business First' Imperative: Fuelling India's Economy

The term "Business First" for PSBs signifies a strategic shift from passive, public-service banking to a dynamic, market-driven approach. It is about aggressively pursuing profitable avenues, innovating in product delivery, and maximizing shareholder value—all within the context of their core developmental mandate.

A. Strategic Credit Growth and Economic Development

For PSBs, business first translates

into the strategic expansion of their lending portfolio, focusing on key sectors that drive national growth. This includes enhancing credit off-take in core areas such as infrastructure, manufacturing, and housing, which are vital for job creation and capital formation. Simultaneously, PSBs must efficiently deliver loans to the priority sectors (agriculture, MSMEs, education), meeting regulatory targets while mitigating risk, thus enabling economic activity across all strata of society. This commitment requires proactive identification of commercially viable projects and rapid capital deployment.

B. Customer-Centricity and Digital Innovation

In a highly competitive market dominated by private banks and fintechs, PSBs must prioritize the customer experience to retain market share. "Business First" demands rapid digital transformation, focusing on seamless onboarding, intuitive mobile applications, and personalized service offerings. This includes adopting technologies like Video-KYC (V-KYC) and AI-driven chatbots to make banking instantaneous and user-friendly, thereby ensuring that customer convenience is the driving force

behind operational changes.

C. Enhancing Profitability and Shareholder Value

While PSBs serve a social mandate, profitability remains critical for long-term sustainability. The business focus must include enhancing Non-Interest Income (NII) through fee-based services, efficient treasury operations, and cost optimization across the board. A strong focus on business efficiency ensures that the banks can generate the internal capital necessary to provision for risks, invest in technology, and ultimately increase their valuation, which is a key measure of responsible governance.

II. 'Compliance Always': The Bedrock of Trust and Sustainability

The phrase "Compliance Always" serves as the foundational safeguard, ensuring that the drive for profit does not compromise integrity, stability, or public trust. For PSBs, compliance is the risk management tool that prevents systemic failure and preserves the sanctity of public funds.

A. Protecting Public Trust and Systemic Stability

PSBs hold the savings of millions of citizens; hence, their stability is paramount to the entire

financial system. Compliance Always means rigorously adhering to the Reserve Bank of India's (RBI) directives on liquidity management, capital adequacy (Basel III norms), and corporate governance. Strict adherence to these rules prevents reckless lending, averts asset-liability mismatches, and guarantees that the bank can withstand any economic shock, thereby protecting depositors' interests above all else.

B. Mitigating Financial Crime (AML and KYC)

One of the most critical aspects of compliance is the prevention of financial crime, including Anti-Money Laundering (AML) and adherence to Know Your Customer (KYC) norms. Every lending and deposit transaction must be meticulously screened and monitored to prevent the banking channel from being misused for illegal activities. The sheer scale and volume of transactions in PSBs necessitate the use of sophisticated technology to ensure that the relentless push for new customer acquisition (business) is not undermined by lapses in diligence (compliance), which could lead to severe regulatory penalties and reputational damage.

C. Ensuring Ethical Sales Practices and Fair Treatment

Compliance extends to ethical market conduct. Given the pressure to meet sales targets,

PSBs must enforce strict norms against mis-selling, particularly in wealth management and insurance products. Compliance Always ensures that staff are properly trained to sell only suitable products, fully disclose terms & conditions, and treat all customers fairly. This focus on ethical compliance is crucial for fostering long-term customer relationships, which is a far more sustainable business asset than short-term gains from unsuitable sales.

III. Achieving the Equilibrium: The Synergy of Business and Compliance

The true power of the "Business First, Compliance Always" mantra lies in recognizing their interdependence. Compliance, when implemented strategically, is a business accelerator, not a brake.

Strategy	Business Focus (The Accelerator)	Compliance Focus (The Safeguard)	Synergy (Sustainable Growth)
Lending	Maximizing loan book size and disbursement speed.	Rigorous adherence to credit appraisal, collateral valuation, and asset classification norms.	Higher Quality Asset Book: Faster, safer growth with lower NPAs and less provisioning cost.
Digital	Deploying new technologies and expanding digital transaction volume.	Strict implementation of data privacy (GDPR/Data Protection Bill), cybersecurity, and fraud monitoring protocols.	Trusted Innovation: Customers confidently adopt new products, leading to higher transaction volumes and lower fraud losses.

HR/ Culture	Incentivizing high performance and rewarding target achievement.	Mandating training on ethics, AML, and regulatory updates; integrating compliance scores into appraisals.	Ethical Performance: A sales culture that achieves targets responsibly and preserves the bank's long-term reputation.
-------------	--	---	---

A. Risk Management Integration into the Business Engine

A key differentiator for a successful PSB is the complete integration of compliance within the overarching Enterprise-wide Risk Management (ERM) framework. Compliance should not be treated as an isolated checkpoint but as a built-in sensor that guides business decisions in real-time. This unified view ensures that a credit decision (a business move) is not solely evaluated on potential return but is also immediately assessed for associated capital adequacy implications and procedural vulnerabilities. By making risk parameters an intrinsic part of the business workflow, the PSB guarantees that growth is not just achieved, but is achieved on a foundation of measured, acceptable risk.

B. The Principle of Proportionality in Risk Appetite

To keep the "Business First" momentum going, PSBs must clearly define their risk appetite and ensure it is proportional to their strategic objectives and capital buffers. The board and senior management must



articulate the permissible levels of risk for various business lines—e.g., a higher risk tolerance for certain MSME/start-up lending (developmental business) but near-zero tolerance for regulatory breaches like AML (compliance). This proportionality empowers credit officers to make timely, confident business decisions knowing the established compliance guardrails, thereby speeding up the cycle of credit delivery.

C. Dynamic Stress Testing and Scenario Analysis

While regulatory compliance demands periodic stress testing, a "Business First" approach demands these tests to become dynamic tools for strategic planning. PSBs should use scenario analysis to model how various business strategies—such as a large-scale push into retail mortgages—would affect the bank's capital ratios and liquidity under various stress conditions. This proactive use of compliance tools allows the bank to adjust its business plan before execution, ensuring that the pursuit of new business does not inherently breach future capital or liquidity requirements.

IV. Human Capital, Governance, and Futureproofing

The success of the mantra rests entirely on the culture, capabilities, and strategic alignment with national goals.

Re-engineering the Performance Management System (PMS): To truly embed "Compliance Always," the PMS must be radically re-engineered. Performance evaluations must incorporate a Compliance Score based on timely reporting, accuracy of documentation, and zero instances of mis-selling or ethical customer complaints. By making a significant portion of the variable pay or promotion criteria dependent on qualitative compliance metrics, the bank ensures that staff understand that the only path to career growth is through ethical, compliant business generation.

Policy and Governance Alignment with National Goals: PSBs must integrate policy mandates, like Priority Sector Lending (PSL), into their business strategy. Instead of treating PSL as a compliance burden, a "Business First" approach redefines it as a vast, untapped market opportunity. Simultaneously, governance reforms, such as enhanced board oversight, ensure that all new product proposals (business) are accompanied by a comprehensive compliance risk assessment and mitigation plan (compliance), with the board acting as the ultimate custodian of the equilibrium.

Futureproofing through Data Governance: In the age of digital banking, data is both the greatest

business asset and the largest compliance liability. PSBs must invest in data governance frameworks that establish clear ownership, ensure data lineage, and enforce quality checks. This ensures data is a trusted asset for both targeted marketing and regulatory reporting, effectively balancing data utility (Business First) with privacy compliance (Compliance Always).

For the Indian Public Sector Banks, the philosophy of "Business First, Compliance Always" is the definitive roadmap for the future. It demands an organization that is ambitious enough to compete and grow exponentially yet disciplined enough to operate within the highest standards of governance and regulation. PSBs must embrace this synergy: use the competitive focus of "Business First" to innovate and expand and rely on the rigor of "Compliance Always" to ensure that growth is stable, ethical, and enduring. In doing so, these institutions not only secure their own future but solidify their critical role as trustworthy pillars of the nation's economic landscape.



Aditya Prasad Das
R.O., Warangal

DPDP Act, 2023

Regulatory Compliance Framework for the Banking Sector

The enactment of the Digital Personal Data Protection (DPDP) Act, 2023 marks a watershed moment in India's data protection and privacy landscape. As India's first comprehensive, standalone law governing the processing of digital personal data, the DPDP Act seeks to balance individual privacy rights with the legitimate needs of businesses and the State. For the banking sector, which is responsible for processing vast volumes of sensitive personal and financial data, the Act introduces a paradigm shift in how data governance, risk management, and regulatory compliance must be approached. Enacted nearly 6 years after the Supreme Court's 2017 *KS Putta Swamy* judgment recognizing privacy as a fundamental right under Article 21, the Act is inspired by global frameworks like the EU's General Data Protection Regulations (GDPR) to outline privacy and data protection obligations.

The Act applies to digital personal data processed within India, whether collected digitally or digitized later, and to data processing outside India if done for offering goods or services in India. It does not apply to personal data used for personal purposes or data made public by the Data Principal or under a legal obligation. Data Principals (individuals whose personal data is being processed) have the right to access information, request correction or deletion, seek grievance redressal, and nominate a representative in case of death or incapacity. They must avoid false complaints or information, with

violations punishable by a fine up to Rs 10,000.

Banks have traditionally operated under a stringent regulatory environment, guided by the Reserve Bank of India (RBI), along with obligations under the Information Technology Act, 2000, RBI cybersecurity guidelines, outsourcing norms, and KYC/AML regulations. The DPDP Act does not replace these requirements but adds a horizontal, principle-based data protection regime that cuts across products, channels, and functions. Consequently, compliance with the DPDP Act must be embedded into the bank's enterprise-wide governance, risk, and compliance (GRC) framework.

For the banking sector, compliance with the DPDP Act is not merely an incremental legal requirement but a fundamental shift in how customer data is governed, protected, and used. Banks are among the largest processors of personal data, handling sensitive financial, biometric, and behavioural information across physical and digital channels. In an environment already governed by stringent RBI Master Directions, the DPDP Act introduces a rights-based, accountability-driven framework that cuts across technology, operations, compliance, and business strategy

This article examines the regulatory compliance framework under the DPDP Act, 2023, with a specific focus on the banking sector, outlining key obligations, governance expectations, operational challenges, and practical implementation strategies.

Applicability of the DPDP Act to Banks

The DPDP Act applies to:

- Processing of digital personal data within India, and
- Processing of digital personal data outside India if it relates to offering goods or services to individuals in India.

Banks clearly fall within the definition of "Data Fiduciaries" (entity or organization that collects, stores, processes, or uses personal data of an individual), as they determine the purpose and means of processing personal data of customers, employees, vendors, and other stakeholders. In certain contexts—such as large-scale processing of sensitive financial data—banks may be notified as Significant Data Fiduciaries (SDFs), triggering enhanced compliance obligations.

Unlike sector-specific regulations, the DPDP Act adopts a principles-based approach, focusing on lawful processing, transparency, accountability, and protection of individual rights. This requires banks to re-evaluate existing processes through a data protection lens, rather than treating privacy as a purely IT or cybersecurity issue.

Core Principles Governing Data Processing in Banks

The DPDP Act lays down foundational principles that directly influence banking operations:

(a) Lawful Purpose and Consent

Personal data must be processed only for lawful purposes with the consent of the Data Principal, unless processing falls under



“legitimate uses” permitted by the Act (such as compliance with law, prevention of fraud, or credit scoring under regulatory mandates).

For banks, this requires a clear and transparent articulation of the purposes for which customer data is collected during both accounts opening and digital onboarding journeys. It also necessitates a thorough review of consent mechanisms across all digital touchpoints—including mobile banking applications, internet banking platforms, CRM systems, and marketing tools—to ensure that customers are fully informed and that consent is obtained, recorded, and managed in a compliant manner.

(b) Purpose Limitation and Data Minimisation

Banks must ensure that the data they collect is used strictly for the specific purposes communicated to customers and is limited only to what is necessary for fulfilling those purposes.

This principle challenges long-standing practices of excessive data collection during KYC, cross-selling, and analytics initiatives.

(C) Accuracy and Storage Limitation

Banks are required to ensure data accuracy and retain personal data only as long as necessary, unless retention is mandated by law (e.g., under RBI, tax, or AML regulations).

Key Compliance Obligations for Banks

(1) Notice and Transparency Requirements

Banks are required to provide clear and easily understandable

notices that explain what types of personal data are collected, the purpose for which the data is processed, the rights available to Data Principals, and the grievance redressal mechanisms available to them. These transparency obligations impact customer facing documents, digital onboarding journeys, mobile and internet banking interfaces, and even internal HR communications, all of which must be updated to ensure clarity and compliance.

(2) Consent Management Framework

Banks must ensure that customer consent is free, specific, informed, unconditional, unambiguous, and that customers can withdraw this consent just as easily as they provide it. To support this, banks need a robust, enterprise wide consent management framework integrated across mobile and internet banking platforms, digital lending applications, and CRM systems, with proper mechanisms for consent capture, tracking, storage, and revocation.

(3) Rights of Data Principals

Customers are granted key rights under the DPDP Act, including the right to access information about data processing, the right to request correction or erasure of their data, and the right to register grievances. Banks must create and operationalize structured workflows, defined service level timelines, and clear escalation paths to ensure these rights are addressed promptly and transparently across all relevant systems.

(4) Data Security Safeguards & Grievance Redressal

Banks are required to implement strong security safeguards to prevent personal data breaches and must align DPDP requirements with existing cybersecurity frameworks such as ISMS, SOC monitoring, and incident response protocols. In addition, DPDP related grievances must be treated as a distinct regulatory category, monitored closely, and reported to senior management to ensure timely resolution and regulatory compliance.

(5) Breach Notification and Reporting

In the event of a personal data breach, banks must notify both the Data Protection Board of India and the affected Data Principals wherever applicable. To comply effectively, banks must harmonize DPDP mandated reporting with existing RBI cyber incident reporting guidelines and CERT In requirements, ensuring consistency, accuracy, and timely communication without regulatory overlap.

Enhanced Obligations for Significant Data Fiduciary Banks

Banks notified as Significant Data Fiduciaries must comply with additional obligations, including:

Banks must appoint a Data Protection Officer (DPO) who is based in India, acts as the primary point of contact for grievance redressal, and oversees compliance with the DPDP Act; this position must be distinct from existing CISO or compliance roles, though close coordination is essential. Banks are also required to conduct Data Protection Impact Assessments (DPIAs) for high risk processing activities such as AI driven credit scoring, large scale customer profiling, and the use of alternative

data sources. In addition, independent audits of DPDP compliance must be carried out regularly, with findings integrated into the bank's internal audit and risk management processes to ensure continuous oversight and accountability.

Third-Party and Outsourcing Risks

Banks rely extensively on third parties for: Core banking technology, Cloud services, Fintech partnerships, Business process outsourcing.

Under the DPDP Act, banks remain accountable for personal data processed by third parties, requiring revisions to outsourcing agreements, inclusion of DPDP aligned data protection clauses, and periodic vendor risk assessments and audits.

This aligns closely with RBI's outsourcing and third-party risk management guidelines but introduces an explicit privacy accountability dimension. Third-party compliance is one of the most critical and high-risk areas under the DPDP regime.

Cross-Border Data Transfers

The DPDP Act allows cross-border data transfers to countries notified by the Central Government. While this provides flexibility, banks must: Continuously monitor notified jurisdictions, map cross-border data flows and ensure contractual & technical safeguards.

This is particularly relevant for banks using global cloud infrastructure or overseas processing centres.

Penalties and Enforcement Risks

Non-compliance with the DPDP Act can attract significant financial penalties, potentially running into hundreds of crores of rupees, depending on the nature and gravity of the violation.

For banks, the risk is not limited to

monetary penalties but extends to: reputational damage, loss of customer trust and increased regulatory scrutiny by RBI.

This reinforces the need to treat DPDP compliance as a board-level governance issue, not merely a legal or IT concern. DPDP compliance must be treated as a strategic risk management priority.

Integrating DPDP Compliance into Banking Governance

(A) Board and Senior Management

Oversight: A central compliance imperative under the DPDP Act is demonstrable accountability. Banks must ensure that data protection governance is exercised at the highest level, consistent with RBI's emphasis on board responsibility and "tone at the top."

Boards must approve data protection policies, review compliance dashboards and ensure adequate resourcing for DPDP implementation.

(B) Alignment with Existing Regulatory Frameworks

DPDP compliance should be integrated with RBI compliance programs, operational risk management, internal audit and assurance frameworks.

(C) Training and Cultural Change

Employees at all levels must be trained to understand data protection principles, their individual responsibilities, and consequences of non-compliance

This is critical to embedding a culture of data responsibility across the Bank.

Implementation Roadmap for Banks

A structured approach to DPDP compliance may include:

1. Enterprise-wide data mapping and classification
2. Gap analysis against DPDP requirements
3. Policy and process redesign
4. Technology enablement (consent management, data discovery tools)
5. Vendor compliance alignment
6. Continuous monitoring and improvement

The Digital Personal Data Protection Act, 2023 introduces a transformative compliance regime for banks—one that places customer rights, accountability, and transparency at its core. For the banking sector, the key imperative lies not in treating DPDP as a standalone privacy law, but in embedding data protection principles into existing RBI-aligned governance, risk, and compliance frameworks. For the banking sector, it is both a compliance challenge and an opportunity—a challenge due to the scale and complexity of data processing, and an opportunity to strengthen trust, governance, and operational resilience.

Banks that proactively operationalise DPDP compliance, strengthen governance oversight, and integrate privacy into business decision-making will be better positioned to manage regulatory risk, enhance customer trust, and sustain resilience in an increasingly data-driven financial ecosystem.

Effective DPDP compliance is not merely about avoiding penalties—it is about responsible banking in a data-driven economy.



Ravi Mishra
R.O., Azamgarh (N)

शांत, सुकूनदायक और सुरम्य

माथेरान





माथेरान, मुंबई और पुणे शहर के समीप स्थित एक छोटा सा अत्यंत सुंदर हिल स्टेशन है एवं एशिया महाद्वीप का एकमात्र हिल स्टेशन है जहां वाहन प्रतिबंधित हैं।

माथेरान के समीपस्थ स्टेशन निरल तक मुंबई लोकल ट्रेन उपलब्ध है, उससे आगे, अमन लॉज तक टैक्सी ले सकते हैं। अमन लॉज से आगे की यात्रा हेतु टिकिट की आवश्यकता होगी।

पैदल, टॉय ट्रेन की नैरो गैज के समांतर चलते हुए, माथेरान के बाज़ार को पार करते हुए करीब 40 मिनट के कदमताल के पश्चात उस होटल तक पहुँच जाते हैं, जहां यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का होलिडे होम भी है। राह में छोटे बड़े चाय नाश्ते के दुकान उपलब्ध हैं, और आपके साथ-साथ चलती है वहाँ की वानर सेना जो पथिक के हाथ से भोजन चुराने में उस्ताद हैं।

छोटे बड़े 38 व्यू पॉइंट्स से सजा यह हिल स्टेशन, झरनों, वादियों, झील, जल प्रपात, पेड़-पौधे, फूलों, के साथ-साथ ग्रामीण जीवन का भी दर्शन करवाता है। वन ट्री हिल, लिटल चौक, हनीमून पॉइंट, शरलोट लेक जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं।

हिल स्टेशन तो सभी सुंदर होते हैं, तो माथेरान ही क्यों जाएँ? अगर एक सुगम हिल स्टेशन जाने की इच्छा रखते हैं तो माथेरान अवश्य जाएँ। शोर से दूर, बचपन के सुकून को फिर से जीना हो तो माथेरान जाएँ। प्रौद्योगिकी से सुदूर, नो नेटवर्क ज़ोन को फिर से जीना हो तो माथेरान जाएँ। एक ऐसा ग्रामीण परिवेश, जहां सूर्य की रोशनी के साथ दिन और चाँद सितारों से रात रोशन हो, सुबह अलार्म से नहीं चिड़ियों की चहचहाहट से नींद खुले और द्वार पर वानर सेना मिले, तो माथेरान जाएँ। यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित टॉय ट्रेन का आनंद लेना हो तो माथेरान जाएँ।



शिल्पा शर्मा सरकार
जोखिम प्रबंधन विभाग,
कै.का., मुंबई





The Magic Wand in Our Pockets

Understanding the World of Artificial Intelligence

Imagine holding a magic wand-- one that could solve your homework problems, narrate bedtime stories, guide a lost traveller, or even help a doctor save a life. In today's world, this magic wand does not come from fairy tales; it comes from science. Made of silicon, data, and intelligent code, it is called Artificial Intelligence (AI). Quietly and steadily, AI has entered our daily lives, shaping how we learn, work, and dream. From the snow-covered valleys of Kashmir to the sunlit shores of Kanyakumari, AI is becoming an invisible companion for every Indian.

AI is the silent "brain" inside smartphones that suggests songs, predicts traffic jams in crowded cities like Mumbai, translates languages, and helps businesses make smarter decisions.

Though it works silently, its impact is loud and transformative. To understand AI better, we can think of it as a very fast learner. While humans take years to master reading, writing, and reasoning, AI systems can analyse millions of books, images, and patterns within seconds. This ability to learn, adapt, and improve is what makes AI powerful.

Today, the world is standing at the edge of something even greater-

Super Intelligence. This refers to machines that may one day surpass human intelligence in almost every field- science, medicine, creativity, and decision-making. Such a possibility excites many and worries others. The key question remains: Will this intelligence be a boon or a bane for humanity?

Great Thinkers, Great Questions:

Throughout history, every powerful invention has raised deep questions. Artificial Intelligence is no exception. The legendary scientist Stephen



Hawking once warned that while AI could be the greatest achievement of humanity, it could also become dangerous if not guided wisely. His message was not fear, but responsibility.

On the other hand, technology leaders like Sam Altman view AI as a limitless assistant that can help humans solve problems that once seemed impossible. In India, visionaries such as Nandan Nilekani

believe AI can become a great equalizer, providing quality education, healthcare, and opportunities to even the most remote villages. These differing perspectives highlight a powerful truth: AI in itself is neither good nor bad; its impact depends on how humans choose to use it.

The Boon:

For a diverse and populous country like India, AI offers extraordinary possibilities.

Revolution in Education -

AI has the potential to transform education completely. Imagine every student having a personal tutor who understands their strengths, weaknesses, and learning pace. AI-powered learning platforms can explain difficult concepts using

simple language, visuals, and even local languages like Hindi, Tamil, or Bengali. For children in rural areas where access to teachers is limited, AI can bridge the gap and bring quality education to their fingertips.

A Lifeline for Farmers - Agriculture is the backbone of India, and AI is becoming a trusted companion for farmers. By analysing satellite images, weather data, and soil conditions, AI can guide farmers on

when to sow seeds, how much water to use, and how to protect crops from pests. Accurate monsoon predictions can reduce crop failure and increase productivity, ensuring food security and improving farmers' livelihoods.

Transforming Healthcare- In healthcare, AI acts like a doctor with extraordinary vision. It can analyse X-rays, scans, and medical reports to detect diseases at an early stage. In villages where doctors are scarce, AI-based tools can assist nurses and health workers in diagnosing patients correctly. In the future, Super Intelligence may help discover cures for diseases that have troubled humanity for generations.

Efficient Governance and Smart Cities - AI can also improve governance by reducing corruption, managing resources efficiently, and delivering public services faster. From smart traffic systems to waste management and disaster prediction, AI can help build cleaner, safer, and more sustainable cities.

The Bane:

The Shadow Behind the Light Despite its benefits, AI also brings serious challenges.

Misinformation and Deep fakes - One of the biggest dangers is misinformation. AI-generated deep fake videos and fake news can mislead people by creating realistic but false images, audio, or videos. Such technology can damage reputations, influence elections, and

spread fear. This makes digital awareness and critical thinking more important than ever.

Job Displacement- As machines become more capable, many traditional jobs may change or disappear. This creates fear and uncertainty among workers. However, history shows that technological revolutions also create new opportunities. The challenge lies in reskilling people and preparing future generations to work with AI rather than compete against it.

Bias and Ethical Concerns

AI systems learn from data, and if that data carries human bias, the machine may repeat it. This can lead to unfair decisions based on gender, caste, or background. Ensuring fairness, transparency, and ethical values in AI development is one of the greatest responsibilities of modern engineers a policymaker.

The Future:

The future of AI in India is not about machines replacing humans; it is about collaboration. Humans possess empathy, creativity, morality, and wisdom- qualities that machines cannot easily replicate. AI, on the other hand, brings speed, accuracy, and immense memory. Together, they can solve humanity's toughest problems.

India's vision of "AI for All" emphasizes inclusive growth, ensuring that technology benefits not just corporations, but farmers,

students, small businesses, and marginalized communities. By nurturing innovation while maintaining ethical boundaries, India can lead the world in responsible AI use.

As poet Rabindranath Tagore dreamed of a world guided by reason and freedom, we must ensure that AI flows within the boundaries of human values. Technology must serve humanity--not control it.

Holding the Steering Wheel of the Future, Artificial Intelligence is like a powerful vehicle -capable of taking humanity to extraordinary destinations or dangerous dead ends. The difference lies in who holds the steering wheel. For the young generation of India, the responsibility is clear: be curious, be aware, and be wise. Learn how AI works, question its outcomes, and use it to uplift society.

If guided with knowledge, ethics, and compassion, Super Intelligence can become the greatest boon for humanity, helping us to protect the planet, eliminate hunger, cure diseases, and unlock human potential like never before.

The future is not written by machines. It is written by humans who know how to use the machines wisely.



Prashant Suryawanshi
R.O., Raipur



From Micro Precision to Mega Power

The Journey of Miniature Robotics and Artificial Intelligence

Artificial Intelligence (AI) has brought about an unprecedented revolution in the technological world over the past few decades. AI enables machines to think, understand and make decisions in a manner similar to humans. Through AI, we are now able to solve not only simple tasks but also complex and multi-layered problems. Its widespread impact is visible today in healthcare, finance, education, defence, industry, smart cities, cybersecurity and space research. Rapid growth in research and development worldwide indicates that human life in the future is likely to become more convenient, secure, and productive.

AI has made remarkable advancements in areas such as data processing, machine learning, deep learning and natural language processing. The integration of AI into modern robotics has made robots intelligent, adaptable and capable of autonomous decision-making. This has not only revolutionized industries and businesses but is also transforming every aspect of human life.

AI-Driven Robots

AI-powered robots have brought transformational changes across industries, healthcare, education and security. These robots can assess their environment, make situation-based decisions and perform complex tasks without human assistance.

- **Industry and Manufacturing:** In smart factories across Japan and South Korea, AI robots operate 24/7. They have enhanced both production speed and quality. Companies such as Toyota and Samsung use automated robotic arms, significantly reducing production costs while improving efficiency.
- **Domestic Applications:** AI powered vacuum cleaners, smart home assistants and security robots are making daily life safer and more convenient. Equipped with sensors and machine learning algorithms, these robots adapt their functions according to their environment.
- **Military and Defence:** In the United States, China, Israel, and Europe, AI driven drones and unmanned vehicles are strengthening security in border and combat zones. These automated systems protect soldiers during missions and respond instantly to threats. AI robots are also capable of developing strategies using maps, weather data, and real-time intelligence.

Miniature / Insect - like Robots

Miniature robots, also known as micro robots, are small in size but capable of performing powerful and flexible operations under AI guidance.

- **China:** Miniature robots have been tested on animals such as

pigs and rabbits. Results show reduced infection, enhanced tissue protection and targeted drug delivery. These robots are specifically designed for microsurgery and tissue repair.

- **United States:** Institutions like MIT, Harvard and Stanford are developing miniature robots for biomedical applications, minimally invasive surgery and vascular drug delivery. These robots can navigate inside the human body with high precision.
- **Japan and South Korea:** Osaka University and Hanyang University are developing miniature robots capable of entering human organs for surgical procedures and targeted drug delivery, with applications in neurosurgery and cardiac treatments.
- **Switzerland and Canada:** Research at EPFL and the University of Toronto focuses on smart micro robots for tissue repair and drug delivery. Magnetic and optical micro robots are being developed for minimally invasive procedures.
- **Iran:** Bio-friendly robots made from hydrogel and plant-based materials have been developed. These environmentally safe robots are suitable for biological and medical applications.

Global Research Landscape

- **United States:** AI and micro robotics are increasingly used in surgery, drug delivery, industrial operations and healthcare. Institutions such as MIT and Harvard focus on applications like cancer treatment, neurosurgery and targeted bloodstream drug delivery. Organizations like the FDA and DARPA are also working on standardization and safety testing.
- **Japan:** Japan has rapidly adopted AI and robotics in elderly care, hospitals, smart factories and automation. Companies such as Toyota, Sony and Fuji Electric have improved efficiency in production and logistics. Robots are also used as emotional and cognitive support assistants.
- **South Korea:** Miniature robots are used in healthcare, security, industrial production and space research. Universities such as Hanyang and KAIST conduct research in micro robotics and AI sensor technology.
- **Switzerland and Canada:** Research on biodegradable and body-dissolvable robots shows high potential for tissue repair and drug delivery, potentially transforming surgery and intravenous therapy.
- **Europe and Israel:** Continuous advancements are being made in defence, security and AI-based smart systems. In Israel, miniature drones and robotic surveillance systems are actively

used for border security and counterterrorism.

Opportunities and Applications Across Sectors

1. **Healthcare:** AI, robotics, and miniature robotic systems are revolutionising healthcare by enabling minimally invasive procedures where micro robots navigate through tiny pathways to perform targeted surgical tasks. These robots also allow highly precise drug delivery directly to affected tissues, improving treatment efficiency. AI powered diagnostic tools support real time patient monitoring by analysing vitals, imaging data, and biomarkers to detect abnormalities early. Harvard University demonstrated successful drug delivery to cancer cells using micro robots, significantly reducing tumour size, while animal trials in China showed positive results in infection control and tissue protection.
2. **Finance and Banking:** In finance and banking, AI-driven systems analyse vast amounts of financial data within milliseconds, supporting faster, more accurate, and risk-controlled decisions across stocks, derivatives, and cryptocurrencies. Customer service is enhanced through intelligent chatbots that respond instantly, provide personalised insights, and communicate in multiple languages, improving convenience and reducing branch load. Security is strengthened as AI systems

detect unusual transaction patterns to prevent fraud, while future robotic applications may support cash handling, ATM surveillance, counterfeit detection, and protection of digital payment channels.

3. **Defence and Cyber Warfare:** AI and robotics are driving major advancements in defence, with autonomous weapons, drones, unmanned tanks, and UAVs capable of identifying targets and executing missions with minimal human input. Cybersecurity systems powered by AI detect and block cyberattacks in real time, while miniature robots act as sensors inside data centres to analyse network anomalies. Micro robots equipped with cameras and sensors also enable covert surveillance, explosive detection, and terrain monitoring. Israel and the United States use mini drone swarms for border surveillance, with AI supporting Israel's Iron Dome, while the U.S. deploys drones along the Mexico border to identify infiltrations.
4. **Industry and Manufacturing:** AI-powered robots significantly improve industrial productivity by ensuring consistent, high quality output and minimising human error, particularly in automobile manufacturing. Supply chain operations become more efficient through AI, which predicts inventory needs, automates logistics, and uses drones and sensors for real time warehouse monitoring.



Workplace safety improves as robots detect malfunctions, chemical leaks, and hazardous conditions, alerting workers instantly. Additionally, robotics is accelerating innovation in areas such as 3D printing, aerospace components, and advanced medical equipment manufacturing.

- 5. Education and Research:** AI and robotics are transforming education by enabling smart classrooms with personalised learning that adapts to a student's speed, capability, and preferences. Miniature robots enhance STEM education by offering hands-on experience, improving problem solving abilities and fostering an innovation mindset. In research, AI accelerates the analysis of complex datasets, while micro robots facilitate new discoveries in microbiology, nanotechnology, and medical sciences. Future learning models powered by VR, AR, and robotic simulations will allow students to perform virtual experiments safely and cost effectively.
- 6. Environment and Smart Cities:** Miniature robots equipped with advanced sensors monitor environmental parameters such as air quality, water purity, and soil contamination, providing real-time data for faster interventions. AI-driven systems support smart city operations by optimising traffic flow, energy consumption, waste management, public transport

efficiency, and emergency response. Cities like Singapore and Tokyo deploy miniature drones and sensor networks to track pollution, temperature, and noise levels, helping authorities improve policy decisions and strengthen urban resilience.

Challenges and Ethical

Considerations: The widespread deployment of miniature robots presents several challenges and ethical issues that must be addressed for responsible adoption. Public trust remains a major concern, as users need confidence in the safety, reliability, and long term impact of these technologies. Technical constraints—including limited energy supply, precise navigation, medical biocompatibility, and data security vulnerabilities—continue to hinder large scale use. Regulatory and legal complexities also persist, as global standards and harmonised policies are necessary to govern cross border operations and ensure safety. Ethical dilemmas further arise regarding accountability for autonomous decisions, the required level of human oversight, and the protection of personal data. These factors highlight the need for strong governance, transparent regulation, and robust ethical frameworks to support future development.

Future Prospects: Despite these challenges, miniature robots and AI systems hold significant promise across multiple sectors. Autonomous robotic networks will enhance transportation and logistics by enabling faster and safer deliveries. Healthcare will be transformed

through improved surgical precision, targeted drug delivery, advanced diagnostics, and continuous patient monitoring. Smart cities will benefit from micro robots that support energy optimisation, pollution control, disaster management, and sustainable urban planning. Human robot collaboration will create safer, more efficient workplaces, while defence and cybersecurity will increasingly rely on autonomous systems for surveillance, border protection, threat detection, and rapid cyber response. Together, these advancements position miniature robotics as a foundational technology for improving efficiency, safety, and strategic decision making across industries.

Artificial Intelligence and miniature robotics have revolutionized every domain of human life. From healthcare and finance to defence, education, industry, environment and smart cities, they have unlocked unprecedented opportunities. Miniature robots are not only efficient in complex tasks but also play a vital role in environmental monitoring, healthcare advancement, banking security and industrial productivity. With proper regulation, ethical governance and continuous technological innovation, AI-driven miniature robotics will remain beneficial, safe and transformative for humanity.



Neha Gaur
ULA, Powai

Overview of Working Capital Assessment

Each business organization before starting of its commercial operations, it purchases land, building and plant & machinery. These fixed assets alone cannot generate profits to the company unless it has current assets. So, what does organization do after acquiring of fixed assets?

- The organization or company require funds for procurement of stocks.
- The company require funds for paying salaries/wages to its employees and daily labors.
- The company require funds to meet day to day operating expenses.

At this position where the borrower requires funds or to bridge the gap after creation of fixed assets is called working capital limit or working capital finance.

The important point about working capital limit is, it is rotational fund method or revolving credit that means it depends on "Operating Cycle".

Component of Working Capital limit:

The working capital limit is majorly dealing with Current Assets and Current Liabilities.

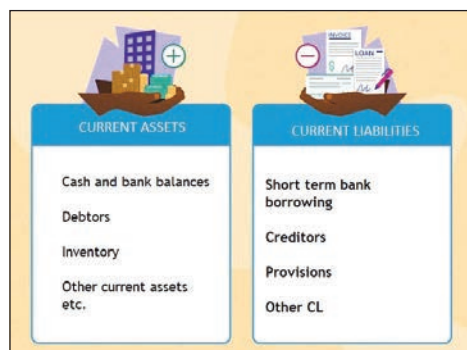
Current Assets:

These are the assets which are consumed, settled and converted into cash within operating cycle.

Current Liabilities:

These are the liabilities which are paid and settled and converted within operating cycle.

Examples of Current Assets and Current Liabilities



Methods for assessing Working Capital limits in our bank.

- Turnover Method.
- Flexible Bank Finance.
- Cash Budget Method.
- Net Owned Method.

Brief About Turnover Method:

Turnover method was introduced by P J Naik committee and appointed by Reserve of India in 1991.

Under this method, the working capital limit shall be computed at 20% of the projected sales turnover accepted by the Bank.

The turnover method shall be applied for sanction of fund based working capital limits to the non MSE borrowers requiring working capital facilities upto Rs.100 lakhs from the banking system.

The guidelines on turnover method were framed assuming an average production / processing cycle of 3 months (i.e. Working capital would be turned over four times in a year). However, it is possible that certain industries may have a production cycle longer than 3 months and they

may request finance as per turnover method based on eligibility. In the instant cases, higher working capital requirement for operating cycle above 3 months is to be funded by the borrower from own funds in addition to minimum 5% margin requirement for Bank loan. For example: Borrower with sales projections of Rs.100 lakh with proposed WC requirement of Rs.30 Lakh, which is above 25% of sales as per turnover method. As eligible finance under Turnover method is Rs.20.00 Lakh, customer should have own margin of Rs.10.00 Lakh to fund the additional working capital requirement.

However, in case of MSE borrowers in furtherance to Government of India directives, Bank can finance upto 30% of digital portion and 25% of the balance portion of the projected sales can also be considered.

This system shall also be made applicable to traders, merchants, exporters who are not having a predetermined manufacturing/trading cycle. Though this method envisages turnover in existing units, however in case of new unit (Greenfield), projected / accepted turnover is to be taken into consideration for sanction in the first year of operation.

As per prevailing practices in certain industries, the manufacturing cycle may exceed 3 months or longer credit needs to be extended. In all such cases even for limits upto Rs.5.00 crore, assessment by way of FBF method may be used instead of Turnover method.



Under the turnover method, branches/offices shall ensure maintenance of a minimum margin on the projected annual sales turnover. In other words, 25% of the estimated sales turnover value shall be computed as working capital requirement, of which, at least 4/5th (20%) shall be provided by the Bank and the balance 1/5th (5%) shall be by way of promoter's contribution towards margin money.

The assessment of working capital credit limits may be done both as per projected turnover basis and FBF method. If the credit requirement based on production / processing cycle (FBF) is higher than the one assessed on projected turnover basis, the same may be sanctioned as per Delegated Authority vested in Policy on Delegation of loaning powers. On the other hand, if the assessed credit requirement is lower than the one assessed on projected turnover basis, while the credit limit can be sanctioned upto 20% of the projected turnover, actual draws may be allowed on the basis of drawing power to be determined by the bank excluding unpaid stocks etc as per Banks guidelines. The prescription of minimum 20% as recommended by the P R Nayak Committee regarding adequacy of working capital to MSE sector, not to be treated as maximum. It is simplified assessment financial data in CMA format may not be insisted upon for credit limit upto Rs.1.00 crore covered under turnover method.

Flexible Bank Finance (FBF)

Flexible Bank Finance Method is an

extension of permissible Bank Finance Method. This method majorly deals with current assets and current liabilities projected in CMA format by the borrower. It is applicable where working capital cycle is more than 3 three months and where inventory and receivables form major part of current assets. The assessment of credit requirement of a party shall be made based on the projected study of the borrowers' business operations and the production/processing cycle of the industry. The implications involved in flexible bank finance is if suppose borrower is maintaining high holding of inventory and is taking longer time for realization which eventually leads to liquidity crunch. In this case the borrower may seek for higher working capital limits which should be justifiable for proper assessment. While assessing the limits the projected level of inventory and receivables shall be examined in relation to the past trend, market developments and industry trend.

The MPBF shall be computed as under:

Limit: Working Capital GAP (WCG) – Minimum Margin or NWC whichever is higher

(Where WCG = Current Assets – Current Liabilities excluding bank borrowings).

Acceptable level of Current Ratio under Flexible bank finance is at 1.15:1 against benchmark level of 1.33:1.

This method applicable for credit limits of above Rs.5 crores for MSE advances & above Rs.1.00 crore for other advances.

How to calculate operating cycle and what are the components involved in operating cycle:



What is operating cycle?

Operating cycle is the time taken by a company to convert its inventory into cash. It tells how long a company takes to:

1. Buy raw materials.
2. Convert the raw materials into finished goods.
3. Sell the finished goods to its customers by extending credit period, and
4. Collect the money from customers.

Formula for Calculating Operating Cycle: Inventory holding + Debtors.

If the company receives or gets credit period from suppliers for procurement of stocks, we can calculate net operating cycle.

Net Operating Cycle: RM+WIP+FG+ Debtors – Creditors.

Example: Let's say the ABC company is holding inventory for 60 days and receivables collection period is 45 days and payables period to the creditors is 30 days.

Then, Operating Cycle = 60+45 = 105 days and Net operating Cycle is = 105 -30 = 75 days.

This indicates that the company's cash is got blocked for 75 days.

Cash Budget Method:

Cash Budget Method adopted in case of specific Industries/ Seasonal activities such as Software Development, Construction Industry, Film Industry, Sugar, Fertilizers and working capital short term loans. In this method the MPBF will be arrived based on projected cash inflows and cash out flows not on the projected current assets and current liabilities.

Components under "Cash Inflows":

- Receipts or revenue generated from "Operating Activities".
- Receipts from Debtors.
- Advance from Customers.
- Other income such as Rent, Interest, Subsidy.

Components under "Cash outflows":

- Raw material purchases.
- Salaries and Wages.
- Power, Rent and administrative expenses.
- Interest and Instalment.
- Any other recurring expenditure.

Based on the projected cash inflows, the net cash flows are derived on a monthly basis. Further, the analysis of monthly net cash flows helps identify the period of maximum or peak cash deficit or surplus, if any. The peak cash deficit so identified forms the basis for assessing the borrower's working capital requirement.

Bank finance: Peak Deficit- Margin. Conclusion:

Working Capital, is not a just number, it is one of the decision-making tools. Choosing the right method ensures the borrowers have enough liquidity without putting the bank at risk.

Each Method, be it Turnover, Flexible Bank Finance or Cash Budget, serves a purpose based on the nature of business and scale of operations of borrower. As a banker our role is to select the right method to avoid under finance or over finance.



M. Venkataesh
Z.O., Vijayawada

छोड़ के आया हूँ

सपनों की चादर ओढ़ के, निकला हूँ नई राहों में,
दिल में कुछ उम्मीदें और कुछ डर छिपे हैं निगाहों में।
बीते लम्हों के पीछे, कुछ मीठे रिश्ते तोड़ के आया हूँ,
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

मां के खाने की खुशबू, अब सांसों में बसती नहीं,
पापा के आंखों जैसी, छांव भरी सेज अब सजती नहीं।
उन खिलखिलाते सुकून पर, वक्त की गर्दन मरोड़ के आया हूँ,
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

कभी दोस्तों संग बचपन की बातें, हंसी में खो जाती थी,
हर शाम छत पर बैठकर, जो कहानियां अपनी ही हो जाती थी।
उन यादों को दिल के अंदर, चुपचाप जोड़ के आया हूँ,
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

जहां हर मोड़ पर रिश्तों की आवाजाही होती थी हर रोज,
अब खाली सड़कों पर चलता हूँ, तो महसूस होती है ये सोच।
वो प्यारी सी जिंदगी और खुशियों का बुलबुला फोड़ के आया हूँ,
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

हर दिन के नए उलझनों ने, मेरे सब्र का बांध तोड़ा है,
अब तो अकेलेपन ने ही आकर, मुझसे रिश्ता जोड़ा है।
मन के गीले सपनों को, भीतर से निचोड़ के आया हूँ,
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

सड़कें अब अनजानी हैं, चेहरों से कोई पहचान नहीं,
यहां हर कोई अजनबी है, कोई साथ नहीं, कोई जान नहीं।
कच्ची गलियों से निकलकर, पक्की रोड पे आया हूँ।
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।

अब जीवन की राहों में, खुद को ही रोज बनाना है,
अंधेरे में भी चलकर अपना, सूरज खुद ही उगाना है।
बचपन की सादगी से, जवानी की उलझनों को मोड़ के आया हूँ।
हां, मैं मां का आंचल, पापा के कंधे छोड़ के आया हूँ।



प्रकाश कुमार पांडे
निमोरा शाखा, क्ष. का., रायपुर



Architecture of Invisible Finance

A Global Structural Analysis

The global financial services landscape is currently undergoing a deep structural reorganization. This shift is marked by a transition from an institution-centric "destination" model to a broad, integrated ecosystem. This change is defined by the convergence of two distinct but complementary trends: 'Open Banking' (the regulatory and technical foundation for data portability) and 'Embedded Finance' (market-driven applications that weave financial utility into non-financial platforms). By the year 2025, this evolution has progressed beyond simple API integration toward a future of "Invisible Finance," where financial products are available at the precise moment of a consumer's need.

The Evolution of Openness: From Monoliths to Ecosystems

Historically, licensed banks operated as monolithic entities, controlling the entire value chain from product creation to distribution. The real catalyst for breaking down these walls was the formalization of data rights, beginning with the European Union's PSD2 (Payment Services Directive 2). This established the precedent that financial data belongs to the consumer, not the institution. Open Banking provides the "pipes" through which data flows, while Embedded Finance uses these pipes

to integrate credit, insurance, and payments into retail, mobility, and enterprise software. The transition from "Closed Banking" to "Invisible Finance" can be divided into four distinct eras:

Era	Model	Primary Interface	Bank's Role
Before 2010	Vertical Integration	Physical Branch / Web	Sole Provider and Distributor
2015-2020	Regulatory Openness	Mobile App / API Portal	Mandatory Data Sharer
2021-2024	BaaS and Embedded	Third-party Platforms	Infrastructure/Utility Provider
2025-2030	Agentic and Invisible	AI Agents / Devices	Invisible Capital Orchestrator

Global Regulatory Pillars and Strengthening of Data Rights

The year 2025 marks a significant milestone in the maturity of "Open Finance" frameworks, which include investments, insurance, and pensions alongside traditional banking.

European Union: PSD3 and FIDA

The European Union is upgrading its framework through Payment Services Directive 3 (PSD3) and Payment Services Regulation (PSR), aiming to harmonize implementation and fraud prevention among member countries. Additionally, the 'Framework for Financial Data Access' (FIDA), introduced in June 2023 and expected to be formally adopted by the end of 2025, mandates data holders (insurers, asset managers, etc.) to make data accessible to third parties through data sharing schemes. To

protect market competition, policymakers have proposed preventing big tech companies ("gatekeepers") from becoming Financial Information Service Providers (FISP).

United States: Activation of Section 1033

In the US, the regulatory landscape changed in October 2024 with the finalization of the CFPB (Consumer Financial Protection Bureau) Section 1033 rule. This rule mandates the use of secure, standardized APIs and signals the end of the era of insecure "screen scraping". Financial institutions must provide free, electronic access to transaction data and payment initiation information, promoting "pay-by-bank" features as alternatives to traditional card networks.

India: Account Aggregator Milestone

India's Account Aggregator (AA) framework has reached population-scale usage by FY2025, with 4.77 crore users leveraging services through consent-based data flows. This has been transformative for the MSME (Micro, Small, and Medium Enterprises) sector, enabling cash-flow-based underwriting. In FY2025, this ecosystem facilitated disbursements of ₹1.67 lakh crore through 1.89 crore loans.

Technical Architecture: From Legacy to Cloud-Native

Modernizing banking technology is mandatory for real-time API demands, as legacy COBOL-based systems are naturally incompatible with modular ecosystems.

MACH Architecture and Composable Banking

Financial institutions are increasingly adopting the MACH framework: Microservices, API-first, Cloud-native, and Headless. This separation allows banks to operate specific functions (such as KYC or Ledger) as independent services that communicate via RESTful APIs and JSON. Cloud-native infrastructure (AWS, Azure, GCP) provides the elastic scalability necessary to handle the 'transaction spikes' seen during retail sales.

Event-Driven Architecture (EDA)

The transition from batch processing to real-time processing is enabled by EDA, where services communicate by emitting "events" (e.g., payment completed) on messaging systems like Kafka or NATS. Banks often use the "Leave and Layer" pattern for modernization, creating a modern cloud bus layer on top of old systems without completely replacing them.

Agentic Frontier: Autonomous Finance

A defining trend of 2025 is the emergence of 'Agentic AI'—autonomous systems capable of goal-oriented reasoning and independent execution. 53% of financial organizations now report using AI

agents in production for complex tasks rather than just classification.

Key Capabilities and Use Cases

Unlike traditional AI, Agentic AI can interact with the external environment to achieve high-level goals. Key use cases include:

- **Agentic Commerce:** Autonomous agents that search for the best deals, manage recurring payments, and optimize cash flow across multiple accounts.
- **Autonomous Compliance:** Bots that continuously monitor transactions for AML/KYC anomalies and conduct investigations at human speed.
- **Personalized Financial Representatives:** AI that negotiates mortgage rates or insurance premiums by presenting anonymous, permitted data profiles.

While promising, due to the high-risk nature of finance, "workflow-style" automation—where AI follows predefined paths and human verification is required—remains the preferred model for tasks like credit underwriting.

Economic Landscape and Global Market Dynamics

The global payments market reached \$2.5 trillion in 2024, but the revenue structure varies across different regions. North America is primarily consumer-driven, while Asia-Pacific (APAC) leans toward commercial revenue, where 25% of revenue is derived from commercial account

Net Interest Income (NII). The global embedded finance market is projected to exceed \$588 billion by 2030, growing at a Compound Annual Growth Rate (CAGR) of 32.8%.

Regional Impact: Cases of Invisible Banking

E-commerce: Shopify and Amazon

Shopify has become an effective financial provider for small businesses. Its 'Shopify Balance' account, built on Stripe Treasury, gained 100,000 users in the first four months of launch. Shopify Capital has disbursed billions of dollars, and data shows that funded merchants saw 36% higher sales growth compared to unfunded peers.

Retail Loyalty: The Starbucks Model

Starbucks functions like a "real bank," encouraging customers to preload funds onto its rewards app. The company holds over \$1.8 billion in interest-free deposits from customers, generating approximately \$21 million in interest income in one fiscal year. App users spend 2.5–3 times more than non-members, demonstrating the power of embedded loyalty.

Mobility: Uber and Grab

Uber Money provides drivers with instant payments and debit cards to improve their loyalty and liquidity. In Southeast Asia, Grab's "super-app" ecosystem serves 44.5 million monthly users, where its 'GrabFin' arm provides AI-powered micro-lending and insurance directly within the driver workflow.



Risks and Ethical Challenges

The rise of invisible finance gives rise to "phantom debt" (invisible debt) and systemic risks.

'Buy Now, Pay Later' (BNPL) and Debt Burden

The US BNPL market is expected to grow to around \$184 billion by 2030. However, many BNPL loans are not reported to credit agencies, creating a "phantom debt" situation that hides the borrower's true liability. Economically vulnerable users (credit score <600) are three times more likely to use BNPL repeatedly. In response, the CFPB classified BNPL providers as credit card providers in May 2024 to mandate dispute resolution and billing statement rights.

Cybersecurity and Synthetic Identity Fraud

Sharing data through complex API

networks increases the "attack surface". Fraud in embedded finance has increased by 60% since 2021, marked by synthetic identity creation and sophisticated phishing, accounting for 35% of fintech losses. Financial institutions are now adopting AI-driven and decentralized anomaly detection systems to maintain security without compromising privacy.

Algorithmic Bias

The use of AI in credit scoring improves access for borrowers without a credit history, but it also creates the risk of perpetuating historical social biases. If left unchecked, autonomous decisions can lead to systematic discrimination. To address this, 'Explainable AI' (XAI) tools are now being integrated so that regulators can get a clear

explanation of the factors behind automated decisions.

Conclusion: The 2030 Horizon

By 2030, the banks of the future will be defined not by their branches, but by their API ecosystem and their credibility as orchestrators of data. The success of this ecosystem will depend on balancing the friction-free convenience of invisible finance with robust regulatory oversight and ethical AI deployment. Institutions that adopt modern technical architecture and prioritize consumer advocacy will thrive in a world where banking is everywhere, yet ultimately remains invisible.



Shubham Gupta
RLP,
RO, Bengaluru (N)

न जाने क्यों मैं भीड़ में खो गया!

आँख खुली तो
मन में नादानी का रंग था,
कम श्रम, तन में दम कुछ कम था,
सोच का दायरा, भी न्यूनतम था,
फिर भी न जाने क्यों मैं उस भीड़ में खो गया!

फिर हुआ जब किशोर....
चंचल मन, सोच विचलित पड़ी,
तन में शक्ति भी खूब बढ़ी,
बहुत घूमी, सफल होने की छड़ी,
तब भी न जाने क्यों, मैं भीड़ में खो गया!

अब आई प्रौढ़ अवस्था.....
परिपक्व मन अनुभव से भरा,
सही सोच, हुआ, जीवन था खड़ा,

मन अनुभव से परिपक्व हुआ,
फिर भी न जाने क्यों, मैं भीड़ में खो गया!

बहुत हुआ अब और नहीं -----
अब भीड़ में अपने साथ रहूँगा,
संयमी, विवेकी, आत्मसात रहूँगा,
निर्मल और रिमझिम बरसात रहूँगा!

फिर भी, कहीं न कहीं मन में,
यह सवाल आता है कि,
क्यों मैं, भीड़ में खो गया?



श्री. श्रीराम
क्. का., वरंगल

From Consent to Compliance

What the Digital Personal Data Protection (DPDP) Act Means for Organisations

Introduction: India's Digital Growth and the Privacy Imperative

India's digital economy has grown at an unprecedented pace over the last decade. From mobile banking and e-commerce to digital health platforms and government service portals, personal data has become the backbone of modern service delivery. However, this rapid digitisation also exposed a regulatory gap, while data was being collected, stored and processed on a massive scale, individuals had limited clarity and control over how their personal information was being used. The enactment of the Digital Personal Data Protection Act, 2023 (DPDP Act) marks India's decisive response to this challenge. For organisations, the Act represents a fundamental shift, moving from a narrow focus on obtaining consent to a broader, ongoing responsibility of compliance, accountability, and trust-building.

Personal Data as a Matter of Individual Autonomy

At its core, the DPDP Act recognises personal data as an extension of individual autonomy. It establishes that organisations no longer "own" customer data simply because it is collected during a transaction. Instead, they act as custodians, referred to as Data Fiduciaries, with defined legal duties. This shift has far-reaching implications. Earlier, consent was often treated as a one-time procedural requirement, embedded in lengthy terms and conditions that few users read or fully understood. Under the DPDP

Act, consent becomes the starting point of a continuous compliance lifecycle, demanding transparency, traceability and respect for individual rights at every stage of data processing.

Redefining Consent Under the DPDP Framework

Consent under the DPDP Act must be free, specific, informed, unconditional and unambiguous. This means organisations must clearly explain what data is being collected, for what purpose and for how long it will be retained using simple and accessible language. Bundled or vague consent is no longer acceptable. For example, a bank collecting customer data for account opening cannot automatically extend that consent to marketing analytics or third-party sharing unless explicitly stated. Importantly, consent must be as easy to withdraw as it is to give. Once withdrawn, the organisation must stop processing the data unless another lawful basis exists. This transforms consent from a static checkbox into a dynamic, auditable compliance requirement.

Compliance Beyond Consent: Core Data Protection Principles

However, the DPDP Act goes well beyond consent. It recognises that lawful processing also depends on responsible organisational behaviour. Even when consent is validly obtained, organisations must adhere to principles such as purpose limitation, data minimisation and storage limitation. Purpose limitation requires that data be used strictly for

the purpose communicated at the time of collection. Data minimisation mandates that only data that is necessary for the stated purpose should be collected, discouraging the common practice of excessive data harvesting. Storage limitation requires organisations to delete personal data once its purpose has been fulfilled, unless retention is required by law. Together, these principles force organisations to rethink their data strategies from "collect everything" to "collect only what is absolutely required."

Strengthening the Rights of Data Principals

One of the most significant changes introduced by the DPDP Act is the strengthening of individual rights referred to as the rights of Data Principals. Individuals now have the right to access information about their personal data, seek correction of inaccurate or outdated data, request erasure when the data is no longer required and raise grievances against misuse or non-compliance. For organisations, this means that compliance is no longer an internal or invisible process. They must build visible, functional mechanisms such as dashboards, helpdesks and grievance redressal systems that allow individuals to exercise these rights efficiently and within prescribed timelines.

Grievance Redressal as a Compliance Obligation

The obligation to establish an effective grievance redressal



mechanism deserves particular attention. Under the DPDP Act, organisations must appoint a designated contact point for addressing complaints related to personal data. Failure to resolve grievances within the stipulated period can escalate matters to the Data Protection Board of India. This makes customer-facing compliance just as important as backend legal or technical compliance. In sectors like banking, insurance, fintech, and e-commerce where trust is central to customer relationships, poor grievance handling can quickly turn into regulatory and reputational risk.

Data Security and Breach Notification Responsibilities

Data security is another pillar of organisational responsibility under the DPDP Act. Data Fiduciaries are required to implement reasonable technical and organisational safeguards to prevent personal data breaches. While the Act does not prescribe a uniform technical standard, it expects organisations to adopt security measures appropriate to the nature and volume of data processed. This includes access controls, encryption, employee awareness and incident response frameworks. Importantly, the Act mandates breach notification. In the event of a personal data breach, organisations must inform the Data Protection Board and affected individuals in a timely manner, reinforcing transparency and accountability.

Significant Data Fiduciaries and Enhanced Compliance

For larger organisations or those processing sensitive or high volumes of data, the compliance burden is

significantly higher. Such entities may be designated as Significant Data Fiduciaries based on criteria like scale, sensitivity and potential harm to individuals. These entities are required to appoint a Data Protection Officer, conduct periodic audits, and undertake Data Protection Impact Assessments for high-risk activities. For banks, large digital platforms and payment system operators, this designation is likely, making structured data governance an essential business function rather than an optional compliance exercise.

Operational Transformation and Consent Management Systems

Operationally, the DPDP Act compels organisations to redesign how personal data moves across systems. Consent management must be supported by technology that records consent details, tracks changes and ensures that withdrawals are implemented across all relevant databases. This often requires modernising legacy systems, integrating legal requirements into IT architecture and ensuring coordination between compliance, technology and business teams. Consent, therefore, becomes a live operational process rather than a static document.

Managing Third-Party and Vendor Risks

The Act also has major implications for third-party relationships. Personal data is frequently shared with vendors such as cloud service providers, analytics firms and outsourcing partners. Under the DPDP Act, the primary Data Fiduciary remains accountable even when processing is outsourced. This requires organisations to perform

due diligence, revise contracts to include data protection obligations and monitor vendor compliance regularly. Responsibility for personal data cannot be outsourced, only the processing can.

Elevating Data Protection to the Boardroom

From a governance standpoint, the DPDP Act elevates data protection to a strategic issue. Senior management and boards can no longer treat data privacy as a purely technical or legal matter. Significant financial penalties and reputational consequences make it imperative to integrate data protection into enterprise risk management and internal audit frameworks. Many organisations are now establishing dedicated data protection committees or appointing privacy champions to embed compliance culture across the organisation.

Compliance as a Trust and Competitive Advantage

While compliance requires investment, it also creates long-term value. Organisations that embed privacy-by-design and transparency into their operations can build stronger customer trust. In sectors dealing with financial and sensitive personal data, trust is a key differentiator. Compliance with the DPDP Act should therefore be viewed not merely as a regulatory obligation, but as a strategic enabler of sustainable growth and customer loyalty.

Alignment with Global Data Protection Standards

The DPDP Act brings India closer to global data protection norms such as the GDPR, while retaining a distinctly

Indian context. This alignment supports cross-border business, global outsourcing, and international partnerships. For Indian organisations with global ambitions, DPDP compliance can act as a baseline for meeting international privacy expectations and strengthening credibility in foreign markets.

Challenges, Ambiguities and the Need for Evolution

Despite its strengths, the DPDP Act also presents challenges. Concerns have been raised about state exemptions, interpretational ambiguities and the need for clearer regulatory guidance. For organisations, this means compliance is not static. Policies, systems and practices will need continuous review as enforcement actions and

regulatory interpretations evolve over time.

Practical Roadmap from Consent to Compliance

In practical terms, organisations must adopt a structured compliance roadmap. This begins with data mapping to understand what personal data is collected and processed. It is followed by reviewing consent mechanisms, updating privacy notices, strengthening security controls, training employees, and establishing robust grievance and breach response frameworks. Sustainable compliance depends on organisational mindset as much as legal adherence.

Conclusion: From Legal Obligation to Organisational Culture

The Digital Personal Data Protection

Act, 2023 marks a decisive shift in India's data governance framework. It moves organisations from a checkbox-based approach to consent toward a culture of accountability, transparency and respect for individual rights. Consent is only the entry point, true compliance requires continuous effort, ethical intent and institutional commitment. Organisations that embrace this shift will not only meet regulatory expectations but also build trust, resilience, and long-term value in India's evolving digital economy.



Manish Gupta
Z.L.C., Bhopal

परछाइयाँ

रेत के कणों में घुसपैठ करती हुई
परछाइयाँ - जो अपने मूल से कटकर
एक और सत्य रच रही हैं
जहाँ वस्तु और उसका प्रतिबिम्ब
एक ही समय में
दो अलग द्रव्य हैं

सूर्य का पश्चिम की ओर झुकना
केवल एक खगोलीय घटना नहीं
बल्कि समय के भीतर समय का
अपने आप से बातचीत है
जिसमें प्रकाश और अँधकार
दोनों एक साथ जीत और हार रहे हैं

यहाँ हर परछाई
अपनी जन्मदात्री वस्तु से
एक गुप्त संधि करती है -
"मैं तुम्हारा सच हूँ
या तुम मेरे होने का बहाना?"

रेत पर फैली ये आकृतियाँ
दरअसल अनुपस्थिति की उपस्थिति हैं

जो इस बात का प्रमाण देती हैं
कि जो दिखता है
वह उतना ही झूठ है
जितना वह सच है जो नहीं दिखता

मैं इस दृश्य में पढ़ता हूँ
अस्तित्व की वह ज्यामिति
जिसमें समानांतर रेखाएँ मिल जाती हैं
जैसे यूक्लिड का पांचवाँ स्वयंसिद्ध
यहाँ अपने ही खंडन में सिद्ध होता है
और प्रत्येक त्रिकोण के कोणों का योग
अनंत में विलुप्त हो जाता है

सूर्यास्त - जो वास्तव में
पृथ्वी के आत्म-परिक्रमण का भ्रम है
यहाँ स्वयं एक परछाई बन जाता है
जो न कभी उगता है न अस्त होता है
उगने-अस्त होने का नाटक करता है

और जब अँधेरा उतरता है
तो ये परछाइयाँ

अँधेरे में विलीन नहीं होतीं
बल्कि अँधेरा ही बन जाती हैं -

एक ऐसा अँधेरा
जिसमें रोशनी की स्मृति
अभी भी साँस ले रही है

इन परछाइयों में छुपा है
अस्तित्व का वह मूल समीकरण
जिसमें शून्य और अनंत
एक ही संख्या के दो नाम हैं
और हम उस संख्या की तलाश में
अपने ही भीतर भटकते रहते हैं।



अमित कुमार
क्ष.का., वाराणसी

विभिन्न आउटरीच अभियान



क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम



क्षेत्रीय कार्यालय, हल्द्वानी



क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा



क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी



क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु



क्षेत्रीय कार्यालय, हासन



क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा



क्षेत्रीय कार्यालय, सेलम



क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवन्तपुरम



हुणसूर शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु



रामनगर शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु



फोटो - बिग्वेश सास्मल
क्ष.का., ब्रह्मपुर

क्या यह तस्वीर कोई पुरानी याद ताज़ा करती है, कोई छुपी हुई भावना को जगाती है, या आपकी कल्पना को उड़ान भरने पर मजबूर कर देती है? तस्वीर हज़ार शब्दों के बराबर होती है, लेकिन अगर आप अपनी बात कुछ ही शब्दों में कहना चाहें—तो चलिए, अपनी कलम को जादू बुनने दें और पल में थोड़ी मस्ती घोल दें!

इस चित्र के लिए अधिकतम 06 शब्द का एक शीर्षक लिखें और अपने कार्यालय/क्षेत्र के संवाददाता के माध्यम से हमें प्रेषित करें

अपनी प्रविष्टि भेजते समय निम्नलिखित का ज़रूर ध्यान रखें:

- शीर्षक अधिकतम 06 शब्द की ही हो.
- प्रविष्टि हिंदी या अंग्रेज़ी में भेजी जा सकती है. परिपत्र सं. 8303-2024 दि: 12.06.2024 के अनुसार दोनों श्रेणियों में अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे.
- एक स्टाफ सदस्य एक ही प्रविष्टि प्रस्तुत कर सकते हैं, या तो हिंदी या अंग्रेज़ी में.
- प्रतियोगिता केवल बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.
- सभी संवाददाता से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को भाषावार सारणी में समेकित कर अंतिम तिथि तक uniondhara@unionbankofindia.bank.in पर प्रेषित करें. सारणी में प्रविष्टि के साथ स्टाफ का नाम, पदनाम, शाखा/कार्यालय का नाम, सोल आईडी की सूचना अवश्य दें.
- प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि 06 मार्च, 2026 है।
- शब्द संख्या का ध्यान रखते हुए अंतिम तिथि तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाएगा।

Does this picture tug at an old memory, stir a hidden emotion, or set your imagination dancing? A picture may be worth a thousand words, but if you'd rather express your feelings in just a few—go on, let your pen work its magic and sprinkle some fun into the moment!

Write a caption of 06 words on this picture and send it to us through the correspondent of your office/Region.

Please ensure the following while submitting your entry:

- Caption should be of maximum 06 words only.
- The entry may be sent in Hindi or English. In terms of circular no. 8303-2024 dt. 12.06.2024 separate prizes shall be awarded under each language category.
- **A staff member may submit only one entry, either in Hindi or in English.**
- This contest is open only for the staff members presently in service of the Bank.
- All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region, language wise, in a tabular form, by the last date and send them to uniondhara@unionbankofindia.bank.in Invariably give details of Staff name, designation, branch/Office name, SOL ID along with the entries.
- **The last date for sending entries is 06th March, 2026.**
- Entries, duly, adhering to the specified word limit, received by the last date, shall only be included in the competition.

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्र 175 - 'लघु कविता लिखें' के पुरस्कार विजेता

पुरस्कार	हिंदी श्रेणी	अंग्रेजी श्रेणी
प्रथम	सुश्री ज्योत्सना सिंह, अं.का., मेरठ	श्री विनय कुमार, क्ष.का., गाजीपुर (पश्चिम)
द्वितीय	श्री बिनीत कुमार गंगिया, मुजफ्फरपुर शाखा, क्ष.का., समस्तीपुर	सुश्री रोशनी, क्ष.का., अहिल्यानगर
तृतीय	सुश्री अरुणा प्रिया, चालाई बाजार शाखा, क्ष.का., तिरुवनंतपुरम	श्री निजिन एम, क्ष.का., कोल्लम
प्रोत्साहन	श्री हर्ष जैन, भरूच 2 शाखा, क्ष.का., बड़ौदा	सुश्री हर्षा प्रभु, क्ष.का., तिरुवनंतपुरम

कीर्ति सरंगल मिसेज इंडिया (लीगेसी) - 2025

जिनके अंदर हुनर होता है उन्हें किसी के हौसले की जरूरत नहीं होती, वे खुद ब खुद अपने साथ समाज का हौसला बन जाते हैं। ऐसी ही कहानी है एक यूनियनआईटी की, जो शाखा प्रबंधक होते हुए भी, मिसेज इंडिया सौन्दर्य प्रतियोगिता की विजेता बनी हमारी सरस्वती विहार शाखा, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली- उत्तर की शाखा प्रबंधक सुश्री कीर्ति सरंगल। जो बैंक में कारोबार लाने के साथ सौन्दर्य प्रतियोगिता में भी बैंक का नाम रोशन कर रही है। तो आईए खुद कीर्ति जी से जानते हैं उनकी इस यात्रा के बारे में यूनियन धारा की संवाददाता उषा के माध्यम से...



बैंक को ज्वाइन किया, जो अब यूनियन बैंक ऑफ इंडिया है। बैंक ने मुझे सीखने, आगे बढ़ने और लीडरशिप रोल निभाने के मौके दिए हैं।

1. पाठकों को अपने बारे में कुछ बताएं।

मेरा नाम कीर्ति सरंगल है। मेरा जन्म और पालन-पोषण अंबाला कैंट में हुआ। वर्तमान में मैं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की सरस्वती विहार शाखा में शाखा प्रबंधक के तौर पर कार्यरत हूँ। अपनी व्यवसायिक ज़िंदगी से इतर मुझे डांस का बहुत शौक है, जिससे मैं खुद को रचनात्मक तरीके से अभिव्यक्त कर पाती हूँ। जहाँ भी हो सके मैं समाज को सकारात्मक योगदान देने में विश्वास रखती हूँ। मैं खुद को एक मज़बूत और सकारात्मक महिला मानती हूँ जो लगातार सीखने और आगे बढ़ने में विश्वास रखती है। मेरी अब तक की यात्रा ने मुझे सिखाया है कि दृढ़ संकल्प, विनम्रता और खुद पर विश्वास से सपनों को हकीकत में बदलना और रास्ते में दूसरों को प्रेरित करना संभव है।

2. आपने बैंक कब ज्वाइन किया?

मैंने साल 2010 में बैंकिंग भर्ती प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पास करने के बाद कॉर्पोरेशन

3. आपको मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए किसने प्रेरित किया?

मिसेज़ इंडिया कॉन्टेस्ट में हिस्सा लेने की प्रेरणा मुझे आज की महिला का प्रतिनिधित्व करने की इच्छा से मिली, जो आत्मविश्वासी, दयालु और गर्व के साथ पत्नी, माँ और कामकाजी महिला जैसी कई भूमिकाओं को निभाने में सक्षम है। मेरा मानना है कि यह प्लेटफॉर्म सिर्फ सुंदरता का नहीं, बल्कि ताकत, मकसद और व्यक्तित्व का जश्न मनाता है। मेरा मानना है कि हर महिला को अपनी ज़िंदगी के किसी भी पड़ाव पर सपने देखने, चमकने और नेतृत्व करने का अधिकार है।

4. आपने मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता के लिए खुद को कैसे तैयार किया?

मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता की तैयारी अनुशासन, सीखने और खुद पर विश्वास की यात्रा थी। मैंने अपनी फिटनेस और पोस्चर पर काम किया, रैप वॉक की प्रैक्टिस की और आत्मविश्वास के साथ एलिगेंट दिखने के लिए

खुद को तैयार किया। मैंने सभी रविवार अपने संचार कौशल, समसामयिक मामले और मॉक इंटरव्यू को बेहतर बनाने में लगाए ताकि मैं अपने विचारों को साफ़ तौर पर व्यक्त कर सकूँ। मैंने टैलेंट प्रैक्टिस पर भी ध्यान दिया, खासकर डांस पर, जो मेरे दिल के बहुत करीब है। पॉजिटिव रहते हुए ज़मीन से जुड़े रहकर और अपने मूल्यों के प्रति समर्पित रहते हुए मैंने मानसिक रूप से खुद को तैयार किया। अपने परिवार,

खासकर मेरे पति के लगातार सपोर्ट और मेंटर्स के मार्गदर्शन से बेहतरीन कार्यनिष्पादन से और हर उस महिला का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्टेज पर आई, जो सपने देखने की हिम्मत रखती है।

5. प्रतियोगिता के दौरान आपका अनुभव कैसा रहा?

मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता के दौरान मेरा अनुभव सच में बदलने वाला और यादगार रहा। यह सीखने, चुनौतियों और खूबसूरत यादों से भरी एक यात्रा थी। ग्रूमिंग सेशन और अभ्यास से लेकर देश भर की प्रेरणादायक महिलाओं के साथ बॉन्डिंग तक, हर पल ने मुझे आत्मविश्वास और खुद पर विश्वास बढ़ाने में मदद की। स्टेज ने मुझे अनुशासन, दबाव में भी शांत रहना और खुद के प्रति सच्चा रहने की शक्ति सिखाई। इस प्रतियोगिता से ताज के अलावा, मुझे दोस्त, मेंटर्स और अपनी ताकत की गहरी समझ मिली। मैं इस प्लेटफॉर्म के लिए आभारी हूँ जिसने न सिर्फ सुंदरता बल्कि नारीत्व की भावना का भी जश्न मनाया।

6. सुंदरता के अलावा मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता के लिए और क्या मानदंड थे?

सुंदरता के अलावा, मिसेज़ इंडिया प्रतियोगिता

ने एक महिला के व्यक्तित्व पर फोकस किया। हम अपने विचारों को कितनी अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं और सार्थक मुद्दों के लिए खड़े हो सकते हैं। मुख्य मानदंड में आत्मविश्वास, संवाद कौशल और बुद्धिमत्ता शामिल थे। ग्रूमिंग सत्र के दौरान अनुशासन और अनुकूलन क्षमता के साथ प्रतिभा और मंच पर उपस्थिति पर बहुत ज़ोर दिया गया। कार्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण बात, जजों ने प्रामाणिकता, मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी को देखा कि हम दूसरों को प्रेरित करने और समाज में योगदान देने के लिए इस प्लेटफॉर्म का कैसे उपयोग कर सकते हैं। यह सिर्फ इस बारे में नहीं था कि हम कैसे दिखते हैं, बल्कि इस बारे में था कि हम कौन हैं और हमारा मकसद क्या है।

7. आपका रोल मॉडल कौन है?

मेरे सबसे बड़े रोल मॉडल मेरे माता-पिता हैं। उन्होंने हमारे बेहतर भविष्य के लिए अपने आराम और नींद का त्याग किया। उन्हें हिम्मत के साथ जिम्मेदारियाँ निभाते देखना, मुझे बड़े सपने देखने और ज़मीन से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया है। मेरे पिता एक सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल थे जिन्होंने मुझे अनुशासन और शिक्षा के प्रति समर्पित किया। उनके मूल्यों ने मुझे आगे बढ़ने और आज मैं जो हूँ, वह बनने की हिम्मत दी। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह सिर्फ़ उन्हीं की वजह से हूँ।

8. जीतने के बाद, आपका अगला कदम क्या है?

मिसेज़ इंडिया जीतने के बाद, मेरा अगला कदम खुद को एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत और अपने बैंक का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार करना है। मैं अपनी संचार कौशल को बेहतर बनाने, वैश्विक जागरूकता, फिटनेस और स्टेज प्रेजेंट्स पर काम करने और अपनी प्रतिभा को निखारने की योजना बना रही हूँ ताकि मैं दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ लोगों के साथ आत्मविश्वास से मुकाबला कर सकूँ। जीतने से ज़्यादा, मेरा लक्ष्य भारतीय संस्कृति, मूल्यों और नारीत्व का एक मज़बूत एंबेसडर बनना है, और महिलाओं के स्वास्थ्य और

सशक्तिकरण जैसे मेरे दिल के करीब के मुद्दों के लिए आवाज़ उठाना है। मैं अपने देश और बैंक को वैश्विक मंच पर गर्व महसूस कराना चाहती हूँ।

9. आपने अपने काम और अपने पैशन के बीच संतुलन कैसे बनाए रखा?

मैंने एक नियमित दिनचर्या का पालन किया, सुबह जल्दी और देर शाम का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाया और अपने पैशन को उसी समर्पण के साथ निभाया जैसे बैंकिंग को। कुछ दिन ऐसे भी थे जब यह चुनौतीपूर्ण था, लेकिन डांस के प्रति मेरे प्यार और मेरे सपने ने मुझे प्रेरित रखा। मेरा मानना है कि जब आप सच में कुछ चाहते हैं, तो आप समय प्रबंधन करना, लगातार बने रहना और चुनौतियों को ताकत में बदलना सीख जाते हैं। मैंने सही योजना, अनुशासन और एक मज़बूत सपोर्ट सिस्टम के ज़रिए काम और अपने पैशन के बीच संतुलन बनाए रखा, लगातार बनी रही, और खुद को याद दिलाती रही कि मैंने यह क्यों शुरू किया था।

10. बैंकिंग के अलावा कुछ अलग करने वाले स्टाफ़ मेंबर्स को सपोर्ट देने के लिए प्रबंधन से कोई उम्मीद?

हाँ, मेरा मानना है कि जो स्टाफ़ अपनी दैनिक जिम्मेदारियों से हटकर काम करते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करने में प्रबंधन बहुत अहम भूमिका निभाता है। मैं उम्मीद करती हूँ कि ऐसे प्रयासों को पहचाना और प्रोत्साहित किया जाए, चाहे वह खेल, कला, सोशल वर्क या दूसरे कामों में हो, क्योंकि ये आत्मविश्वास, लीडरशिप और संस्था की सकारात्मक छवि बनाने में मदद करते हैं। जब प्रबंधन स्टाफ़ को महत्व देता है, तो यह कर्मचारियों को काम में और भी बेहतर प्रदर्शन करने और गर्व के साथ संस्था का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित करेगा।

11. हमारे पाठकों के लिए कोई मंत्र

"ईमानदारी से नेतृत्व करें, सहानुभूति से सुनें, उदाहरण से प्रेरित होकर आगे बढ़ें" और अंतिम लेकिन सबसे महत्वपूर्ण "खुद पर विश्वास रखें, लगातार बने रहें, और अपने सपनों का पीछा करना कभी न छोड़ें"।

12. बहुमुखी-प्रतिभाशाली होते हुए आप अपने व्यक्तित्व को कैसे प्रबंधित करते हो?

मेरा मानना है कि सच्ची प्रतिभा विनम्रता, दया और सम्मान से झलकती है। मैं ज़मीन से जुड़े रहने, दूसरों को सपोर्ट और प्रोत्साहित करने की कोशिश करती हूँ, और अपने काम को शब्दों से ज़्यादा बोलने देती हूँ। चाहे बैंक में हो, स्टेज पर हो, या रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, मैं अपने स्वभाव को पॉजिटिव, अनुशासन और मददगार रवैये से दिखाती हूँ।

13. आपका प्रेरणा-स्रोत कौन है?

मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा मेरा परिवार है, खासकर मेरे स्वर्गीय पिता और मेरी माँ। उनके मूल्यों, कड़ी मेहनत और अटूट समर्थन ने मुझे हमेशा बड़े सपने देखने और एकाग्र रहने के लिए प्रेरित किया है। मेरे पति और मेरे बच्चे के लगातार समर्थन और प्रोत्साहन के साथ ही साथ मेरी शाखा के स्टाफ़ ने मुझे हर दिन आगे बढ़ने, लक्ष्य हासिल करने और एक सकारात्मक प्रभाव डालने में बहुत मदद की है।

14. आपके भविष्य के लिए निर्धारित लक्ष्य क्या है?

बैंकिंग करियर में मेरा लक्ष्य उच्च नेतृत्व में बढ़ना, सेवा में उत्कृष्टता प्रदान करना और ईमानदारी के साथ संगठन की प्रगति में योगदान देना है। मिसेज़ इंडिया के रूप में, मेरा लक्ष्य इस मंच का उपयोग महिलाओं को प्रेरित करने, महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण जैसे सामाजिक कार्यों के लिए सक्रिय रूप से काम करने और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गर्व के साथ भारत का प्रतिनिधित्व करना है। मैं दोनों को संतुलित करना चाहती हूँ - एक सार्थक सामाजिक प्रभाव पैदा करते हुए एक मज़बूत पेशेवर यात्रा का निर्माण करना चाहती हूँ।



उषा
क्षे.का., दिल्ली (3)



‘Pole Pole’ to the Roof of Africa

Summitting Mt. Kilimanjaro, Tanzania — 9 September 2025, 9:35 AM (Africa Time)

(Highest free standing mountain above sea level: 5,895 m / 19,341 ft • The Roof of Africa • One of the Seven Summits • Dormant volcano)



Opening Spread: The Mountain That Teaches You to Go Slow

“Pole pole”—slowly, slowly—is more than a phrase on Kilimanjaro. It’s a survival code, a rhythm, the pulse you sync with as rainforest mist turns to moorland wind, and sand blasted desert rises toward ice and sky. For our group of fifteen Indian trekkers—including remarkable seniors in their 60s and 70s—this climb wasn’t only about altitude. It was about defying age, quieting fear, and discovering what remains when everything unnecessary falls away.

Kilimanjaro’s beauty is deceptive. In a matter of days, you traverse from the equator to an arctic realm, crossing five distinct climatic zones—Cultivation, Rainforest, Moorland, Alpine Desert, and Arctic Summit—each a change of scenery, oxygen, and self.

The Shining Mountain of Africa

Volcanic forces forged Kilimanjaro

over two million years ago. In Swahili, “Kili” can mean hill or mountain, and from the Chagga tongue, “Manjaro” evokes white or shining. Together, The Shining Mountain—a name the peak earns when it glows beyond the clouds, especially as you cross the Namanga border from Kenya into Tanzania. On a clear day, it appears like a silent guardian, gleaming above the plains and asking, without words: How much do you want this?

The First Step — Signing Up

In 2024, our Kerala based trekking community, Globetreckers, set its sights on Kilimanjaro as part of a long game dream: The Seven Summits Project. People of all ages and backgrounds signed on, bound by a single intention—The Summit.

I had never done a high altitude trek. My plan was to defer. I need more time, I told myself. More training. More certainty. Then came my friends’ gentle insistence—and a quiet conversation with my own fear. I registered in April 2025. The commitment was real; doubt could ride along, but it wouldn’t drive. Training became my blueprint: two treks a month, stair climbs with a backpack, incline walks with a training mask, strength work, and mindfulness practices to steady a restless mind. Then, three days before my flight—fever and a severe cold. It felt cruel. But the path was already chosen. I couldn’t imagine turning back.



The Journey Begins

1 September 2025. Our fifteen members team lifted off from Kochi, Bengaluru, and Hyderabad, converging in Nairobi. With a multiple entry East African Community visa, the overland route to Tanzania was smooth. We drove about 300 km to Moshi—a quiet town at Kilimanjaro’s foot whose name, “smoke,” comes from its morning cloud shawl.

At Moshi, our local partner, ZAFS Tours, welcomed us like family. Briefings followed: daily plans, emergency protocols, pace strategy, hydration, nutrition, gear checks. Whatever we lacked, we rented. Their warmth and exacting attention calmed our jitters. On 4 September 2025, we stepped onto the famous Machame Route—the “Whiskey Route,” scenic and challenging, a trail that mirrors the mountain’s many faces.

The team chose the Machame Route, one of the most scenic and popular trails up Kilimanjaro. Known as the “Whiskey Route,” it offers a once in a lifetime journey through rainforest, moorland, alpine desert, and glacier zones. Challenging yet rewarding, it captivates both seasoned trekkers and first time adventurers.

Day 1 — Machame Gate (1,800 m) → Machame Camp (3,000 m)

Excitement buzzed as we cleared the gate, signed in, and ate a quick early lunch. The trail rose into a cathedral of green—ferns, giant trees, fog curling like silver ribbon. Birdsong stitched the silence. But my cold clamped down. Breathing through a blocked nose turned effort into labor. Energy ebbed. The group kept a “pole pole” rhythm—unhurried, steady, respectful of altitude’s rules. By camp, I was wrecked. That night, coughing and congested, I wrestled with a single, needling question: Had I made a mistake?

Day 2 — Machame Camp → Shira Cave (3,850 m)

The forest fell away to open moorlands, volcanic rock scattered like a shattered galaxy. The Shira Plateau flared wide; the air thinned. My cold sank deeper; every breath grew deliberate. Confidence wobbled. Then I remembered: This is my dream. I paid for it in time, sweat, and hope. Friends and guides read my face, slowed their step, lent a word, a smile, a hand. Support wasn’t soft—it was structural. And it carried me. We reached Shira Camp with Kibo Peak etched against the sky. I felt small—in the best possible way.

Day 3 — Shira Camp → Lava Tower (4,600 m) → Barranco Camp (3,900 m)

This was a day of reckoning. The ascent to Lava Tower—a stark monolith in a lunar landscape—was an altitude crucible. Headaches pounded. Nausea crept in. A friend vomited; others swayed in their steps. Acute Mountain Sickness (AMS) introduced itself without courtesy. I couldn’t eat; water became medicine. Guides repeated our daily liturgy: “Pole pole.” Speed is meaningless up here. Only steady steps matter. The descent to Barranco restored some strength. Headache eased; appetite flickered back. I slept well, my mind calmer and my body learning the mountain’s terms.

Day 4 — Barranco Camp → Karanga Camp (3,900 m)

We woke to the Barranco Wall looming like a granite wave. Before we started, our hearts sank—two teammates, both experienced, had to turn back. AMS had taken its toll. Watching their careful exit was sobering. If they couldn’t continue, could I?

I took inventory: I’m still moving. I’m still here. That is enough. The wall looked vertical, but it wasn’t technical—more a hand and feet scramble demanding focus and respect. Our guides set a cadence: “One rock at a time.” The trail pinched at the famous “kissing rock”, where you ease past by hugging the stone. We laughed, carefully. At the top, pride replaced fear. Clouds billowed below like a sea. Ridges and dips led us onward to Karanga. That evening, I felt stronger—tempered by effort, buoyed by belief.

Day 5 — Karanga Camp → Barafu Base Camp (4,600 m)

The path to Barafu was short, steep, sun bitten. The world turned stark—dust, rock, a palette of ash. We reached by noon, ate, and were ordered to rest, hydrate, and be still. At 5 PM, an early dinner. At 6 PM, sleep—fully layered, headlamp ready, boots nearby. The mind played shadows: In a few hours, my hardest climb begins.

Summit Night — Barafu → Stella Point → Uhuru Peak (5,895 m)

Start: Midnight • Summit: 9 September 2025, 9:35 AM (Africa Time) / 12:05 PM (India Time)

We woke at 11 PM, armored in layers—thermal base, fleece, down, windproof shell, double gloves, balaclava, headlamp. At midnight, our constellation of lights inched upward into blackness. Wind sliced through fabric. Toes numbed fast. Breaths became metronomes. The slope stole steps; for every three forward, one slid back. After three hours, the cold was a living thing. My water bladder froze. Energy drained like sand through a fist. Guides poured ginger water into our cups—liquid courage against the freeze.

A Fracture in the Dark

A friend said he would walk slightly ahead. Minutes blurred into an hour—or more. He vanished in the dark. Panic rose—too loud for thin air. Had he surged too far? Fallen behind? Guides would not let us stop; oxygen was precious. We kept moving. At 5:30 AM, dawn spilled over the ridges—indigo to rose to a clean, holy gold. The words drifted down the line:



“Stella Point is close.”

Suddenly, our friend reappeared—equally confused, equally relieved. Summit night scrambles memory; the brain protects itself with fog. We were together again. That was enough. At Stella Point (5,756 m) we sat, exhausted, hollow and full at once. Uhuru Peak lay only 700 meters away. But up here, 700 meters is an eternity.

We rose, moved, breathed, counted. Then—Uhuru Peak. The Roof of Africa. 5,895 meters.

9 September 2025, 9:35 AM.

We hugged, cried, raised the Indian flag, and took the photos that would never quite capture what our hearts knew. Glaciers glittered like cut glass. The horizon curved, the earth itself a quiet secret.

Summit night broke me. Then it remade me. Strength, I learned, is patience in motion. Courage is trust—one step, one breath, one hand on a cold rock.

Descent — Uhuru Peak → Mweka Gate (via Mweka Camp)

Downward is quicker, harsher—knees bark, toes complain, concentration wavers. By Mweka

Camp, we looked back at the peak—a long, impossible line traced by our small, determined steps. We really walked all that way.

Nights on Kilimanjaro: Every night had its own weather of the soul. Some were too windy to sleep; some were too cold to think. But step outside the tent and the sky opened, heavy with stars—the Milky Way spread like a silver river. One night, the heavens staged a gift: a lunar eclipse bathing the moon in deep red. At altitude, under thin air and thick awe, it felt like standing inside a story older than language.

Life on the Mountain: No showers. No fresh clothes. No mirrors. The climb edits life to essentials—warmth, breath, water, food, friendship. Vanity dissolves. What remains is elemental: Move. Support. Endure. Laugh when you can. Hydrate always. Whenever doubt pricked, a friend’s voice answered. Whenever legs trembled, a hand steadied. We celebrated small victories—a good appetite, a clear morning, a steady pulse at 4,600 meters. The mountain tested our bodies, but friendship carried our hearts.

The Unsung Heroes — “Kili Fighters”

Our African guides and porters—the true custodians of Kilimanjaro—were tireless and tender. They hauled water and tents in thin air, cooked hot meals in freezing winds, checked our oxygen and heart rates, urged us to drink more, to walk slower, to trust the process. They sang us forward with the mountain’s anthem: “Jambo! Jambo bwana...” Sometimes you climb on your legs. Sometimes you climb on someone else’s faith in you.

What the Mountain Gave Back

Back home, people asked, “Was it hard?” Yes—honestly, yes. “Would you do it again?” Without hesitation.

But here’s the truest thing I know now:

You think you go to climb a mountain. Really, you go to meet yourself at the edge—and you come back a little taller.

Final Word: The Lesson of “Pole Pole”

Kilimanjaro does not reward bravado. Its rewards consistency. The summit is not a place you conquer—it is a place that lets you arrive if you move with patience, humility, and care for each other.

Pole pole is how you climb.

Pole pole is how you change.

Pole pole is how you become the person who can stand on the Roof of Africa—and carry that quiet strength back down into everyday life.



Divya O
Z.O., Bengaluru

Quality Time for Children

Family is the first school of a child, and parents are the initial teachers. In recent decades, however, the structure of families has changed significantly due to social, economic, and professional demands. One of the most visible changes is the increasing number of working parents. While this shift has brought financial security, independence, and progress, it has also raised an important concern: are working parents able to give sufficient quality time to their children? In today's fast-paced and competitive world, where success is often measured by material achievement, the emotional and moral development of children requires conscious effort and attention.

Dr. A. P. J. Abdul Kalam rightly observed, "Children are the most valuable asset of our nation." This statement reminds us that children are not merely dependents within a household but the foundation of a nation's future. Therefore, nurturing them with care, values, and meaningful parental involvement is not optional—it is essential.

Children seek emotional security more than material comforts. They want to feel heard, understood, and valued. Simple activities such as sharing meals, discussing school experiences, reading together, or having conversations before bedtime create strong emotional bonds. These moments help children develop confidence, trust, and a sense of belonging.

Rise of Working Parents: A Modern Reality

The increase in working parents is largely driven by necessity rather than choice. Rising costs of education, healthcare, housing, and daily living make dual incomes essential for many families. In addition, increased access to education and employment opportunities has empowered women to pursue careers, promoting gender equality and financial independence.

Pandit Jawaharlal Nehru emphasized the importance of nurturing young minds when he said, "The children of today will make the India of tomorrow."

This belief highlights that the future of the nation depends on how well today's children are guided and supported, irrespective of changing family structures.

However, professional life often brings long working hours, commuting stress, deadlines, and performance pressure. As a result, parents may unintentionally prioritize work over family, leaving children emotionally unattended despite fulfilling their material needs.

Impact of Limited Quality Time on Children

Children are highly sensitive to their environment, especially during their formative years. When parents are frequently unavailable—physically or emotionally—it can affect children in several ways.

Emotionally, children may develop feelings of insecurity, loneliness, or

low self-esteem. Without regular reassurance and emotional support, they may struggle to express their feelings or seek help. Behaviorally, lack of attention can result in aggression, withdrawal, disobedience, or excessive dependence on gadgets and peers.

Academically, parental involvement plays a vital role in motivation and discipline. Children perform better when parents show interest in their studies, ask questions, and appreciate effort rather than only results. Moral and social development is also shaped by parental presence. Values such as honesty, empathy, respect, and responsibility are first learned at home.

Positive Influence of Working Parents

Despite these challenges, working parents can positively shape their children's lives when balance is maintained. Financial stability allows parents to provide better education, healthcare, and exposure. Children also learn valuable life skills by observing their parents' dedication, discipline, and perseverance.

Working parents act as role models by demonstrating responsibility, time management, and commitment. Children raised in such environments often develop independence, adaptability, and problem-solving skills. Moreover, families where both parents work promote equality and shared responsibilities, helping children grow with progressive values.



Quality Over Quantity: The Core Principle

The greatest challenge faced by working parents is not the lack of time, but the effective use of available time. Quality time can compensate for limited quantity when parents are emotionally present and attentive.

Engaging in play with children encourages creativity, emotional expression, and strengthens the parent-child relationship. Asking open-ended questions allows children to speak freely, boosting confidence, communication skills, and emotional intelligence. Doing household chores together teaches responsibility, teamwork, and essential life skills.

Setting aside tech-free time—without mobile phones or gadgets—ensures undivided attention and deeper emotional connection. Practising daily affirmations and offering words of encouragement help children develop self-belief, optimism, and emotional strength. Creative activities such as drawing, music, storytelling, or crafting allow children to express their feelings in healthy ways. Most importantly, one-on-one time makes children feel valued, secure, and understood.

Responsibility Across Generations

While parents expect their children to study hard and achieve prestigious positions, an important truth must be acknowledged:

We must remember that we are also children of our own parents, and it is our lifelong moral responsibility to live in a manner that makes them feel proud.

Parents dedicate their lives to

nurturing their children, often sacrificing comfort, health, and personal ambitions. Therefore, success cannot be measured only by professional achievements. True success lies in character, gratitude, respect, and responsibility toward parents. When adults care for and honor their parents, they set a powerful example for the next generation.

Role of Prayer and Reflection in Daily Life

In addition to spending quality time, parents play a crucial role in shaping a child's inner world by encouraging positive daily habits. Prayer should be an integral part of a child's daily routine, as it brings calmness, self-discipline, and emotional balance. Regular prayer helps children develop inner strength, patience, and humility. It allows them to pause, reflect, and connect with positive thoughts, which is especially important in a stressful and competitive environment.



Along with prayer, children can be encouraged to practice gratitude each day. This simple habit trains the mind

to focus on positivity rather than problems. It builds gratitude, enhances emotional intelligence, and helps children appreciate small joys in life. Over time, this practice nurtures optimism, resilience, and emotional maturity.

When parents show interest in these reflections—by listening or discussing them—children feel valued and supported. Such habits strengthen the parent-child bond and contribute to mental well-being.

Parents as Value Educators

Children learn more from observation than instruction. Parents who balance work, family, and ethics become powerful role models. Honesty, patience, empathy, and discipline are absorbed naturally through daily interactions.

Quality time provides the space where values are silently but effectively transmitted. Conversations, shared responsibilities, and emotional support help shape a child's moral compass.

From Family to Society: Sustaining Values Across Generation

Parenting is not an isolated responsibility carried only by families; society and employers also play a significant role in supporting parents. In the modern world, where both parents often work, flexible working hours, work-from-home options, parental leave, childcare leave, and access to quality childcare facilities help parents balance professional commitments with family responsibilities. Such supportive measures enable parents to spend meaningful time with their

children, ensuring emotional availability despite busy schedules.

A family-friendly work culture contributes directly to the emotional well-being of children and the strength of society as a whole. When institutions recognize and support the needs of families, they indirectly invest in the nation's future by nurturing emotionally secure and well-balanced citizens.

Children raised with emotional security, positive daily habits, and strong moral values grow into confident, responsible, and compassionate adults. They develop resilience, ethical judgment, and strong interpersonal relationships, which help them face life's challenges with confidence & maturity. Likewise, adults who fulfil their responsibilities

toward their parents create a continuous cycle of respect, care, and gratitude across generations. This intergenerational bond strengthens the social fabric and reinforces values that sustain families and society over time.

The challenges of modern parenting demand not only time management but also emotional wisdom. While working parents strive to secure a better future for their children, it is equally important to nurture them with love, values, prayer, and positive habits. At the same time, we must remember that responsibility flows across generations.

Just as we aspire to be proud parents of successful and value-driven children, we must also strive to be proud children of our own parents by living

lives of integrity, gratitude, and compassion. When we fulfil both roles with sincerity, we create families rooted in respect, continuity, and love — ensuring that every generation stands tall with pride, purpose, and dignity.

“Between generations lies our greatest responsibility—to honour those who raised us and to lovingly guide those who look up to us.”



Sangeeta Sinha
R.O., Mumbai (S)

मेरे जीवन सारथी

ईश्वर मेरे जीवन सारथी,
है उन्हीं का दिया हुआ यह वरदान।
है उन्हीं से सजा हुआ यह जीवन,
वही मेरी भक्ति, वही मेरा मान।

न मैं अर्जुन सा श्रेष्ठ धनुर्धारी,
न कर्ण सा दानवीर महान हूँ।
मैं तो बस उनके चरणों की धूल,
एक छोटा सा अदना इंसान हूँ।

अपनी बुद्धि का कोई मोह नहीं मुझे,
मैं तो बस उनकी दिखाई राह चलता हूँ।
न कोई शिकायत, न कोई मांग मेरी,
उनके सजाए जीवन में जीता हूँ।

विचित्र है इस जीवन का महाभारत,
यहाँ हर पग पर नए द्वंद्व का घेरा है।
पर मैं निर्भय होकर लड़ता हूँ,
क्योंकि विश्वास अटूट और गहरा है।

चाहे जीत मिले या मिले हार मुझे,
प्रभु! आपके हाथों में मेरे जीवन की डोर है।
जहाँ ले जाओगे, वहीं मेरी मंजिल,
आप ही मेरे जीवन का आदि और छोर है।



जयेश तायवाड़े
बैतुल बाज़ार शाखा
क्ष.का., नर्मदापुरम

A Moot Question

A B. Gunalan, Mgr. (Training), STC, Bangalore, Karnataka

I still remember my first experience, when I began my career as a Faculty Member at our Staff Training Centre, Bangalore. Like any other Banker, I thought with a streak of ostentatious pride, that I had had a long innings of about two decades in operations, and training is after all like the blind leading the blind, my colleagues, however, suggested that 'start from Savings Bank', which was supposed to be the easiest.

I had no choice, but to enter the class to lecture to a group of new entrants to the bank. With my experience as an after-dinner speaker in a few social clubs, I started off well. After touching upon almost every aspect of Savings Bank in a matter of fact tone, I could not help ending my lecture with a haughty, "Any Question, please? There was an absolute silence which I could even hear. As I was about to go on to the next point, a lone hand rose slowly like that of an umpire's in Cricket

Sir, I have a doubt". These few words made me sweat for the first time in

the salubrious climate of Bangalore.

"Wait, I shall repeat once again all the points. If you still have a doubt at the end, you are free to ask the question, it was more an excuse to Stall for time, trying to guess what his doubt could be, as had covered almost all facets of Savings Bank.

In one breath I had repeated all that I knew about Savings Bank and ended with a smile, assuring myself that 'there could positively be no doubt now

"Any doubt now?" I looked at him, satisfied with my performance. Pat came the reply, "Yes Sir?". It sounded more emphatic this time, I do not remember what I heard then. Was it the palpitation from my heart or the vibration of my knees which knocked at each other?

"Yes, Yes, I think I have covered all the points, but let me know your doubt?", I fumbled, groping for words. "Sir, there was a depositor at our rural branch who deposited Rs. 50,000/- in Savings Bank Account", he started narrating.

"It must be a windfall for your branch situated in such a remote corner", I commented. "The Depositor died a few months after depositing the amount", he continued. "No one is immortal, added a philosophical touch to his narration, which came naturally at that moment. Of course, still trying to gauge all the time what could possibly be his doubt?

"The legal heirs have approached the bank, having completed all formalities. We have released the amount after obtaining Indemnity, etc." He went on to give a detailed account of all the procedures followed in the case of a deceased account, verbatim.

When he at last stopped, I heaved a sign of relief and challenged him of having a doubt when you have triumphantly, "Where is the question followed every procedure expected of you?"

"Please wait Sir," he said, almost barging in. "My doubt & WHAT SHOULD WE DO IF THE DEAD MAN COMES BACK ALIVE?"

मिलिए "अंकुश" के लाल्या से

वर्ष 1988 में दीपक कीर्तने द्वारा सुहास पलशीकर का साक्षात्कार

दीपक कीर्तने: सुहास आप हैदराबाद के रहनेवाले हैं फिर बंबई आपका किस सिलसिले में आना हुआ?

सुहास पलशीकर: सन् 1975 में मैं महाराष्ट्र ड्रामा प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सर्वप्रथम बंबई आया था. जिसमें मुझे व्यक्तिगत अभिनय के लिए मेडल प्राप्त हुआ तथा हमारे नाटक को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. फिर यहां पर मैंने एक आर्टिस्ट की हैसियत से बैंक में नौकरी प्राप्त की और मेरा कैरियर शुरू हुआ.

दीपक: बंबई में आने के बाद आपको इन गतिविधियों में शामिल होने से पहले किन्हीं मुसिबतों का सामना करना पड़ा या आसानी से आपको मौका मिल गया?

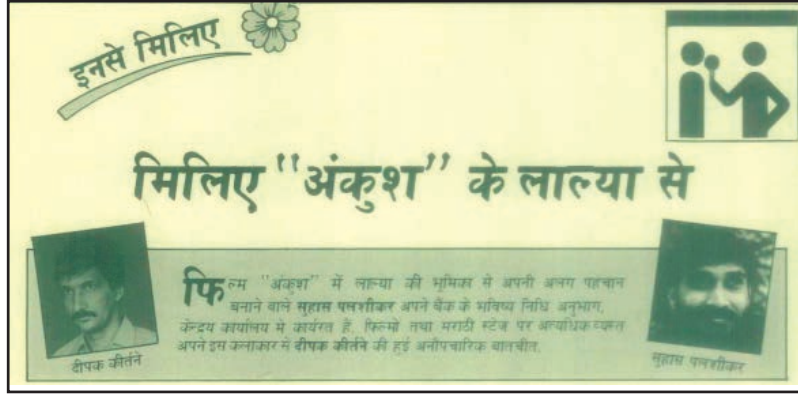
सुहास: नहीं, मुझे ज्यादा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा.

दीपक: फिल्म अंकुश में लाल्या का रोल आपको किस तरह मिला?

सुहास: अंकुश के रोल के बारे में श्री नाना पाटेकर की पत्नी जो कि हमारे साथ बैंक में कार्य कर रही थीं, उन्होंने सिफरिश की तथा मेरा अभिनय देखने के बाद मुझे चुन लिया गया. इस तरह से मैंने फिल्मों में प्रवेश पाया.

दीपक: आज मराठी रंगमंच तथा हिन्दी रंगमंच के बहुत से अच्छे कलाकार हैं जिन्हें रंगमंच पर अच्छा नाम मिला है वे सफल हैं मगर उन्हें हिन्दी फिल्मों में आने का मौका नहीं मिला इसके बारे में आपका क्या कहना है?

सुहास: जहां तक रंगमंच के अच्छे कलाकारों तथा सफलता की बात है, मैं समझता हूँ कि Talent is the key but one should know



how to operate it. महज अपने आप में एक अच्छा कलाकार होना ही पर्याप्त नहीं है, साथ ही थोड़ा सा तकदीर का भी साथ होना बहुत आवश्यक है. यदि अंकुश में मेरा अभिनय ठीक न होता या सराहा न जाता तो शायद मुझे भी इतनी सफलता न मिलती.

दीपक: मराठी नाटकों तथा हिन्दी फिल्मों में आपको अपने से बड़े कलाकारों के साथ काम करते समय कोई परेशानी महसूस हुई?

सुहास: अपने से बड़े कलाकारों के साथ काम करते हुए शुरू में मुझे थोड़ी सी झिझक ज़रूर हुई थी, मगर उनके सहयोग से मैं अपने रोल को आसानी से निभा गया, मुझे विशेष दिक्कत नहीं हुई.

दीपक: पहली ही फिल्म में आपकी भूमिका इतनी रही लोगों ने सराहा भी इसके बावजूद प्रतिघात जैसे फिल्म में आपको छोटी सी भूमिका क्यों दी गई ? क्या इसके पीछे कोई खास वजह थी?

सुहास: नहीं कोई खास वजह तो नहीं थी.

दीपक: आपके हिन्दी फिल्मों और मराठी नाटकों के आदर्श कलाकार तथा निर्देशक कौन हैं?

सुहास: वैसे तो सभी छोटे-बड़े कलाकारों से हम कुछ न कुछ सीखते ही है, मगर शुरू से

नसीरुद्दीन शाह, नीलू फुले तथा विजया मेहता के अभिनय को पसंद करता हूँ.

दीपक: भविष्य के बारे में आपकी क्या योजनाएं हैं? उस पर आप अपनी तरफ से किस तरह प्रयास कर करें हैं?

सुहास: फिलहाल तो स्थापित होने की तरफ मेरी भागदौड़ चल रही है अतः भविष्य के बारे में कोई योजनाबद्ध कार्यक्रम नहीं है.

कार्यक्रम नहीं है.

दीपक: क्या आप हिन्दी टी.वी. सीरियलों में काम करना पसंद करेंगे?

सुहास: जहां तक मैं समझता हूँ एक आर्टिस्ट के लिए टी.वी.या फिल्म में अभिनय की दृष्टि से कोई विशेष परिवर्तन नहीं पड़ता. अगर मुझे ऑफर मिले तो मैं टी.वी. सीरियलों में भी अवश्य काम करूँगा.

दीपक: आपकी आने वाली फिल्में कौन सी हैं? सुहास : "गुरु दक्षिणा", "बेगुनाह", "काफिर" आदि मेरी आनेवाली कुछ फिल्में हैं.

दीपक: नौकरी के साथ नाटकों में काम कर सकने में आपके बैंक का मैनेजमेंट आपको किसी तरह का सहयोग प्रदान करता है या आपको स्वयं सारा काम संभालना पड़ता है ?

सुहास: वैसे मैंने बैंक एक कलाकार की हैसियत से ही ज्वाइन किया था अतः कुछ सुविधाएं हमें पहले से ही प्राप्त थीं. इसके अलावा यह मेरी खुशनसीबी है कि कुछ वरिष्ठ व्यक्तियों जैसे श्री अरुण धराधर, श्री आर. आर. कोठारे, श्री एस.ए. पराडकर, श्री एम.आर. विचारे, श्री कीर्तिकर आदि के प्रोत्साहन तथा सराहना एवं अन्य सभी सहकर्मियों की शुभकामनाओं तथा स्नेह के कारण मुझे ज्यादा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा.

Humanise and Flourish A Quality Circle Approach

M. Ch. Rangachary, Faculty Member Staff College Bannerghatta Bangalore Karnataka

Quality Circle is an invigorating, fascinating concept that is fast catching up with the Indian Banking Industry Banks often ask, what is Quality Circle? Why try to fix it in Banks? Of what avail is it for a service industry like Banks? Is it one more tool to improve productivity? To the uninitiated comes a host of doubts.

Banking is basically an industry of the people, by the people and for the people with the explosive expansion and adoption of new social philosophy, this industry has taken gigantic shape and huge proportions. New circumstances persistently demand new adjustments in system, procedure, technology and attitude, more so in the organizational culture. Of late bank branches feel they are fragmented and each department further sub-divided. The employee finds it difficult to see the problems in relation to the rest of the bank. This delinking process erodes enthusiasm and frustrates him over a period. In response to this situation, banks are on a constant search for ways to mode or are eager to get the total man and draw out the extraordinary qualities from him.

This great need to understand, evaluate and harness the human resource drives the management to lock towards Quality Circles

WHAT IS QUALITY CIRCLE?

Quality Circle is not a techniques philosophy and movement.

Quality Circle consists of a group of people who are doing the same or

similar work, who meet voluntarily and regularly to identify, analyse discuss and solve work mated problems. its primary objective is to improve the quality of work life and environment. It believes that the man at the field level who actually performs the job is better placed to understand work related problems and can plan strategies for better performance it is thus an aid to bring the employee closer to the management. It creates a climate where individuals can give of their best voluntarily. It also helps to create an attitudinal change to see problems from a positive angle and face them as opportunities and challenges.

THE STRUCTURE OF QUALITY CIRCLE

The Quality Circle consists of members, a leader; a facilitator; steering committee and co-ordinating committee.

MEMBERS

The salient aspect of the members of quality circle is that they are given the choice of whether or not to join it. Nobody is invited to join or asked to go is a purely voluntary affair. Member should be from the same work place or department. The number of each circle should not be normally more than to 7, to help it function more effectively.

LEADER

The group selects the leader unlike other leaders, the wader in Quality Circle does not control the circle but guides it like a captain in a football

team. He only co-ordination the leadership can be rated

FACILITATOR

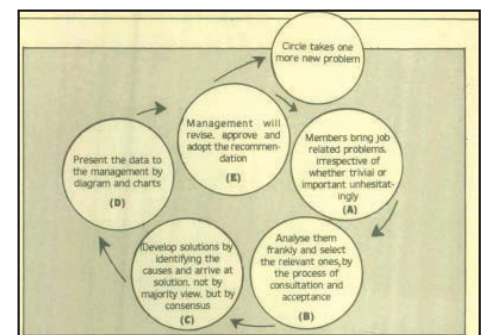
The facilitator is not chosen by members but by the management. He is responsible for the effective management of the circle. His role is very crucial to the success of the Quality Circle. He should be a senior officer like Branch Manager. or Regional Manager.

The steering and co-ordinating committees help the circles to run smoothly.

HOW QUALITY CIRCLES OPERATE?

It is a cyclical process. (like shown in the diagram)

HOW TO INDUCT QUALITY CIRCLE INTO BANKS?



Before banks go in for Quality Circle, it is highly essential that they should have deeper perspective of this concept to sprout, sustain and fructify this unusual notion.

Quality Circle is not an easy approach to be adopted in a craze or as a gimmick says Mike Robson, one of the experts on Quality Circles. It is a demonstration of group of put up or

shut up. Dick Fletcher, an approach its cardinal principle is way free flow of communication, it may not well fit in a closed autocratic system. exponent of Quality Cent the organisational culture is not compatible with this Quality Circle philosophy, it is worth waiting than adopting it in haste and making it one more productivity technique like suggestion scheme, target scheme.

customer service committee meets, etc. it should be a demonstration of inherent interest backed by deep conviction.

Quality circle aims hierarchically at the following three main possible goals:

- Staff involvements
- People participation
- Tangible benefits

While one can keep these goals before him to be aimed at, he should not disturb this hierarchy and misplace the priorities. It should always be kept in mind that the generation of tangible benefits is a by-product of Quality Circle and not its main aim. Like any other philosophy, it stresses that means are as important as ends. The short run benefits and aims should not blur the vision of the long run intangible advantages.

It calls for an extensive ground work for successful implementation.

To start with

- Everybody should be exposed to the concept and philosophy of Quality Circles Publicity on Quality Circle concept should be widespread. First of all, the idea should be strewn all over, so that it can take hoots on the fertile soils and grow in congenial climates.
- The propagation of Quality Circle should be through training of all concerned. To start with, the middle management would receive an overview of the concept with an emphasis on

their commitment to support circles, as they are the people who will bless the Quality Circles by their active involvement

- Commitment of the top management should be visible. The depth of their belief in their genuine commitment to Quality circle, unless physically exhibited, may not help to start and sustain the Quality Circles enthusiasm. Facility should be present, representing management Support regularly without interfering in the Circles activity.
- In the Circle's meetings negated as trivial even by gestures and so this develops an environment of confidence, freedom and faith.
- The circle sound not set unrealistic goals and take very difficult problems. They should take simple problems to start with. Not involving changes in the original structure set-ups, policies /norms and also problems involving heavy costs. This would help Circles in not getting discouraged initially.
- Participation is the key factor for success of Quality Circles and regular meetings are a must. Everybody should contribute ideas and no single member should dominate.
- Decisions should not be arrived at by majority, but by consensus.
- Circles should not gain an impression that 'management would hear what it wants. There should not be undue delay in the implementation, once the recommendations are accepted.
- There should not be too much or too little felicitation.

All these aspects of diligence and care in implementation helps the Circles move on healthily. They also in their turn, throw light on certain avoidable misconceptions that would possibly kill Quality Circles. One should bear

in mind that Quality Circle concept is:

- not a spring-board for employee demands and a forum for their grievances.
- not a panacea for all organizational evils.
- not problem- centered, but performance-oriented.
- not a substitute for other productivity techniques or tools.
- not meant for short run gains.

Quality Circles undoubtedly promote the development of staff in very many ways. It makes them:

- all to come together with an attitude of 'putting our own house in order'.
- talk to each other more openly about their jobs and try to understand each other better.
- become more introspective and less anxious to pass the blame on to others.
- identify ruthlessly the problem areas, causes and solutions, and allow a subtle self-examination.
- integrate into a team and appreciate alternatives.
- develop creativity and lessen dependence on others for decisions
- draw out latent talent.

It also further helps, the management to:

- Devote much time on higher level matters instead of getting bogged down with mundane problems.
- Strengthen the sinews of the organisation and equip it to make strides towards progress

No doubt it is a tight-rope walk for some time, but not a vain philosophy. Given proper momentum, Quality Circles become a movement. It builds a healthier organisation in which values, abilities at all levels are recognised. Undoubtedly, the future of the Industry lies in whether they HUMANISE AND FLOURISH DEHUMANISE AND PERISH.



Unionites as Authors

In the words of Hartley Withers, the renowned British financial journalist and prolific author - "Good Banking is produced not by good laws, but by good bankers." Unionites take pride in colleagues who have strengthened Union Bank's legacy through professional excellence and literary works, showcasing our rich cultural heritage to inspire others and foster internal pride.

The First Unionite Author: Late Mr S. N. Surkund

The earliest known published work by a Unionite is by the Late Mr S. N. Surkund, "Ad-ventures of a PR Man" published in 2001 after his retirement as AGM. The Foreword, written by the celebrated writer Mr M. V. Kamath (who also authored Union Bank's first history book, Banker's Beacon), carries the striking endorsement: "Dale Carnegie would have applauded" and it is prominently displayed on the book's cover. The book's visual appeal is enhanced by engaging cartoon illustrations that bring the stories to life.

Mr D. T. Pai – Banker, Leader, Scholar

Late Mr D. T. Pai served as Executive Director (1996-2000) of our Bank, and later as CMD of Syndicate Bank. A distinguished thought leader, he authored three academic works Overview of Banking Development 1947-2007 (2007), Overview of Financial Inclusion & Micro Credit (2010), Banking Development and Challenges (2011). His books offer a practitioner's insight into India's banking evolution after Independence. They show how policy reforms and institutional initiatives transformed the sector from within.

"A Banker's Musings: Trials and Triumphs": By this Author

During the COVID-19 pandemic, I published "A Banker's Musings: Trials and Triumphs," a compilation of real-life incidents from my 36-year banking career with stories of experience as a novice, confrontations with unions in Calcutta, the daring robbery in the North-East that claimed the life of BM

and two armed policemen, a sudden windfall of business, the loss of jewellery from the locker, and experiences involving the pride of the Tricolour, Morning Prayer "इतनी शक्ति हमें देना दाता" etc. In 2024, I released a more voluminous Hindi version, 'एक सफ़र यूनियन बैंक के साथ', featuring 10 additional stories. Both books are self-published. The Hindi edition includes two personal childhood incidents and a recounting of my family's harrowing ordeal: being stranded at Charles de Gaulle Airport in Paris without money, a ticket, or a visa.

Mr S. Raman – A Bestseller with a Remarkable Journey

"From a Car Shed to the Corner Room & Beyond" by Mr S. Raman, Executive Director of Union Bank (2008-10), had been a significant bestseller on Amazon. The book inspires, as its title suggests. It contrasts his rise to CMD of Canara Bank, where his father had worked as a stenographer. Stories of his early life are inspiring. His frank expression makes the book very readable. His chapter on "The Twin Tsunamis" is compelling, leaving many readers teary-eyed. The book features twin Forewords by Dr D. Subbarao (Ex-Governor, RBI) and Mr Deepak Parekh (of HDFC). Mr N. R. Narayana Murthy, founder of INFOSYS, called it 'An inspiring life story, rivetingly told.'

"Banking Beyond Borders" by Mr M. V. Tanksale

A versatile leader who served at Union Bank, PNB (ED), and Central Bank of India (CMD), Mr M. V. Tanksale authored the insightful book "Banking Beyond Borders." This book feels like a guidebook to excel in banking. It draws on personal experience to give actionable advice for professional excellence. The book is published in three languages, Hindi, Marathi and English. The Foreword in the book is written by Mr V. Leeladhar, Ex-CMD, Union Bank of India, who also held the coveted posting as Dy. Governor, Reserve Bank of India.

Knowledge - Building Works by Senior Executives:

Retired AGMs Mr S. K. Bhatia and Mr Sunil Girotra have authored three valuable books Indian Banking Ecosystem, Basics of Insolvency & Bankruptcy Law of India, Internal Promotion in Banks. Likewise, Mr Rakesh Khare, Ex-AGM, has contributed to career development literature through his widely used guide "Bank Promotion - A Handbook on Banking Awareness." Mr K. K. Khanna, a retired AGM publishes an annual compendium of data on all banks operating in India. He has released the eighth edition earlier this year called "Statistical Data on Key Parameters of Banks"

Ms Pratima Kumari - Courage, Creativity, and Commitment

Ms Pratima Kumari, a serving officer and poetess, continues to write while battling cancer. Her resilience inspires the entire Union Bank family. Her published works include अस्तित्व की पहचान, कैसर – काश से आस का सफ़र, डिजिटल बैंकिंग @ डिजिटल इंडिया. अस्तित्व की पहचान is a collection of poetry penned by the poetess before she was struck by the maladies of cancer. Her book, कैसर – काश से आस का सफ़र, is a chronicle of hope, faith, and positivity in life's gravest challenges. Her book on digital banking explains the digital transformation after demonetization and its effect on the bank-customer relationship. It is a solid resource for understanding the basics of digital banking and its future in India.

Conclusion

The literary achievements of Unionites - past and present - demonstrate the intellectual depth, dedication, and spirit that define Union Bank of India. By becoming authors, they expand our legacy and enrich the Bank's cultural and intellectual heritage, illustrating the power of Union Bank's people.

S. Aftab

General Manager (Retd.)
Central Office, Mumbai



समाचार केंद्र से



दिनांक 11.11.2025 को श्री एम. नागराजु, सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग, श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण श्री नितेश रंजन, श्री एस. रामसुब्रमणियन, श्री संजय रुद्र तथा श्री अजय कुमार सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति में बैंक के 107वें स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बैंक के कार्यपालकगण, स्टाफ सदस्य तथा ग्राहकों ने भाग लिया।



दिनांक 26.11.2025 को संविधान दिवस के शुभ अवसर पर श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के नेतृत्व में बैंक के सभी उच्च कार्यपालकों सहित सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा संविधान के प्रस्तावना का पाठ किया गया।



दिनांक 27.10.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के नेतृत्व में कार्यपालक निदेशकों सहित बैंक के सभी अधिकारियों ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के उपलक्ष्य में सत्यनिष्ठा की शपथ ली। इस अवसर पर "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" विषय पर सतर्कता पुस्तक का विमोचन भी किया गया।



दिनांक 06.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण श्री एस.रामसुब्रमणियन, श्री अमरेश प्रसाद द्वारा 'नेक्सटीरिया' प्रीमियम मेटल क्रेडिट कार्ड का अनावरण किया गया। साथ ही श्रीमती रेणू के. नायर, महाप्रबंधक।



दिनांक 11.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा यूनियन कलेक्शन मैनेजमेंट सोल्यूशन (यूसीएमएस) का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण, विभाग प्रमुख, कार्यपालकगण और सभी क्षेत्रों के अंचल प्रमुख एवं क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे।



दिनांक 24.12.2025 को केंद्रीय कार्यालय में श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में बैंक में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेश चंद्र तेली, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं), श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं) तथा बैंक के क्रिकेट, कबड्डी एवं हॉकी खिलाड़ी, एथलीट तथा स्टाफ सदस्य उपस्थिति रहे।



दिनांक 27.10.2025 को श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक तथा श्री विजय कुमार, आई.जी.(प्रशासन), सीआरपीएफ, द्वारा श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख, दिल्ली की उपस्थिति में वेतन खाता सेवाओं की सुविधा हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। साथ हैं, श्री सुनील कुमार जदली, महाप्रबंधक तथा दोनों संस्थाओं के अन्य कार्यपालक।



दिनांक 17.10.2025 को श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक तथा श्री विवेक कुमार, महाप्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम द्वारा श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख, दिल्ली की उपस्थिति में वेतन खाता सेवाओं की सुविधा हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। साथ हैं, श्री सुनील कुमार जदली, महाप्रबंधक, श्री आशुतोष जोशी, कार्यपालक निदेशक, भारतीय खाद्य निगम तथा दोनों संस्थाओं के अन्य कार्यपालक।



दिनांक 17.10.2025 को श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक तथा श्री महेंद्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव, सीएसआईआर, द्वारा वेतन खाता सेवाओं की सुविधा हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। साथ हैं, श्री सुनील कुमार जदली, महाप्रबंधक तथा दोनों संस्थाओं के अन्य कार्यपालक।



दिनांक 14.11.2025 को श्री ए. के. विनोद, मुख्य महाप्रबंधक तथा श्री दीपेश गेहलोत, अपर आयुक्त (प्रशासन), केंद्रीय विद्यालय संगठन, द्वारा श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख, दिल्ली की उपस्थिति में वेतन खाता और वेतन पोर्टल सुविधा हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। साथ हैं, श्री सुनील कुमार जदली, महाप्रबंधक, श्री सुमित श्रीवास्तव, महाप्रबंधक तथा दोनों संस्थाओं के अन्य कार्यपालक।

समाचार (उत्तर)



दिनांक 13.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में जयपुर अंचल के स्टाफ सदस्यों हेतु 'स्पोर्ट्स मीट 2025- जयपुर अंचल' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, अंचल प्रमुख सहित उप अंचल प्रमुख एवं अंचल के समस्त क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे।



दिनांक 28.11.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर द्वारा श्रीमती अश्वमेध देवी, विधायक, समस्तीपुर, श्री रौशन कुशवाहा, जिला अधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति तथा श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में समस्तीपुर में वित्तीय क्षेत्र में अनक्लेम्ड एसेट्स के कुशल एवं त्वरित निपटान को सुगम बनाने हेतु "आपकी पूंजी, आपका अधिकार" अभियान का शुभारंभ किया गया।



दिनांक 09.12.2025 को श्री मनोज कुमार, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर के शाखा प्रमुखों हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया। साथ हैं श्री गुरदीप सिंह, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री सुदीप कुमार दास और श्री राजेन्द्र कुमार भगत, उप क्षेत्र प्रमुख।



दिनांक 24.12.2025 को श्री राजकुमार, क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली (उत्तर) की अध्यक्षता में "आपकी पूंजी, आपका अधिकार" अभियान का आयोजन किया गया। श्री रजत कुमार महरोत्रा, एसडीएम, श्री मुकेश सेठी, उप महाप्रबंधक, एसएलबीसी, श्रीमती श्रीदेवी, सहायक महाप्रबंधक, भा.रि.बैं. श्री बी. वीरभद्र राव, उप क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली तथा ग्राहकगण उपस्थित रहे।

समाचार (पश्चिम)



दिनांक 04.10.2025 को गांधीनगर में वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा ग्राहकों हेतु आयोजित जागरूकता कार्यक्रम – "आपकी पूंजी, आपका अधिकार" कार्यक्रम के दौरान यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के स्टॉल में श्रीमती निर्मला सीतारामन, केंद्रीय वित्त एवं सहकारिता मंत्री का आगमन हुआ। इस अवसर पर श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री प्रवीण शर्मा, मुख्य महाप्रबंधक, श्री अखिलेश कुमार, सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे। इस अवसर पर बैंक के ग्राहकों को अप्राप्त जमा राशि प्राप्त करने हेतु प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।





दिनांक 30.10.2025 को मुंबई में जवाहरलाल नेहरू पोर्ट अथॉरिटी (जेएनपीए) के साथ पालघर जिले के वधवन तथा आसपास के गाँवों के डाई मेकिंग क्लस्टर को वित्तीय एवं सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। इस अवसर पर श्री आर.के.बी. यादव, सलाहकार, जेएनपीए; श्री उमेश शरद वाघ, आईआरएस, अध्यक्ष, जेएनपीए; श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख, मुंबई; श्री मुकेश कुमार बब्बर, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई बोरिवली; श्री राहुल जुयाल, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई दक्षिण तथा अन्य कार्यपालक उपस्थित रहे।



दिनांक 06.12.2025 को अंचल कार्यालय, गांधीनगर द्वारा जाली भारतीय मुद्रा की पहचान और जब्ती पर एक दिवसीय स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री सुधीर कुमार, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा महत्वपूर्ण जानकारीयाँ साझा की गईं। इस अवसर पर श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख, गांधीनगर, एवं श्री दिव्येश कालरा, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।



दिनांक 10.11.2025 को श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख, गांधीनगर तथा श्री अंकुर सर्राफ, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा के अंतर्गत न्यू अलकापुरी शाखा के नए परिसर का उद्घाटन किया गया।



दिनांक 11.11.2025 को श्री गौरव कुमार, क्षेत्र प्रमुख, नागपुर द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर की बेसा चौक शाखा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री सौरभ चाफेकर उप क्षेत्र प्रमुख, अन्य स्टाफ तथा ग्राहक उपस्थित रहे।



दिनांक 06.12.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, ग्रेटर पुणे द्वारा श्री उपेंद्र कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) हेतु बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन करने वाले बीसी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री पार्थ सारथी दास, उप अंचल प्रमुख, श्री अभिषेक कुमार, श्रीमती लक्ष्मी रूपा अदंकि, उप क्षेत्र प्रमुख, ग्रेटर पुणे तथा क्षेत्र के अन्य बीसी उपस्थित रहे।



दिनांक 10.12.2025 को श्री विपिन शुक्ला, अंचल प्रमुख, पुणे की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, ग्रेटर पुणे की शहरी शाखाओं की कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री उपेंद्र कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख, श्री पार्थ सारथी दास, उप अंचल प्रमुख, श्री अभिषेक कुमार तथा श्रीमती लक्ष्मी रूपा अदंकि, उप क्षेत्र प्रमुख, ग्रेटर पुणे उपस्थित रहे।

समाचार (दक्षिण)



दिनांक 28.12.2025 को श्रीमती निर्मला सीतारामन, केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री द्वारा श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा श्रीमती सी. नागरानी, जिला कलेक्टर, पश्चिम गोदावरी जिला की गरिमामयी उपस्थिति में क्षेत्रीय कार्यालय, भीमावरम की सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत पेदामैनावानि लंका के जिला परिषद हाई स्कूल में ₹18 लाख की लागत से विद्यालय के नए परिसर एवं अत्याधुनिक डिजिटल लैब, विज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख, विजयवाडा, श्री मण्यम यू. एलवीवीआरकेएमएस, क्षेत्र प्रमुख, भीमावरम सहित अन्य कार्यपालकगण तथा स्टाफ उपस्थित रहे।



दिनांक 28.11.2025 को श्रीमती निर्मला सीतारामन, केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री, द्वारा श्री नारा चन्द्रबाबु नायडु, मुख्य मंत्री, आंध्रप्रदेश तथा श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की गरिमामय उपस्थिति में अमरावती में अंचल कार्यालय, विजयवाडा का उद्घाटन किया गया।

दिनांक 11.10.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा, यू.एल.ए. एवं जेड.एल.सी., हैदराबाद परिसर में संकाय कक्ष का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशकगण श्री एस रामसुब्रमणियन, श्री संजय रुद्र, श्री एन.एस. दीपक, केंद्र प्रभारी व यू.एल.ए. (आर & एफआई) प्रमुख, श्रीमती बी.ए.एल. कामेश्वरी, यू.एल.ए. (परिचालन उत्कृष्टता) प्रमुख एवं केंद्र के अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।



दिनांक 04.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में टाउन हाल बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एस सक्थिवेल, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम, श्री नरेश कुमार वाई, क्षेत्र प्रमुख, तिरुवनंतपुरम सहित अन्य कार्यपालक एवं शाखा प्रमुख उपस्थित रहे।

दिनांक 15.11.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम के अधीन क्षेत्रीय कार्यालयों एवं शाखाओं की कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।



दिनांक 03.12.2025 को श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम के नए परिसर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर, श्री एस. सक्थिवेल, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम सहित अन्य कार्यपालकगण तथा स्टाफ उपस्थित रहे।



दिनांक को 03.12.2025 को अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम की सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत, श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा एर्णाकुलम जनरल अस्पताल के आईसीयू में डक्टेड एयर कंडीशनिंग की स्थापना हेतु चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री एस. सक्थिवेल, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम, श्री सतीश कुमार एम, क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम, श्री बालासुब्रमण्यम, उप क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम, श्री के. मुरलीकृष्णन, शाखा प्रमुख, मरीन ड्राइव तथा श्री शाहिरशा, अधीक्षक एर्णाकुलम जनरल अस्पताल उपस्थित रहे।



दिनांक 09.10.2025 को गोवा में आयोजित "पर्पल फेस्ट 2025" में श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक का स्वागत करते हुए श्री आशीष मालवीया, क्षेत्र प्रमुख, गोवा। इस अवसर पर श्री जितेंद्र मणिराम, महाप्रबंधक भी उपस्थित रहे।



दिनांक 12.12.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम द्वारा श्री एस. सक्थिवेल, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में श्री दीप्ति आनंदन, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री सत्यनारायण रेड्डी, उप क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को पुरस्कृत किया गया।



दिनांक 03.11.2025 को "सतर्कता जागरूकता तिमाही-2025" के दौरान अंचल कार्यालय, मंगलूरु द्वारा सुश्री एम.ए. पुवम्मा, ओलंपिक खेलों में 4X400 मीटर रिले दौड़ में पदक विजेता को सम्मानित किया गया।



दिनांक 27.11.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय श्रीकाकुलम द्वारा डॉ. एच.टी. वासप्पा, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों हेतु कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को पुरस्कृत किया गया।



दिनांक 06.11.2025 को श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख, विजयवाडा की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर द्वारा कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को पुरस्कृत किया गया।



दिनांक 09.10.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण द्वारा श्री सुधीर, उप अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री एन सोनी उप क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को पुरस्कृत किया गया।



दिनांक 25.11.2025 को श्री दीप्ति आनंदन, क्षेत्र प्रमुख, कोल्लम द्वारा श्रीमती देवकी अम्मा को एमिनेंट पर्सनालिटी अवार्ड से पुरस्कृत किया गया। श्रीमती देवकी अम्मा को 5 एकड़ ज़मीन में 1500 से अधिक पेड़ लगाने के लिए 2018 में राष्ट्रपति द्वारा 'नारी शक्ति' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



दिनांक 04.11.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाडा की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत श्री एम. वी. एन. रवि शंकर, उप अंचल प्रमुख तथा श्री एम. वी. तिलक, क्षेत्र प्रमुख द्वारा सरकारी अस्पताल को चिकित्सा सामग्री प्रदान की गई।

हमें गर्व है



दिनांक 07 एवं 08 नवंबर 2025 को आयोजित 45वीं गुजरात राज्य रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप में श्री सेल्विन क्रिश्चियन, सहायक प्रबन्धक, अंचल कार्यालय गांधीनगर की सुपुत्री सुश्री मिशेल सेल्विन क्रिश्चियन ने कांस्य पदक प्राप्त किया और उनके सुपुत्र मास्टर शॉन सेल्विन क्रिश्चियन ने प्रथम एवं द्वितीय राउंड में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित हुए।



दिनांक 24.11.2025 को कुमारी खुशी गायकवाड, सुपुत्री श्रीमती सुषमा डी, ग्राहक सेवा सहयोगी, कुरुबगुंडा शाखा ने 4 मिनट, 9 सेकंड 87 मिल्लिसेकंड में आँखे बंद कर हूला लूप चलाते हुए 10 तीन अक्षर के अंग्रेज़ी शब्दों का रिवर्स स्पेलिंग बताकर रिकॉर्ड बनाने हेतु लिमका बुक ऑफ रिकार्ड्स तथा कर्नाटक अचीवर्स बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज किया।

आपकी पाती

बैंक ऑफ बड़ौदा की ओर से आपको सादर नमस्कार। हमें आपकी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का अप्रैल-जून 2025 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अंक विषय- वस्तु, प्रस्तुति और विचार-गहराई की दृष्टि से अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। इस अंक में 'विकसित भारत' विषय पर केंद्रित लेख अत्यंत प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक तथा दूरदर्शी हैं। वित्तीय समावेशन, डिजिटल परिवर्तन, सतत विकास, अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक समानता जैसे विषयों पर प्रस्तुत आलेख राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं और बैंकिंग क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करते हैं। पत्रिका में नीतिगत विचारों, बैंकिंग सुधारों, कर्मचारियों की उपलब्धियों, रचनात्मक लेखन तथा मानवीय संवेदनाओं से जुड़े विषयों का संतुलित समावेश किया गया है। शीर्ष प्रबंधन के संदेश दिशा और दृष्टि प्रदान करते हैं पत्रिका का द्विभाषी स्वरूप इसकी व्यापक पहुँच और समावेशिता को और सुदृढ़ करता है। 'यूनियन धारा' न केवल सूचना प्रदान करने वाली पत्रिका है, बल्कि यह कर्मचारियों को प्रेरित करने, संगठनात्मक संस्कृति को सुदृढ़ करने तथा राष्ट्र निर्माण के प्रति साझा दायित्व की भावना को भी प्रोत्साहित करती है। इस उत्कृष्ट अंक के प्रकाशन हेतु हम 'यूनियन धारा' की संपादकीय टीम एवं सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देते हैं तथा आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह पत्रिका इसी प्रकार सार्थक और प्रेरणादायक सामग्री प्रस्तुत करती रहेगी।

सुहासा

उप क्षेत्र प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बेंगलूरु

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया की गृह पत्रिका "यूनियन धारा" का जून 2025 "विकसित भारत" अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह पत्रिका न केवल बैंक की नीतियों, उपलब्धियों एवं नवाचारों की सशक्त अभिव्यक्ति है, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मकता, अनुभवों और विचारों को साझा करने का एक सशक्त मंच भी प्रदान करती है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ, प्रेरक प्रसंग एवं विकसित भारत को प्रोत्साहित करने वाले विषय अत्यंत सराहनीय हैं। विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, स्किल इंडिया मिशन तथा सामाजिक दायित्व से जुड़े लेख ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक लगे। इन लेखों से कर्मचारियों में कार्य के प्रति नई ऊर्जा और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। "यूनियन धारा" निस्संदेह बैंक के कर्मचारियों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य कर रही है तथा संगठनात्मक संस्कृति को सुदृढ़ बना रही है। इसके माध्यम से बैंक के दूर-दराज क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारी भी एक- दूसरे से जुड़ाव महसूस करते हैं, जो प्रशंसनीय है। आशा है कि भविष्य में भी यह पत्रिका इसी प्रकार गुणवत्ता, नवीनता और रचनात्मकता के साथ प्रकाशित होती रहेगी तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के और अधिक अवसर प्रदान करेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आशीष सुवालका

क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा



यूनियन धारा पत्रिका के सितंबर, 2025 'ईज़' विशेषांक की प्राप्ति हुई। पत्रिका के सफलतापूर्ण सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को विशेष शुभकामनाएँ। पत्रिका का यह अंक गर्व और प्रेरणा दोनों की अनुभूति देता है। कवर पेज से ही शुरुआत करें तो यूनियन धारा के 50 वर्ष पूर्ण होने का गौरव तथा ईज़ 8.0 के तहत बैंक को प्राप्त उपलब्धियों के चित्र प्रेरणा का संचार करते हैं। इस तथ्य से सभी यूनियनाइट्स सहमत होंगे। पत्रिका के माध्यम से माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय तथा कार्यपालक निदेशकगणों के संदेश प्रेरणास्पद हैं। बैंक के स्टाफ सदस्यों की लेखन क्षमता और विषयों पर पकड़ वाकई में सराहनीय है। इस अंक के प्रत्येक आलेख व रचनाएँ अपने-आप में काफी रोचक, तथ्यों से परिपूर्ण और ज्ञानवर्धक हैं। अविनाश प्रभु जी की 'The Road Ahead' अजय बंसल जी की 'Digital CASA Onboarding' पुनीत कुमार जी की 'निवल शून्य अवधारणा' तथा राकेश कोंडिल्य जी की 'Pillars of EASE' आदि आलेख विशेष रूप से प्रभावशाली और तथ्यपरक हैं। नीलोफर नाज़ जी की 'ध्यान दिवस - सकारात्मकता की एक नई लहर' की प्रस्तुति अत्यंत रुचिकर है। यूनियन धारा' के अतीत के पत्रों से (वर्ष 1984-1987 के) आलेखों को भी इस अंक में शामिल किया गया है जो कि बीते वक्त की सैर कराता है। कुल मिलाकर यह पत्रिका हर तिमाही की तरह उत्कृष्ट, सुरुचिकर और ज्ञानपूर्ण होने की अपनी कसौटी पर पूर्ण रूप से खरा उतरती है। भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करना बैंक तथा हम सभी यूनियनाइट्स के लिए हर्ष का विषय है। इसके लिए उच्च प्रबंधन एवं राजभाषा टीम को हार्दिक बधाइयाँ। शुभकामनाओं सहित

मुकेश कुमार बब्बर

क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-बोरीवली

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल-सेंट्रल का निरीक्षण दि. 17.11.2025



संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के सदस्य श्री ईरण कड़ाड़ी के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री प्रांजल वाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, भोपाल-सेंट्रल। साथ है श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मां.स. एवं रा.भा.), श्री राजीव झा, अंचल प्रमुख, भोपाल, श्री अजीत कुमार लालवानी, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर तथा श्री अर्पित जैन, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.)।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर का निरीक्षण दि. 17.11.2025



संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री शंकर लालवानी, सांसद के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री अजीत कुमार लालवानी, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर।

